गांधी जी का जन्तर

तुम्हें एक जन्तर देता हूं। जब भी तुम्हें सन्देह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आजमाओ

जो सबसे गरीब और कमजोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शकल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा। क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुंचेगा? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा? यानि क्या उससे उन करोडो लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है?

तब तुम देखोगे कि तुम्हारा सन्देह मिट रहा है और अहम् समाप्त होता जा रहा है।

मो० क० गांधी

नेहरू के अमर विचार

सम्पादक

मुल्कराज आनन्द

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

नवम्बर 1988

कार्तिक 1910

P.D. 18T—PD

प्रकाशन सहयोग

सी०एन०राव, अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग

प्रभाकर द्विवेदी, मुख्य सम्पादक — यू. प्रभाकर राव, मुख्य उत्पादन अधिकारी

दिनेश सक्सेना, सम्पादक — डी. साईं प्रसाद, उत्पादन अधिकारी

नरेश यादव, सम्पादन सहायक — प्रमोद रावत, उत्पादन सहायक

मूल्य

1.00 रुपया

प्रकाशन विभाग में, सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा एन.के. एन्टरप्राइजेज़, 4782/2-23, दरियागंज, नई दिल्ली 110002 में मुद्रित।

प्राक्कथन

प्रस्तुत पुस्तक द्वारा हम राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की एक नई पुस्तक-माला का शुभारम्भ कर रहे हैं। इसका नाम है 'कमल पुस्तक-माला'। इसके अंतर्गत इतिहास, विज्ञान, कला, संस्कृति, भारत और विश्व की सम सामयिक समस्याओं एवं महान पुरुषों तथा स्त्रियों के जीवन चरित्रों पर कम कीमत वाली पुस्तकें उपलब्ध करा कर हम किशोरों एवं युवाओं को ज्ञान-सरोवर के दर्शन कराएँगे। इस पुस्तक-माला के प्रेरक डाक्टर मुल्कराज आनन्द हैं जिन्होंने इस पुस्तक को तैयार किया है एवं और भी पुस्तकें निर्माणाधीन हैं। इस पुस्तक-माला की रचना में हमें प्रोफेसर दौलतसिंह कोठारी जैसे अनेक विख्यात विद्वानों एवं शिक्षाविदों की सहायता मिली है।

'जवाहरलाल नेहरू के अमर विचार' द्वारा पंडित नेहरू के व्यक्तित्व और विचारों की एक झलक उन्हीं के शब्दों में हम युवा पाठकों को दे रहे हैं। भारतीय जनता की कई पीढ़ियों की चेतना को ढालने में महात्मा गांधी के बाद जवाहरलाल नेहरू का ही योगदान रहा है। शोषण से मुक्त एक नए भारत के निर्माण के लिए और साम्राज्यवाद के उत्पीड़न से मुक्त एक नए विश्व के सृजन के लिए उन्होंने भारत के लोगों की आकांक्षाओं को वाणी दी। स्वाधीन भारत के प्रथम प्रधानमंत्री के रूप में, आधुनिक भारत के स्वतंत्र विकास की दिशा भी उन्होंने ही निर्धारित की।

लगभग चार दशकों की अवधि में फैले जवाहरलाल नेहरू के विशाल वाङ्मय में से एक प्रेरक चयनिका डाक्टर मुल्कराज आनन्द ने तैयार की है। इसके लिए परिषद् उनकी आभारी है। इस पुस्तक-माला की समानांतर अंग्रेज़ी की 'लोटस सीरीज़' की पुस्तकों का अपार स्वागत हुआ है। आशा है प्रस्तुत पुस्तक भी लोगों को पसंद आएगी।

पी.एल. मल्होत्रा
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

नई दिल्ली
नवम्बर 1988

आमुख

स्वाधीन भारत के प्रथम प्रधानमंत्री और महान स्वतंत्रता सेनानी की रचनाओं के बड़े-बड़े ग्रंथ पुस्तकालयों में मिलते हैं। इन पुस्तकालयों तक सभी लोगों की पहुँच नहीं है। ऐसे ही लोगों के लिए यह छोटी सी पुस्तक प्रकाशित की जा रही है जिसमें जवाहरलाल नेहरू के अमर विचारों को संकलित किया गया है।

यह चयनिका कुछ अज्ञात संकलनों और सम्पादक की अपनी पढ़ाई से तैयार की गई है। मुख्य रूप से यह किशोर और युवा पाठकों के लिए है। जवाहरलाल नेहरू के बुनियादी विचारों से यह उन्हें परिचित कराएगी। इसे पढ़ कर पाठक बड़े संकलनों को पढ़ने के लिए प्रेरित होंगे।

जवाहरलाल नेहरू के वाङ्मय की महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि उसमें एक क्रियाशील व्यक्ति के विचार हैं। उन्होंने यह बात महात्मा गांधी से सीखी थी कि 'विचार' और 'क्रिया' को कैसे जोड़ा जाए कि कथनी और करनी का एकीकृत दृष्टांत लोगों को मिल जाए।

हमारा देश अभी भी संस्थापक नेताओं की परम्परा में काम कर रहा है। अतएव राजनीतिक आज़ादी में सन्निहित अनेक आज़ादियों को हासिल करने के लिए, जो हम अभी तक नहीं पा सके हैं, नवजवानों को इन विचारों और पूर्वजों के विचारों को कार्य रूप में परिणत करना होगा। ऐसा करने पर ही पंडित नेहरू के विचार नई पीढ़ियों के लिए प्रासंगिक बन सकेंगे।

और आज तो उन्हें पढ़ना और भी ज़रूरी हो गया है क्योंकि उनके अनेक विचार एवं उनके प्रभाव उत्तराधिकारियों द्वारा भुला दिए जा रहे हैं।

कमल पुस्तक-माला इन विचारों को नई पीढ़ी को समर्पित कर रही है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के प्रति सम्पादक आभारी है।

मुल्कराज आनन्द

लोकायत
हौज़ खास गाँव
नई दिल्ली

भारतीय युवाओं से

पीठ सीधी, नज़र आसमान की ओर उठी हुई, कदम दृढ़ता के साथ ज़मीन पर गड़े हुए। सीना तानकर खड़े रहो और भारतीय जनता का एकीकरण तथा संगठन करो।

विचार

विचारों में योद्धाओं से भी अधिक शक्ति होती है। विचार सशस्त्र सेना से भी महान् हैं। हो सकता है, विचारों का आरंभ कमज़ोर, दुर्बल तथा प्रभावहीन हो किन्तु उनका परिणाम निश्चय शक्तिमान, प्रभावशाली तथा सुदृढ़ होता है।

मेरा बचपन

हमारे पिता साक्षात् क्रोध की मूर्ति थे। किन्तु सौभाग्यवश अपनी तीव्र विनोद बुद्धि तथा फ़ौलाद जैसी दृढ़ इच्छा-शक्ति के कारण वे अपने आपको संयत कर सकते थे।

उनके कोप की एक पुरानी याद आज भी मेरी स्मृति में तरोताज़ा है, क्योंकि मैं स्वयं उनके क्रोध का शिकार बन गया था। मेरी आयु पाँच-छः साल की रही होगी। एक दिन मैंने उनके आफिस-टेबुल पर दो नए पेन देखे। बड़ी ललचाई नज़रों से मैं उनकी तरफ देखता रहा। मैंने अपने आपसे तर्क किया, भला पिताजी को एक साथ दो-दो पेनों की क्या आवश्यकता हो सकती है। अतः मैंने उनमें से एक पेन उड़ा लिया। बाद में मैंने देखा कि उस गुमशुदा कलम की बड़ी ज़ोर-शोर से तलाश हो रही है। मेरे तो छक्के छूट गए पर मैंने अपना गुनाह कबूल नहीं किया। पेन मिल गया और मेरा अपराध जाहिर हो गया। पिता का क्रोध सातवें

आसमान पर पहुँच गया और उन्होंने मेरी अच्छी खासी धुनाई की। पीड़ा और अपमान से मैं जैसे अंधा हो गया। लज्जित होते हुए मैं माताजी के पास भागा। बहुत दिनों तक मेरे कँपकँपाते शरीर पर तरह-तरह के मलहम लगाए जाते रहे।

लेकिन इस कड़ी सज़ा के कारण मेरे मन में अपने पिता के बारे में किसी प्रकार की दुर्भावना नहीं पैदा हुई। इस के बारे में मैंने यही सोचा कि यह एक न्यायोचित सज़ा थी। हाँ, उसमें आवश्यकता से अधिक सख्ती ज़रूर बरती गई थी। लेकिन अपने पिता के बारे में मेरे मन में पूर्ववत प्रशंसा तथा प्रेम का भाव बना रहा। हाँ, उस भाव में थोड़ा डर भी शामिल हो गया। माता जी के बारे में ऐसी कोई बात नहीं थी। उनसे मैं ज़रा भी नहीं डरा करता था क्योंकि मुझे पूरा विश्वास था कि मेरी हर ग़लती वे माफ़ करेंगी और उनके इस लाड़-प्यार के कारण मैं उन पर थोड़ा सा हावी होने की कोशिश करता रहता था।

दोहरा प्रभाव

शायद वह एक त्रिकोण था--गांधी जी, मेरे पिता और स्वयं मैं। हर कोई एक दूसरे को कुछ सीमा तक प्रभावित करने में लगा रहता था। किंतु मेरे विचार में गांधी जी एक विस्मयजनक योग्यता के अधिकारी थे, अपने दोस्ताना अंदाज़ से वे विरोधियों का सारा जोश ठंडा कर दिया करते थे। इसमें कोई आक्रामक भाव न होते हुए भी यह एक प्रभावी मार्ग था। ज़रूरी बातें मनवाने में उन्होंने कभी हार नहीं मानी। साथ ही उन्होंने किसी भी महत्वपूर्ण बात में सिद्धांतों का सौदा नहीं किया। गांधी जी की महानता को पिता जी ने स्वीकार किया। उसी से पहले हमें स्थिति का आभास हो गया। दूसरी बात यह है कि उनके निकट सान्निध्य के कारण हमें ज्ञात हो गया कि, गांधीजी न केवल एक महान् और अत्युत्तम व्यक्ति हैं, बल्कि वे अत्यंत प्रभावी भी हैं। यह बात तो ज़ाहिर हो गई थी कि उनकी कार्य-प्रणाली मूर्खतापूर्ण नहीं थी। उसके अच्छे परिणाम दुनिया के सामने आ रहे थे।

गांधी जी के प्रति आदरभाव तथा उनकी कथनी के पीछे जो सुसंगत तर्क तथा तथ्य होता था उनका सम्मिश्रण धीरे-धीरे मेरे पिता में परिवर्तन ले आया। उनके अन्तस की यह परिवर्तन प्रक्रिया प्रदीर्घ तथा पीड़ादायक थी। किन्तु जब एक बार उन्होंने ठान लिया तो उनका जीवन पूरी तरह बदल गया।

मेरे भीतर भी एक महान् परिवर्तन हो रहा था। मैं तो अल्पवयस्क था और गांधी जी मेरे ऊपर पूरी तरह से छा गए थे। मेरे विचार में उनके संबंध में मेरा तथा पिता का पहला अनुभव पंजाब में ज़ारी किए मार्शल लॉ के ज़माने का था। हम सब मिलकर काम कर रहे थे। मैं एक प्रकार से गांधी जी के सचिव की हैसियत से काम कर रहा था। परिस्थितियों को समझने की गांधी जी की क्षमता हमें बार-बार हैरान किया करती थी। समय का तकाज़ा वे भली-भाँति जानते थे कि किस समय क्या करना चाहिए। प्रारम्भ में हम लोगों में से अधिकांश उनका विरोध किया करते। हम पूछते 'इससे भला कौन सा परिणाम निकलने वाला है?' कुछ समय पश्चात् हमें पता चलता कि गांधी जी द्वारा बताई गई नीति ही सही नीति है। अतः धीरे-धीरे हम उनके निर्णय पर, और उनके सिद्धातों पर, भरोसा करने लगे।

राष्ट्रपिता

इस विद्वेषपूर्ण, आत्यंतिक हिंसा भरी तथा अणु बम जैसे विस्फोटक तथा विनाश की ओर ले जाने वाले साधनों से परिपूर्ण दुनिया में सद्भावना का यह शांतिदूत एक विरोधाभासी तथा चुनौतीपूर्ण व्यक्तित्व लेकर आया है। अपनी हवस मिटाने के लिए पागलपन की धुन पर नित्य नए-नए उपकरण तथा बिलासिता की सामग्री ढूँढ़ने वाले अत्यंत लालची समाज में वे केवल एक धोती तथा झोंपड़ी के साथ खुश रहते थे। धन, शक्ति और अधिकार लिप्सा की इनसानी दौड़ में वे अडिग रहा करते थे, फिर भी अधिकार उनकी शांत किंतु दृढ़ निगाहों में झलकता था। शक्ति उनकी अति सामान्य दुबली-पतली काया में भरी हुई थी और वहीं से अन्यत्र फैलती थी।

कहाँ से इतनी ऊर्जा, शक्ति, तथा अधिकार पाया था उन्होंने? क्या किसी गुप्त झरने से जीवनामृत पी करके उन्होंने युगयुगान्तर से भारत को शक्ति प्रदान की थी? नम्रता तथा आत्माभिमान के साथ महात्मा गांधी ने अपनी जनता में धीरे-धीरे शौर्य, धैर्य, अनुशासन, सहनशक्ति तथा किसी काम के लिए सहर्ष-आत्मयज्ञ करने की मानसशक्ति भर दी थी।

हमारे देश ने एक शक्तिमान महात्मा को जन्म दिया, जिसने न केवल भारत बल्कि संपूर्ण विश्व को एक दीपस्तंभ की तरह पथ प्रदर्शन प्रदान किया।

एक नई आवाज़

गुलामी की जंजीर की कसावट कम होने की बजाय जुल्म की मात्रा अधिकाधिक बढ़ने लगी। इन बिलों की आधारशिला थी एक कमिटी की रिपोर्ट जिसे रोलेट बिल नाम से जाना जाता था। लेकिन चंद दिनों में ही ये बिल संपूर्ण देश में 'ब्लैक बिल' नाम से कुख्यात हो गए। प्रत्येक भारतीय उनकी बुराई करने लगा। इन बिलों ने सरकार तथा पुलिस को भरपूर अधिकार दिलवाए। अब पुलिस किसी को भी बिना किसी मुकदमें के पकड़कर जेल में बंद कर सकती थी, अथवा किसी भी व्यक्ति पर गुप्त रूप में मुकदमा दायर कर सकती थी। उस ज़माने में इन बिलों का वर्णन, इन शब्दों में प्रसिद्ध था–'ना वकील ना अपील ना दलील'। इन बिलों के विरुद्ध होने वाला आक्रोश बुलन्दी पर आने ही वाला था, कि इतने में राजनीति के क्षितिज पर एक नया घटक एक छोटा सा बादल प्रकट हुआ और उसने वायुवेग से भारतीय आकाश को आच्छादित कर लिया।

इस नए अनोखे घटक का नाम था––मोहनदास करमचंद गांधी। युद्ध काल में वे दक्षिण अफ्रीका से लौटे थे और साबरमती में अपनी बस्ती में एक आश्रम में आबाद हो गए थे। उन्होंने अपने आपको राजनीति से दूर रखा था। उन्होंने युद्ध के लिए फौज़ में आदमी भरती करने में भी सरकार का हाथ बँटाया था। दक्षिण अफ्रीका में चलाए हुए अपने सत्याग्रह आंदोलन के कारण वे भारत में मशहूर हो गए थे। सन् 1917 ई० में बिहार के चंपारन जिले के यूरोपियन बगीचे वालों के पैरों तले निर्दयता के साथ कुचली जाने वाली रैयत को बचाने में उन्होंने कामयाबी हासिल की थी। उसके पश्चात् वे गुजरात में कैरा नामक गाँव के समस्त किसानों के पीछे दृढ़ चट्टान बन खड़े रहे। सन् 1919 ई० के प्रारंभ में वे सख्त बीमार पड़ गए। वे संपूर्ण रूपेण स्वस्थ हुए भी नहीं थे। इतने में देशव्यापी रोलेट बिल आंदोलन शुरू हुआ। उन्होंने भी इस सार्वजनीन आक्रोश में अपनी आवाज़ मिलाई।

लाठी चार्ज का अनुभव

......कायरता और वीरता के बीच एक पतली सी रेखा थी। मैं उनमें से कुछ भी बन सकता था। मैंने निश्चय किया ही था कि मैंने चारों ओर दृष्टि घुमाई और देखा कि एक घुड़सवार पुलिस का सिपाही अपनी नई लाठी भाँजते हुए धीमे-धीमे मेरी तरफ बढ़ रहा था। मैंने उसे इशारा किया, 'आगे बढ़ो' और अपना सिर और मुख बचाने के लिए अपना सिर परे हटाया -- यह तो एक सहज प्रयत्न था। उसने मेरी पीठ पर दो बड़े जोरदार वार किए। मैं तो हक्का-बक्का हो गया। मेरे पूरे बदन में कँपकँपी दौड़ने लगी। लेकिन विस्मय की तथा समाधान की बात यह थी कि मैंने अभी भी अपने आपको पाँव पर खड़े हुए पाया। मैं धराशायी नहीं हुआ था। इसके बाद तुरन्त पुलिस फोर्स हटाया गया और हमारे सामने का रास्ता बंद कर दिया गया। हमारे स्वयंसेवक फिर से इकट्ठे हो गए। उनमें से अनेक लोगों के बदन से खून बह रहा था, अनेक लोगों के सर फूट गए थे। पं० गोविन्द बल्लभ पंत और उनके साथी हममें शामिल हो गए। उनकी भी अच्छी खासी पिटाई हो चुकी थी। हम सब पुलिस की ओर मुखातिब होकर नीचे बैठे हुए थे। इस तरह हम घंटों बैठे रहे, अंधेरा छा गया। एक तरफ अनेक वरिष्ठ अधिकारी जमा हो गए। जैसे ही यह बात फैली, दूसरी ओर बड़ी भारी भीड़ इकट्ठा होने लगी। अंत में अधिकारियों ने हमें अपने पहले मार्ग से जाने की अनुमति दे दी और हम उस रास्ते से चले गए। जिन पुलिस वालों ने हम पर लाठी हमला करके हमारी अच्छी खासी मरम्मत की थी, वे ही घुड़सवार पुलिस वाले हमारे संरक्षक के रूप में हमारे आगे-आगे चलने लगे।

वीर नायक

वीर नायक को किसी के सामने अपना शीश झुकाने के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता। हाँ, उसके प्राण लिए जा सकते हैं। इस तरह के शूरवीर अल्पसंख्या में हो सकते हैं और उन्ही में अपने देश का संपूर्ण वातावरण बदलने की क्षमता होती है।

जेल डायरी

खटमल, मच्छर एंड कंपनी के साथ मेरा धर्मयुद्ध अखंड ज़ारी था। हमारा जेल बाहर से साफ़सुथरा नज़र आता था किंतु बंदियों को तथा उनके कपड़े, कंबल साफ़ करने का ज़रा सा भी प्रयास नहीं किया जाता था।

18 अगस्त, वीरवार 1932

ओफ ओ ! कैसा है यह जीवन ! वही कोल्हू के बैल की जिंदगी। एक दिन में दूसरे दिन से रत्तीभर भी अन्तर नहीं। कभी कभार भोजन चूक जाया करता था -- और हमारे लिए तो यह एक आम बात हो गई थी -- फिर भी यही एक उल्लेखनीय प्रसंग समझा जाता था। और ढेर सारी पुस्तकें-- जिन्दगी की तमाम उकताहट तथा नैराश्य से छुटकारा पाने के लिए भला इनके सिवा दूसरा कौन सा उपाय हो सकता था?

....आज मेरी मनोदशा अजीब सी हो गई थी-- जी चाहता था-- स्मृतियों के आँचल में लिपटा रहूँ। सुबह से इन्दु का विचार मेरे मन में प्रबल रूप में आया था, उससे मेरा मन व्याप्त था। उसके शारीरिक विकास की विभिन्न अवस्थाएँ मैंने देखी थीं, किंतु न जाने मेरा मन उसके वर्तमान किशोरी रूप से अधिक उसके नन्हीं मुन्नी गुड़िया जैसे बालिका रूप की छवि ही निहार रहा था। और उसे देखने की ललक मेरे मन में तीव्र रूप धारण करने लगी ...।

उससे मेरी अन्तिम मुलाकात दो महीने और एक सप्ताह पहले हुई थी। अब मुलाकात न होने की मुझे आदत सी हो चुकी थी। मैंने मुलाकातों की प्रतीक्षा करना ही छोड़ दिया था। जो अन्तहीन है उसकी भला कोई कैसे प्रतीक्षा कर सकता है? जिस दिन कोई मुलाक़ात होती उसी दिन से दूसरी की प्रतीक्षा शुरू हो जाती। दिन गिनना शुरू हो जाता है-- 13, 12, 11, 10, ... लेकिन अब ऐसी प्रतीक्षा नहीं है। ऐसी गिनती भी नहीं रही। अपने आपको किसी साँचे में ढालना, किसी बात का आदी बनाना कितना आसान है।

और फिर भी मन को बेचैन करने वाला एक घटक रह गया-- पन्द्रह दिन में घर से आने वाली चिट्ठी। मैं पहले से अधिक उत्सुकता के साथ उसकी प्रतीक्षा करने लगा। अब मुलाकातें बंद हो चुकी थीं। मैं दिन गिनता था, यदि निश्चित दिन में चिट्ठी नहीं आती तो मुझे चिन्ता सताने लगती। चिट्ठी बुधवार को आनी चाहिए थी। पिछली बार न बुधवार को आई न वीरवार को, कहीं कमला की

तबियत तो खराब नहीं है? अखबार की चन्द पंक्तियों से इस बात की सूचना भी मिल चुकी थी, इससे मेरा मन अधिक व्याकुल हो गया था। अन्त में शुक्रवार को चिट्ठी आई और मेरा भय सच निकला। लेकिन चिट्ठी आ जाने से अधिक कुछ कहने, करने की आवश्यकता नहीं थी और चिन्ताग्रस्त होते हुए भी मन को एक प्रकार की शांति प्राप्त हो गई।

फिर आज वीरवार है, और अभी तक कोई पत्र नहीं आया।

यदि मुलाकातों की तरह पत्रों का आना भी बिल्कुल रुक जाए तो मुझे पूरा विश्वास है कि इस बात का भी मैं आदी हो जाऊँगा। तब कोई इन्तज़ार नहीं करना होगा। यह ज़रा कठिन बात है–– शायद मैं अधिक कठोर, उग्र और चिड़चिड़ा बन जाऊँगा और तब बेचारे मेरे साथी दु:खी होएँगे।

इतिहास का सही अर्थ

क्या इतिहास का अर्थ राजाओं, महाराजाओं व सम्राटों की लम्बी नामावलि रटना है? नहीं, नहीं, मेरे विचार से किसी देश के संपूर्ण इतिहास की यह कल्पना अब मृतप्राय हो चुकी है। मैं यकीनन तो नहीं कह सकता कि सभी भारतीय विद्यालयों तथा महाविद्यालयों में इस कल्पना का अस्तित्व है या नहीं। किन्तु मैं आशा करता हूँ कि किसी भी कीमत पर यह परम्परा समाप्त होनी चाहिए क्योंकि विभिन्न राजाओं-महाराजाओं के शासन तथा युद्ध-संधि आदि बातों का पूरा लेखा-जोखा रखने से अधिक निरर्थक बात बच्चों की पढ़ाई में और कौन सी हो सकती है।

इतिहास का एक दूसरा पहलू आज अधिक सामने आता है। वह है इतिहास का सामाजिक पक्ष। सामान्य मनुष्य के दैनंदिन जीवन में सामाजिक रचना के विकास का अनुसंधान बहुत ही निकट रूप से संबंधित है। हो सकता है सैंकड़ों-हज़ारों साल पुराने किसी पारिवारिक जमा-खर्चे का ब्यौरा मिल जाए, तो उसमें ऐसी सैकड़ों-हज़ारों बातें हो सकती हैं, जो इस बात का कुछ अन्दाज दे सकती हैं कि उस प्राचीन काल में मानव जीवन किस प्रकार का था। और केवल तभी हम इतिहास के शुष्क अस्थिपंजर को जीवन, खून तथा मांस के वस्त्र पहनाकर सजा सकते हैं।

अन्त में, मेरे विचार में दुनिया में जिन समस्याओं का हमें सामना करना होता है उन सबको एक या दो वाक्यों में बताया जा सकता है। वे सभी संबंधों की समस्याएँ होती हैं। व्यक्ति का समूह से संबंध, समूहों के आपसी संबंध। तकरीबन हर राजनीतिक, सांस्कृतिक अथवा व्यक्तिगत समस्या केवल एक वाक्य में संक्षिप्त की जा सकती है। और धीरे-धीरे बदलने वाले ये संबंध समाज की संरचना को सार्थक बना देते हैं और अंत में हमारे चारों और फैले हुए राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को भी सार्थक बना देते हैं।

इतिहास की सामाजिक दृष्टि

वास्तविक इतिहास का संबंध इधर-उधर के चंद व्यक्तियों के साथ नहीं होना चाहिए। जिन लोगों के परिश्रम तथा प्रयासों के कारण राष्ट्र बनता है, जीवन की आवश्यकताओं तथा सुविधाओं की सामग्री तैयार होती है और जो हजारों प्रकार की विधियों से एक दूसरे पर क्रिया-प्रतिक्रिया करते रहते हैं ऐसे लोगों के साथ ही इतिहास का संबंध होता है। वास्तव में मनुष्य का इस प्रकार का इतिहास एक दिलचस्प, रोचक तथा आकर्षक कहानी है। वह मनुष्य के संघर्षों की कहानी है। उन संघर्षों की कहानी जो मनुष्य और प्रकृति के बीच, मनुष्य और जंगली जानवरों के बीच तथा शोषण करने वाले मनुष्यों और दबाए गए मनुष्यों के बीच युगों से होते आए हैं। यह मनुष्य के जीवन संघर्ष की कहानी है।

जैसे-जैसे आर्थिक तथा सामाजिक घटकों की मात्रा बढ़ने लगी, वैसे-वैसे जीवन अधिकाधिक जटिल बनने लगा। यातायात, व्यापार बढ़ने लगा। नजरानों का स्थान विनिमय लेने लगा। उसके पश्चात् आ गया द्रव्य यानी पैसा। उससे सभी विनिमय व्यवहारों में ज़मीन आसमान का परिवर्तन आ गया। सभी व्यवसायों में वृद्धि हो गई क्योंकि सोने तथा चांदी के सिक्कों से मूल्य चुकाने के कारण अदलबदल करने में सुविधा हो गई। इसके बाद हमेशा सिक्कों का भी प्रयोग नहीं किया गया, लोग चिन्हों का प्रयोग करने लगे। एक कागज़ के टुकड़े पर पैसे देने का लिखित रूप में वचन देना पर्याप्त समझा जाने लगा। इस तरह हुंडियों और चेकों का जन्म हुआ। इसका अर्थ यह हुआ कि एक दूसरे पर

विश्वास रखकर उधार का व्यवहार चलने लगा। यह उधार व्यवहार उद्योग, धंधों के लिए अत्यंत लाभदायक सिद्ध हो गया। जैसा कि आप जानते हैं, आजकल चेकों तथा बैंक नोटों का ही अधिक प्रयोग होता है और विवेकी लोग अपने साथ सोने चांदी की जोखिम उठाना पसन्द नहीं करते।

इस तरह हम देखते हैं कि धुँधले अतीत से निकल कर इतिहास प्रगतिशील हो गया। उत्पादन अधिकाधिक मात्रा में बढ़ने लगा। लोगों ने व्यवसाय की विभिन्न शाखाओं में विशेषता प्राप्त की, वे एक दूसरे के साथ अपने अपने उत्पादन का लेन-देन करने लगे। इस तरह व्यापार में वृद्धि होती रही। हम यह देखते हैं कि स्टीम इंजन के आगमन के बाद गत सौ सालों में यातायात के नित्य नए साधन उपलब्ध हो रहे हैं। उत्पादन-वृद्धि के साथ विश्व की सम्पत्ति भी बढ़ेगी। चलो, कम से कम कुछ लोग तो ऐशोआराम की जिन्दगी गुजारेंगे और जिसे संस्कृति कहा जाता है उसका विकास होगा।

किसी भी परिवर्तन को लोगों के मन बहुत ही धीमी गति के साथ स्वीकार करते हैं-- यही है इतिहास की एक त्रासदी।

हमारा वैदिक उत्तराधिकार

वेदों में ऋग्वेग अग्रणी है। शायद मानव जाति के पास यह पहली पुस्तक होगी। इसमें मानवी मन का पहला उद्रेक है, कविता का तेज, निसर्ग की सुंदरता का आह्लाद और रहस्यवाद है।

लेकिन स्वयं ऋग्वेद के पीछे सिंधु संस्कृति, मेसोपोटामिया की संस्कृति तथा अन्य संस्कृतियों के विकासकाल का सांस्कृतिक अस्तित्व तथा विचार है। अतः ऋग्वेद में हमारे पहले पथ प्रदर्शक, दृष्टा, पूर्वजों के प्रति जो समर्पण भाव है वह उचित ही है।

कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ टैगोर के शब्दों में ये ऋग्वेदीय मंत्र लोगों की 'अस्तित्व के प्रति, आश्चर्य और कृतज्ञता, भय, विस्मय आदि भावनाओं की संकलित प्रतिक्रिया का काव्यात्मक वसीयतनामा' है। संस्कृति के उषः काल में जीवन में सूचित होने वाले अविरत रहस्य के प्रति समाज की सरल किंतु आवेशपूर्ण प्रतिभा जागृत हो गई।

लेकिन वह चिन्तनशील प्रवृत्ति धीरे-धीरे आगे बढ़ी, अन्त में वेद ने पुकारा, "हे विश्वास, हमें श्रद्धा का दान दे दो," और आगे 'विधाता का गीत' नामक एक मंत्र में अधिक गहन प्रश्न उठाए गए हैं। मैक्स मुल्लरने इस गीत को शीर्षक दिया है–– 'अज्ञात ईश्वर के प्राते'।

1. तब वहाँ न कोई अनस्तित्व था न कोई अस्तित्व। वहाँ न कोई वातावरण था, न उसके आगे आकाश। उसे किसने आच्छादित किया और कहाँ ? किसने आश्रय दिया ? क्या वहाँ जल था ? जल राशि की अगाध गहराई थी ?
2. तब मृत्यु का अस्तित्व नहीं था, एक भी वस्तु चिरस्थायी नहीं थी, कोई चिह्न नहीं था, न दिन और रात का विभाजन। वही एक वस्तु साँस-रहित थी, स्वयं अपनी प्रकृति से साँस ले रही थी।
3. तमस था वहाँ, प्रथम सब कुछ अंधकार में विलीन था, यह सब कुछ एक अभेद्य उलझन थी। जो अस्तित्व में था वह शून्य तथा निराकार था। तपस की महान शक्ति के प्रभाव से उस आशंका का जन्म हुआ।
4. उसके पश्चात् आरंभ में इच्छा की उत्पत्ति हुई। इच्छा, चैतन्य का आद्य बीज। जिन ऋषियों ने अपने अन्तस् की विचारधारा से अनुसंधान किया, उन्होंने अनस्तित्व में अस्तित्व का संबंध ढूंढ़ लिया।
5. उनकी सीमारेखा निरर्थक रेखा से विस्तृत हो गई, क्या है उसके आगे ? क्या है उसके नीचे ? वहाँ स्रष्टा भी है, और शक्तिमान साधन भी। यहाँ उन्मूलन कृति है और वहाँ असीम् शक्ति है।
6. सत्य ही कौन जानता है और यहाँ कौन घोषित करता है ? कहाँ से इसकी उत्पत्ति हुई और कहाँ से यह सृष्टि हुई? देवताओं का सृजन तो इस विश्व की उत्पत्ति के बाद हुआ, फिर कौन जानता है कि पहले कहाँ से अस्तित्व में आया वह।
7 "वह", इस सृष्टि का आद्य जनक, इसने यह निर्माण किया या नहीं ? सर्वोच्च स्वर्ग में जिनकी आँखें इस सृष्टि का नियंत्रण करती हैं सत्य ही उसे ज्ञात है अथवा अज्ञात भी है।

महाकाव्य, इतिहास, परंपरा और पुराण

अपने बचपन की पहली स्मृतियों में, अपनी अम्मा के मुख से अथवा घर की बड़ी-बूढ़ी औरतों से सुनी हुई रामायण-महाभारत की कहानियाँ आज भी तरोताज़ा हैं। जिस तरह अमरीका या यूरोप का बच्चा परी-कथाएँ या साहस की कथाएँ सुनता है उसी तरह हम रामायण-महाभारत की कथाएँ सुना करते थे। मेरे लिए उनमें साहस और कौतूहल दोनों मौजूद थे। खुले रंगमंच पर की जाने वाली रामलीला दिखाने प्रति वर्ष मुझे ले जाया जाता था। यह रामलीला देखने के लिए तथा जुलूस में भाग लेने के लिए बड़ी भारी भीड़ एकत्र हुआ करती था। यह सब था तो बड़ा बचकाना, किन्तु इससे क्या अंतर पड़ता है क्योंकि ये कथाएँ हर किसी को याद थीं और वह एक आनंदोत्सव था।

शाश्वत अतात

अपनी आदत के अनुसार आज भी मेरी नींद तब खुल गई जब आसमान में अभी तक सितारे चमचमा रहे थे। भोर होने से बिल्कुल पहले वातावरण में जो विलक्षणता आ जाती है, उसी से कोई भी अनुमान लगा सकता है कि अब उषः काल होने ही वाला है और जैसे ही मैं पढ़ने बैठ गया, दूर से आती हुई आवाज़ें तथा प्रतिक्षण बढ़ती हुई खड़खड़ाहट से प्रातःकाल की शांति भंग हुई। मुझे याद आया कि आज संक्रान्ति का दिन है, माघ मेले का पहला बड़ा दिन। हजारों यात्री प्रातःकालीन स्नान के लिए संगम की ओर जा रहे थे। संगम एक ऐसा स्थान है जहाँ गंगा का जमुना से मिलन होता है और कहा जाता है कि लुप्त सरस्वती भी वहीं उन से मिलती है। चलते-चलते वे गा भी रहे थे और कभी-कभी नारे भी लगा रहे थे– गंगा माई की जय ! और नैनी जेल की दीवारें फांद कर उनकी आवाज़ें मेरे कानों तक आ पहुँचीं। उन आवाजों को सुनकर मैं सोचने लगा–– श्रद्धा की महिमा कितनी अगाध है। उनकी श्रद्धा ही तो उन्हें कुछ काल के लिए अपनी गरीबी तआ दुःख दर्द भुलाकर यहाँ इतनी विशाल संख्या में खींच लाई।

आज वर्षानुवर्ष से, शायद सैकड़ों, हज़ारों वर्षों से ये यात्री त्रिवेणी की ओर आते रहे हैं। मनुष्य का आना-जाना तो चलता रहेगा। राज्य व साम्राज्य कुछ काल तक शासन करते रहेंगे और फिर अतीत में खो जाएँगे किंतु प्राचीन परम्पराएं पीढ़ी दर पीढ़ी चलती रहेंगी। परम्पराओं में बड़ी अच्छाइयाँ होती हैं। लेकिन कभी-कभी वे एक भारी बोझ बनकर हमारे रास्ते में बाधा बन जाती हैं। इस अटूट श्रृंखला के बारे में सोचना बड़ी दिलचस्प बात है। यह हमें सुदूर तथा धुंधले अतीत के साथ जोड़ती है। आज से 1300 वर्ष पहले के मेले का ब्यौरा पढ़ने के लिए यह प्रेरित करती है। किन्तु इस श्रृंखला में एक दोष भी है– हमारी आगे बढ़ने की इच्छा के विरुद्ध यह श्रृंखला हमें रोके रखती है। यह बात ठीक है कि हमें अतीत की कड़ियों को भूलना नहीं चाहिए लेकिन जब कभी यह प्राचीन परम्परा हमारी प्रगति का रोड़ा बन जाये तो उसकी कैद को हमें तोड़ना ही होगा।

विविधता में एकता

मेरा ख्याल है कि हम सब के पास अपने देश की भिन्न-भिन्न तस्वीरें हैं और किन्हीं भी दो व्यक्तियों के विचारों में बिल्कुल एक जैसी समानता नहीं होगी। जब मैं भारत के बारे में सोचता हूँ तो मेरे सामने अनेक तस्वीरें उभरती हैं– छोटे-छोटे अनगिनत गाँवों से भरे हुए विस्तीर्ण मैदान, मेरे देखे हुए गाँव और शहर, बरखा रानी के जादुई स्पर्श की संजीवनी से शुष्क रूप त्यागकर चमचमाता हराभरा सौंदर्य धारण करने वाली भूमि; महानदियाँ और बहता हुआ जल; अपने चारों और सर्द मायूसी का नकाब ओढ़े खड़ा हुआ खैबर दर्रा; भारत का वह दक्षिणी किनारा; व्यक्ति और समष्टि के रूप में भारतीय जनता के विविध रूप; हिम का ताज पहने खड़ा भारत का सरताज हिमालय; वसंत ऋतु में नए-नए फूलों से ढकी कश्मीर की कोई पर्वतीय घाटी। अपनी अपनी पसन्द की तस्वीरें चुनकर हम उन्हें सजा सकते हैं। इसीलिए मैंने उष्ण कटिबंधीय देश की गर्मी की बजाय पर्वतीय भूमि की तस्वीर का चुनाव किया है। दोनों तस्वीरें सही हैं क्योंकि भारत विषुवत रेखीय उष्ण कटिबंधीय प्रदेशों से लेकर एशिया के शीतलतम प्रदेश तक अपने पाँव पसारे है।

हम सब चाहे किसी भी धर्म के अनुयायी व ों न हों, भारत की संतान हैं और समान रूप से अपने अधिकारों और सुविधाओं को भोगते हैं और कर्तव्यों का पालन करते हैं।

नियति से भेंट

काफी साल पहले नियति से हमारी भेंट हुई थी। अब वह समय आ गया है– जब हम पूर्णरूपेण तो नहीं लेकिन किसी सीमा तक वचनमुक्त हो रहे हैं। मध्यरात्रि के समय जब सारी दुनिया गहरी नींद में सोई होगी, तब हिंदुस्तान जाग उठेगा और स्वाधीन भारत का जन्म होगा । अब वह क्षण आ गया है जब हम पुरानों को त्यागकर नए कदम रख रहे हैं। एक युग का अन्त हो रहा है, काफी अर्से से अत्याचार से दबी हुई हमारे देश की आत्मा अब मुखर हुई है। इतिहास में ऐसे महत्वपूर्ण क्षण कभी कभार ही आते हैं। ऐसे उदात्त, गंभीर क्षण में यह उचित है कि हम भारत की तथा भारतीय जनता की, उससे भी अधिक विस्तृत अर्थ में मानवता की सेवा के लिए समर्पित होने की दृढ़ प्रतिज्ञा करें।

इतिहास के उषःकाल के समय भारत ने अपनी अनंत यात्रा शुरू की और कितनी ही पथविहीन सदियाँ उसके प्रयासों तथा सफलता की भव्यता और असफलता से भर गईं। चाहे सौभाग्य काल हो चाहे दुर्भाग्य काल, भारत ने न तो अपनी खोज का कार्य रोका और न ही अपने आपको शक्ति देने वाले आदर्शों को कभी भूल सका। आज हमारे दुर्भाग्य का अन्त हो गया है और भारत ने अपने आपको पुनः पा लिया है। आज हम अपनी जिस कामयाबी का उत्सव मना रहे हैं वह तो सुनहले भविष्य के द्वार तक पहुँचाने वाली एक सीढ़ी मात्र है। क्या हम इतने शूरवीर तथा चतुर हैं कि इन स्वर्णावसरों का लाभ उठा सकें? क्या भविष्य की चुनौती हमें स्वीकार है?

आज़ादी और शक्ति के साथ जिम्मेदारी भी आ जाती है। यह जिम्मेदारी भारत की जनता का प्रतिनिधित्व करने वाली इस समिति पर है। आज़ादी से पूर्व हमने कितने कष्टों को झेला है और उनकी स्मृति मात्र से हमारे दिल बोझिल बन गए हैं। उनमें से कुछ दुःख हम अभी भी उठा रहे हैं। फिर भी अतीत पीछे चला गया है और हमें अब केवल भविष्य की पुकार सुननी है।

हमारा भविष्य सहज, व आरामदायी नहीं है, बल्कि उसमें भी सतत संघर्ष है। इस संघर्ष की सहायता से ही हम प्रतिज्ञाएँ लेते आए हैं और आज भी लेने वाले हैं। भारत की सेवा का अर्थ है लाखों करोड़ों दुखी लोगों की सेवा। भारत की सेवा का अर्थ है उसका दारिद्रय, अज्ञान, बीमारी और विषमताओं का अन्त करना। हमारी पीढ़ी की सबसे महान विभूति की यही महत्वाकांक्षा है-- प्रत्येक आँख के आँसू पोंछ डालना। हो सकता है, यह कार्य हमारी शक्ति के बाहर हो, लेकिन जब तक ये आँसू और दुःख अस्तित्व में हैं, हमारा कार्य समाप्त नहीं होगा।

अतः हमें कष्ट सहना है, डटकर काम करना है, अपने सुनहरे सपनों को साकार करना है, उन्हें हकीकत में बदलना है। ये सपने भारत के हैं, लेकिन ये संपूर्ण विश्व के लिए हैं क्योंकि आज सभी राष्ट्र और उनके निवासी एक दूसरे के इतने निकट आ गए हैं कि कोई भी राष्ट्र अलग-थलग रहने की कल्पना भी नहीं कर सकता। शांति, स्वाधीनता, संपन्नता अब अविभाज्य घटक हैं। उसी तरह यह ''वसुधैव कुटुम्बकम'' विश्व किसी भी कारण विभाजित होकर एकाकी नहीं हो सकता। हम भारत वासियों से उनके प्रतिनिधि के रूप में बिनती करते हैं कि इस महा अभियान में आस्था तथा विश्वास के साथ हमें सहयोग दें। किसी क्षुद्र विनाशकारी आलोचना का यह समय नहीं है। किसी भी प्रकार का बैर भाव अथवा एक दूसरे पर दोषारोपण करने का भी यह समय नहीं है। हमें सावधान भारत का एक ऐसा भव्य प्रासाद खड़ा करना है, जहाँ उसकी सारा संतानें सुख शांति के साथ रह सकें।

लोकतंत्र

लोकतंत्र अनुशासन, सहिष्णुता और एक दूसरे की इज्ज़त करने की भावना पर आधारित है। आज़ादी दूसरों की आज़ादी की ओर सम्मान की दृष्टि से देखती है।

लोकतंत्र पूर्णरूपेण राजनीतिक मामला नहीं है। लोकतंत्र का अर्थ है सहिष्णुता – न केवल अपने मत वाले लोगों के बारे में सहिष्णुता बल्कि अपने विरोधियों के प्रति भी सहिष्णुता। आज़ादी के आगमन के साथ-साथ हमें अपने व्यवहार का ढांचा इस प्रकार बदलना चाहिए ताकि वह इस आज़ादी के साथ मेल खा सके।

वर्तमान युग में उपनिवेशवाद अथवा साम्राज्यवाद संपूर्णतः अनुचित लगता है। यह एक अपमानजनक तथा लज्जास्पद पंथ है। घटनाएँ एक अविश्वसनीय रफ्तार के साथ आगे बढ़ती हैं। परिवर्तन के पीछे परिवर्तन होते हैं। नीति का यह ऊपर ऊपर का उथला स्वरूप अनगिनत गलतियों को छिपाता है और चीज़ों का स्वरूप बिगाड़ता है।

जनता से अलग होने वाली सरकार कभी लोकप्रिय नहीं बन सकती। जहाँ तक मेरा संबंध है, मैंने न कभी सरकारों को गिराने की कामना की थी न ही उन्हें गिराने के प्रयत्न किए थे।

लोकतांत्रिक शासनप्रणाली केवल चुनाव की बात नहीं है। लोकतंत्र का सही अर्थ होना चाहिए विषमता का उन्मूलन। यही पर्याप्त है। सही अर्थ के लोकतंत्र में अनुशासनबद्धता स्वयं प्रेरित होती है। जहाँ अनुशासन नहीं, वहाँ लोकतंत्र नहीं रह सकता।

संसदीय लोकतंत्र में अनेक गुण अपेक्षित हैं। अर्थात् उसे सबसे पहले सक्षम होना चाहिए। कार्य के प्रति निश्चित रूप में श्रद्धा होनी चाहिए, आस्था होनी चाहिए। इसमें विशाल मात्रा में सहयोग की भावना होनी चाहिए। आत्म अनुशासन होना चाहिए। लोकतंत्र में हमें इस बात का ज्ञान होना चाहिए कि सम्मान के साथ हार जीत कैसे अपनाते हैं। हाँ, लोकतंत्रात्मक शासनप्रणाली की प्रशंसा तथा प्रेम के बावजूद मैं इस बात से सहमत नहीं हूँ कि बहुसंख्यक लोग हमेशा सही होते हैं।

अधिकार और कर्त्तव्य

हम देखते हैं कि अधिकार पर मर्यादा से अधिक जोर दिया जाता है और कर्त्तव्यों पर बहुत कम। यदि कर्त्तव्यों की जिम्मेदारी स्वीकार कर ली जाए तो अधिकार स्वतः ही मिल जाएंगे।

संसद

हमारे यहाँ संसद है जहाँ हम एक दूसरे के साथ अपने-अपने विचारों पर चर्चा करके किसी निर्णय पर पहुँचने का प्रयत्न करते हैं। क्या संसद को ताला लगाकर हम भूख हड़ताल कर किसी निर्णय पर पहुँच सकते हैं? इसका यही अर्थ है कि जो सबसे अधिक समय तक भूख हड़ताल जारी रख सकता है उसकी विजय होगी, वह अपनी मांगें पूरी करवा सकता है। यह न लोकतंत्र है न ही कुछ और। यह पूर्णतया गलत तरीका है।

हम ही भारत की संसद हैं और हमें ही असंख्य जटिल गंभीर समस्याओं का सामना करना है। संसद में इस तरह का नाटकीय हंगामा हमें मंहगा पड़ सकता है। यहाँ खड़े रहकर मछली बाजार के नारे लगाना भी हमें शोभा नहीं देता। हमें एक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी गई हैं।

सरकार को अपने वक्तव्य और उन्हें प्रमाणित करने वाले सबूतों को सोच-समझ कर पेश करना चाहिए। जब तक सरकार अपने वक्तव्यों का न्यायोचित स्पष्टीकरण देकर संपूर्ण विश्वास नहीं दिलाती तब तक उसे जनता अथवा राष्ट्रों को तिरस्कृत करने का कोई अधिकार नहीं है।

यदि जनता गलत रास्ते पर जाती है, तो कोई उपाय नहीं।

सरकार सर्वोच्च न्यायालय को किसी नीति का हवाला नहीं देती। संसद और सरकार दोनों को ही आपस में विचार विनिमय करके अपनी नीति निश्चित करनी चाहिए।

विरोधी पक्ष की भूमिका

बहस के दौरान किसी विरोधी के खिलाफ एकाध शब्द बोलकर उसे पराजित करना और उसके दिलो-दिमाग तक पहुँचने का प्रयास न करना, अपने मन को झूठी तसल्ली देना है।

वे पूछते हैं नेहरू को दूसरों की आलोचना करने का क्या अधिकार है जब वह स्वयं बरसों से एक ही पार्टी की सरकार के साथ कुर्सी पर चिपका बैठा है? सच

पूछो तो यह एक पार्टी की सरकार वाली बात मेरी समझ में नहीं आती। क्या वे चाहते हैं वैकल्पिक पार्टियों का शासन हो? या वे चाहते हैं कि अपने विरुद्ध काम करने के लिए हम लोगों को रिश्वत दें? भई मेरी तो समझ में कुछ नहीं आता। इसमें तो तर्कहीनता तथा उनकी सुप्त भावनाओं का उद्रेक ही नज़र आता है।

विपक्षी पार्टी के लोग तथा हमारे कुछ कांग्रेसी भाई न केवल कांग्रेस की असफलता तथा गलतियों पर टीका-टिप्पणी करना चाहते हैं बल्कि राष्ट्र तथा देश को नीचा दिखाने की भी उनकी प्रवृत्ति है।

आज की हमारी इस विचित्र दुनिया में सवालों की झड़ी लगाने का चलन है। इन सवालों के जवाब देने की कोशिश या तो कोई अक्ल का पुतला या कोई अक्ल का दुश्मन ही कर सकता है। मैं न तो बहुत अक्लमंद हूँ और न ही अक्ल का दुश्मन हूँ। लोकतंत्र में कई गुण हैं– विचार स्वातंत्र्य, चर्चा स्वातंत्र्य, विपक्षी दलों को अपने विचार पूर्ण रूप से प्रकट करने देने के लिए अवसर और उनसे चर्चा करने के बाद सही बातों को मान लेने का वातावरण। हो सकता है कभी-कभी यह वातावरण न हो लेकिन यदि यह सही है तो अंत में प्रचलित होगा ही। लोगों में मतभेद होने से हमेशा समस्या खड़ी होती है चाहे वह उचित हो या अनुचित। समस्याओं के राजनीतिक समाधान के लिए समरूपता के सिद्धांत को लागू करना चाहिए।

कुछ राजनीतिक पार्टियाँ वादी के वकील की तरह कार्य करती हैं। जब उन्हें लगता है कि अपना मुकद्दमा बिल्कुल निराधार है, उसमें कोई दम नहीं, तब वे तर्कों की बजाय गालियों की वर्षा करती हैं।

आलोचना और निन्दा

अगर बहुमत हर समय अल्पसंख्यकों पर अपनी इच्छा थोपने का प्रयास करे तो यह मूर्खता होगी। मतभेद कम करने का केवल एक ही तरीका है कि सहयोग का सुखद वातावरण बनाया जाए। हमारी चाहे जितनी आलोचना हो, हमें हमेशा इस बात को याद रखना चाहिए कि यदि भारत प्रगति कर रहा है, तो वह भारतीय लोगों के कार्य से, न कि भारत सरकार की वजह से।

यदि आप हर बात पर नाक भौं सिकोड़ेंगे तो आपकी नापसंदगी की क़ीमत शून्य होगी। आपको जहाँ उचित है वहाँ उसका श्रेय देना ही चाहिए और जहाँ आवश्यक है वहीं आलोचना करनी चाहिए तभी आपके विचार को महत्व दिया जाएगा।

अनुचित बात का अवश्य विरोध कीजिए। किन्तु किसी प्रकार का वैरभाव न रखिए। सभी लोग मुझे भारत का प्रधानमंत्री कहते हैं, किन्तु अच्छा होगा, यदि मुझे भारत का आद्य सेवक कहा जाए। इस ज़माने में पदाधिकार का कोई महत्व नहीं है, सेवा का महत्व होता है।

व्यक्ति-स्वातंत्र्य

किसी भी लोकतंत्रात्मक समाज पद्धति में व्यक्तिगत स्वतंत्रता की परिकल्पना सामाजिक स्वतंत्रता तथा व्यक्ति के समष्टि के साथ जो संबंध होते हैं उनसे संतुलित होती है। व्यक्ति को चाहिए कि वह दूसरे व्यक्तियों की स्वतंत्रता का उल्लंघन न करे।

स्वतंत्रता की उपेक्षा ख़तरनाक हो सकती है

ऐसा कभी मत सोचिए कि एक बार स्वाधीनता प्राप्त होने से वह निरन्तर आपके पास रहने वाली है। आपकी ज़रा सी उपेक्षा, बेफ़िक्री अथवा असावधानी हमारी आज़ादी को संकट में डाल सकती है। हमारे इतिहास में इस बात की अनेक बार पुनरावृत्ति हुई है।

धर्म और जाति

हम सब चाहे किसी भी धर्म या जाति के हों, फिर भी अगर भारत का अस्तित्व एक बलशाली तथा स्वायत्त राष्ट्र के रूप में बना रहता है तो वह हम सबके लिए कल्याणकारी है।

समय की गति के साथ हममें धर्म के नाम पर संकीर्णता पनपती गई। कैसा है यह धर्म जो इन्सान के इन्सान से मिलने में रुकावट बनता है? धर्म के नाम पर समुद्र यात्रा को भी एक घोर पाप समझा जाता है।

धर्म के कारण समाज में भेदभाव लाना बहुत उथलापन है। आज की दुनियां में सभी राष्ट्र केवल दो समूहों में विभाजित हैं-- अमीर और गरीब। मेरे विचार में अन्य कोई विभाजन हो ही नहीं सकता।

जहाँ तक धर्म का सवाल है, मेरे विचार में मूल विवाद को ढकने के लिए केवल एक बहाना मात्र बनाने के लिए इसे उठाया जाता है।

पवित्रता अच्छी चीज़ है। मैं सदाचारी मनुष्यों के सामने हमेशा नतमस्तक होता हूँ। लेकिन मैं अभी तक यह नहीं समझ सका कि पवित्रता का संबंध सामाजिक कुरीतियों के साथ क्यों जोड़ा जाता है। यह मेरी समझ के बाहर है।

हम सब धार्मिकता और एक प्रकार के आधुनिकतावाद तथा प्रतिक्रियावाद के मिश्रण हैं। कितनी विचित्र बात है कि जहाँ कभी कभी हम ढिंढोरा पीटते हैं कि हमें अपना जीवन बदलना चाहिए, वहीं हम पुरानी लकीर के फकीर बने फिरते हैं, गली-सड़ी मृत रूढ़ियों को गले लगाते हैं।

जातीयता का अभिशाप नष्ट करना होगा। क्योंकि जातीयता के आधार पर न लोकतंत्रात्मक समाज खड़ा है न समाजवाद।

धर्म निरपेक्षता का अर्थ धर्महीनता नहीं है

हमारे संविधान में भारत को एक धर्मनिरपेक्ष राज्य के रूप में घोषित किया गया है। इसका मतलब यह नहीं कि वह अधार्मिक है, नास्तिक है। धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र

का अर्थ सभी धर्मों को समान रूप में सम्मानित किया जाना तथा प्रत्येक मनुष्य को चाहे वह किसी भी धर्म का अनुसरण करता हो – समान अवसर देना है।

समाजवाद

अपने चारों ओर हम जिस प्रकार का जीवन देखते हैं वह बहुत ही जटिल है।

कुछ मूर्ख लोग सोचते हैं कि धन अपने आपमें ही बहुत अच्छी चीज़ होती है। इसीलिए वे उसे एकत्रित करते हैं और उसका उपयुक्त रीति से उपभोग करने की बजाय उसे संचित करते रहते हैं।

बढ़ती हुई सम्पत्ति तथा उत्पादन से उपेक्षित किए गए समाजवाद का अर्थ होगा -- गरीबी को समान रूप से बांटना अर्थात गरीबी को फैलाना। हमें सम्पत्ति का उत्पादन करना चाहिए और बाद में उसे समान रूप में विभाजित करना चाहिए।

सब लोगों को आप एक समान नहीं बना सकते, न ही सभी को एक ही तराजू में तोल सकते हैं। किंतु कम से कम हमें उन्हें समान अवसर तो देना ही पड़ेगा।

मैं साम्यवाद (कम्यूनिज्म) के खिलाफ नहीं हूँ। न ही मैं समाजवाद के खिलाफ हूँ। हाँ, असल बात यह है कि -- मैं केवल भारत के लिए हूँ।

ग़रीबी हटाओ

गरीबी, बेरोजगारी, अवनति और गुलामी को दूर करने के लिए समाजवाद के सिवाय कोई रास्ता नहीं है। इसका मतलब हमारी सामाजिक व राजनीतिक संरचना में क्रांतिकारी परिवर्तन है।

द्रव्यार्जन करो और समान रूप में बाँट दो

गरीबों में कुछ धनवान लोगों की सम्पत्ति का बँटवारा करने से हमारे राष्ट्रीय उत्पादन में कुछ अन्तर नहीं पड़ेगा। हमें द्रव्यार्जन करना चाहिए और फिर उसका समान रूपेण बँटवारा करना चाहिए।

चींटी मनुष्य से श्रेष्ठ है

यदि आपसी सहयोग और बहुजन हिताय बहुजन सुखाय के लिए स्वार्थत्याग ही संस्कृति की कसौटी है तो हम यह कह सकते हैं कि दीमक और चींटी इस मामले में मनुष्य से श्रेष्ठ हैं।

मुझे बिना वर्ग तथा जाति का समाज चाहिए

धर्म, जाति, भाषा, प्रांत के नाम पर आज संकुचित दायरे में संघर्ष चल रहा है। मैं चाहता हूँ वह तुरन्त बंद हो और एक ऐसे वर्गहीन तथा जातिहीन समाज की रचना हो जहाँ हर व्यक्ति को अपनी-अपनी शक्ति तथा योग्यता के अनुसार अपना विकास करने का अवसर प्राप्त हो।

सहिष्णुता

सहिष्णुता का अर्थ है दूसरे के विचारों को बर्दाश्त करने की शक्ति। सहिष्णुता मन की एक अवस्था है। यह दुनिया एक बहुरंगी तथा बहुढंगी स्थान है। इसीलिए सहिष्णुता की अत्यंत आवश्यकता होती है।

भावात्मक एकता

केवल राजनीतिक एकता का विचार करना ही पर्याप्त नहीं है। हमें उससे भी अधिक गहराई तक जाना चाहिए। हमारे पास ऐसी भावात्मक एकता होनी चाहिए जो प्रांतीय, जातीय, धर्मीय प्रतिबंधों को दूर कर सके। तभी हम सच्चे अर्थ में घोषित कर सकेंगे – एक हृदय हो भारत जननी।

बालक क्या जाने जग के बंधन

दुनिया में विभिन्न प्रकार की विषमताएँ होती हैं – धर्म, जाति, वर्ण, पक्ष, राष्ट्र, प्रांत, भाषा, रीति, रिवाज, अमीरी, गरीबी, इत्यादि। सौभाग्य से बच्चों को एक दूसरे से अलग कर देने वाले इन सामाजिक बंधनों की अधिक जानकारी नहीं होती। वे अपने में मस्त रहते हुए एक दूसरे के साथ खेलते हैं, एक दूसरे के साथ व्यवहार करते हैं। जब वे बड़े हो जाते हैं तभी उन्हें अपने बड़ों से इन सामाजिक बंधनों, सामाजिक विषमताओं का ज्ञान होता है।

एक राष्ट्र

भारत में प्राचीन काल से ही अनेक धर्म वाले लोग बड़े प्रेमपूर्वक रहते आए हैं। आज भी उन धर्मों का उतना ही सम्मान और आदर किया जायेगा, किंतु एक राष्ट्रीय दृष्टिकोण के साथ। अपने ही दायरे में रहने वाला कूपमंडूक वृत्ति का राष्ट्रवाद हम कभी नहीं अपनाएंगे। किन्तु कुछ अंशों में एक प्रकार का सहिष्णु, क्रियात्मक, राष्ट्रीय दृष्टिकोण अपनाएंगे, जिसका अपने आप पर तथा अपने लोगों की अलौकिक बुद्धिमत्ता पर पूरा-पूरा भरोसा हो और जो एक अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था की स्थापना में अपना पूरा-पूरा सहयोग दे रहा हो।

अतीत के प्रति दृष्टिकोण

भारत को काफी हद तक अपने अतीत का त्याग करना होगा और उसे अपने वर्तमान पर हावी होने देने से बचना होगा। हमारा जीवन अतीत के बोझ के नीचे दबा हुआ है। जो मृत है, जिसका कार्य पूरा हो चुका है, उन सब बातों को दूर करना होगा। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि अतीत में जो महत्वपूर्ण और जीवनदायी है उसका भी त्याग करना चाहिए। अपने परंपरागत आदर्श हम कभी नहीं भूल सकते। सदियों से चले आए भारतीय लोगों के सुनहरे सपने, हमारा प्राचीन ज्ञान, हमारे पूर्वजों का जीवन तथा प्रकृति के प्रति उत्साह, उमंग और प्रेम, उनकी जिज्ञासु वृत्ति, मानसिक तथा वैचारिक साहस, साहित्य, कला, संस्कृति में उनका अपूर्व योगदान, सत्य, शिव और सुंदरम, स्वतंत्रता के प्रति उनका प्रेम, उनके अपनाए हुए मूलभूत तत्व, जीवन की रहस्यमय प्रवृत्तियों के संबंध में उनकी ग्रहणशक्ति, अपने से अलग विभिन्न विचार प्रणालियों को सहन करने की उनकी शक्ति, अन्य लोगों और उनके सांस्कृतिक गुणों में समरूपता दिखाने की उनकी क्षमता, उनसे सहानुभूति दिखाकर एक विविधरंगी मिश्र संस्कृति निर्माण करने की उनकी योग्यता इत्यादि बातें भला कोई कभी भुला सकता है?

यदि अतीत के किसी युग में सत्य के एक रूप को तत्वों के आधार पर पाषाणवत् जड़ बना दिया गया हो, तो मानवता की बदलती आवश्यकताओं का

विकास होना रुक जाएगा। सत्य के दूसरे पहलू प्रकाश में नहीं आ पाएंगे और वह आने वाले किसी भी युग के आवश्यक प्रश्नों का उत्तर देने में असमर्थ रहेंगे। यह अब शक्तिशाली, जोरदार नहीं रहा, बल्कि स्थिर हो गया। यह जीवनदायी प्रेरणा नहीं रहा, बल्कि मृत हो गया। यह बात सत्य है कि संभवतः उस हद तक उसे समझा नहीं गया होगा जितना उस अतीत में – जब उसका विकास हुआ था और उसे उस युग की भाषा तथा संकेतों से सजाया गया – समझा गया था। क्योंकि अगले युग में उसका संदर्भ विभिन्न हो सकता है। मानसिक वातावरण में परिवर्तन आ गया। नए सामाजिक रस्मो रिवाज विकसित हुए और कई बार उस प्राचीन लेख का अर्थ समझ पाना टेढ़ी खीर हो गया।

अतीत, वर्तमान और भविष्य

सुना है, इतिहास से हमें बहुत कुछ शिक्षा मिलती है। ऐसा भी कहा जाता है कि इतिहास स्वयं अपने आपको कभी नहीं दोहराता। दोनों बातें बिलकुल सही हैं क्योंकि यदि हम इतिहास के दास बनकर उसका अंधानुकरण करने का प्रयास करें तो हम इतिहास से कुछ भी नहीं सीख सकेंगे। न हम इस बात की अपेक्षा कर सकते हैं कि उसकी अपने आप पुनरावृत्ति हो या उसका एक ही स्थान पर स्थिर संचय हो। किंतु हम उसके पीछे उसके बारे में पूछताछ करके उसे चलाने वाली शक्तियाँ खोज सकते हैं। इतनी खाक छानकर भी हमें शायद ही कोई सीधा उत्तर मिलता है। कार्ल मार्क्स कहते हैं, 'इतिहास के लिए कई प्रश्न उपस्थित करने के अलावा पुराने प्रश्नों का उत्तर पाने के लिए अन्य कोई रास्ता नहीं है।'

सुकरात के युग की तरह हम जिज्ञासा के युग में रह रहे हैं। किंतु वह जिज्ञासा केवल एथेन्स जैसे एक शहर के लिए ही मर्यादित थी। अब यह संपूर्ण विश्व में फैली हुई है।

जीवन कितना समृद्ध, विविध रंगों से विभूषित, बहुढंगी है। यद्यपि इसमें कई दलदल, कई कीचड़ युक्त स्थान हैं फिर भी इसमें महासागर, ऊँचे-ऊँचे पर्वत, बर्फ, हिमनदियाँ और सितारों से जगमगाती हुई सुंदर रातें, अपने परिवार तथा मित्रों का अटूट स्नेह, किसी समान हेतु प्रीत्यर्थ एकत्रित होने वाले कामगारों का

निश्छल भाईचारा, संगीत, पुस्तकों और कल्पनाओं का अंबार, प्रतिभा का विशाल साम्राज्य है। इसीलिए हममें से प्रत्येक व्यक्ति कह सकता है--

"हे ईश्वर। यद्यपि मैं इस धरती माता की संतान के रूप में इस धरती पर रहता हूँ फिर भी सितारों से जगमगाते हुए इस आकाश की मुझ पर पितृछाया है।"

विचारों को न्याय देने के लिए कार्य रूप में परिणत करना होगा। जग प्रसिद्ध तत्ववेत्ता रोम्या रोलाँ कहते हैं, 'कृति विचार का अंत है।' जो विचार क्रियान्वयन तक नहीं पहुँचता वह एक प्रकार की भ्रूणहत्या अथवा विश्वासघात है। यदि हम विचारों के दास हैं, तो हमें कर्म का भी दास बनना होगा।

भारतीय संस्कृति

एक प्राचीन देश होने के नाते हमें बहुत लाभ हुए हैं, साथ ही हानियाँ भी हुई हैं।

भारत में हमारा एक कदम आधुनिक जगत में है तो दूसरा कदम प्राचीन अतीत में रखा हुआ हैं।

भारत केवल निंकटतम अतीत का ही नहीं, देश की हज़ारों वर्ष पुरानी कहानी का भी परिणाम है। विचार, अनुभव और कृतियों के स्तर के ऊपर स्तर चढ़ने के उपरान्त ही हम उस स्थिति तक पहुँच सके, जैसा हमारा यह वर्तमान रूप है।

भारत में हमें एक बात अवश्य करनी है-- जहाँ तक हो सके मृतपरंम्पराओं का समूल नाश। बहुत हो चुका उनका आधिपत्य। जब भारत मृदुभाषी था, इसका अर्थ यह नहीं कि वह निर्बल था बल्कि उसे दूसरों के प्रति विश्वास था।

भारत ने हर व्यक्ति, हर बात की ओर सहिष्णुता दिखाई है। इसमें पागल लोगों का भी समावेश है-- जी हाँ, इस दुनिया में उनका भी अस्तित्व होता है।

जो लोग संस्कृति की डींग हाँकते है, प्रायः संस्कृति के बारे में उन्हें अल्पज्ञान ही होता है।

हठधर्मिता

जिन लोगों में अथवा जिस देश में, केवल हठधर्मिता की प्रवृत्ति पाई जाती है, उन लोगों की, उस देश की प्रगति होना मुश्किल होता है। दुर्भाग्य की बात है-- हमारा देश और हमारे लोग आजकल बेहद संकुचित और हठधर्मी हो गए हैं।

शिक्षा के बारे में

शिक्षा का उद्देश्य है मनुष्य का मन, उसकी बुद्धि, उसकी आत्मा को मुक्त करना न कि उन्हें परंपरागत ढाँचे में बद्ध करना।

उत्पादक, अनुसन्धानात्मक और जीवनोपयोगी प्रक्रिया

यदि हम अपने पूर्वजों का अनुसरण ही करते रहेंगे तो हमारे देश की कभी उन्नति नहीं हो सकती। उत्पादक, अनुसंधानात्मक तथा जीवनोपयोगी प्रक्रिया ही राष्ट्र को बना सकती है।

मानव प्राणियों का विकास

मानव प्राणी का विकास एक फूल या एक पौधे के समान होता है-- होना भी चाहिए। आप उसे पानी से सींच सकते हैं -- आप उसके विकास में सहायता कर सकते हैं, आप उसे अच्छी मिट्टी दे सकते हैं। उसे खुली, ताजी हवा में या खुले

स्थान पर रख सकते हैं ताकि उसे सूर्य प्रकाश मिल सके। किन्तु उसे अपने आप बढ़ना होगा। आप उसे ज़बरदस्ती बढ़ा नहीं सकते।

विश्वविद्यालय का उद्देश्य–मानवता

विश्वविद्यालय का उद्देश्य है मानवता, मानव हित। विश्वविद्यालय का उद्देश्य सहिष्णुता, तर्क, उन्नति, नई कल्पनाओं का साहस और सत्य की खोज करना है। इतना ही नहीं उच्च ध्येय के प्रति मानव जाति कीउत्तरोत्तरप्रगति करना भी विश्वविद्यालय का उद्देश्य होता है। लेकिन यदि यह विद्या मंदिर, सरस्वती का निवास स्थान स्वयं ही संकुचित हठवाद, पक्षाभिमान, तथा क्षुद्र उद्दिष्टों का घर बना तो भला राष्ट्र की, देश की उन्नति कैसे हो सकती है ? अथवा लोगों का आत्मविकास कैसे हो सकता है ?

विज्ञान की प्रवृत्ति

सामान्यतः सभी राष्ट्र परिवर्तनशीलता पसन्द नहीं करते। प्रमुखतः मानवप्राणी एक सनातन प्रवृत्ति का प्राणी है। जीवन के कुछ निश्चित मार्गों की उसे आदत सी बन चुकी है। और अगर कोई उनमें परिवर्तन करना चाहे तो उसे अच्छा नहीं लगता। इसके बावजूद परिवर्तन होता रहता है और लोगों को उसे अपनाना होता है। अतीत में भी लोगों ने ऐसा ही किया है।

गति विज्ञान

विज्ञान की प्रगति होने दीजिए, क्योंकि यह अत्यावश्यक है और विज्ञान की प्रगति होगी ही। साथ-साथ कला तथा मानव-जाति के लिए उपयुक्त अन्य शाखाओं का भी विकास होने दीजिए। इन सबके पीछे वह गति विज्ञान, वह शक्तिशाली संदेश तथा वह उत्पादनशीलता, क्रियाशीलता रहने दीजिए। इन सबके बिना व्यक्ति का जीवन उदास तथा नीरस होगा।

मानवता और वैज्ञानिक प्रवृत्ति

मानवता ही ईश्वर का दूसरा रूप है और समाज सेवा ही धर्म है।

आल्बर्ट आइन्स्टाइन कहते हैं, "हमारे इस ऐहिक युग में केवल गंभीर रूप में काम करने वाले वैज्ञानिक ही संपूर्णतः धार्मिक प्रवृत्ति के इन्सान कहलाने लायक हैं।"

विज्ञान मानव-जाति का रक्षक है

"इंजन-ड्राइवर इंजन चला सकता है, इसीलिए वह प्लेटो और सुकरात से अधिक प्रगतिशील तथा अधिक श्रेष्ठ है"-- कितना बड़ा कुतर्क है यह ! लेकिन यह कहना बिलकुल सही है कि स्वयं इंजन प्लेटो के रथ की अपेक्षा चलनशास्त्र की अधिक प्रगतिशील पद्धति है।

आजकल हम बहुत सारी किताबें पढ़ते हैं। मेरे विचार से उनमें से अधिकांश मूर्खतापूर्ण होती हैं। प्राचीन काल में लोग थोड़ी सी किताबें पढ़ा करते थे, मगर वे अच्छी हुआ करती थीं, वे उन्हें पूर्ण रूपेण समझते थे। स्पिनोज़ा एक महान् विद्वान तथा बुद्धिमान यूरोपियन दार्शनिक था। वह सत्रहवीं शताब्दी में

अम्स्टरडम में रहा करता था। कहा जाता है कि उसके ग्रंथालय में साठ से भी कम ग्रंथ थे।

हमें इस बात का पूरा ज्ञान होना चाहिए कि किसी भी विद्या का पूर्ण लाभ उठाने से पहले उसका किस तरह उचित प्रयोग किया जाए। अपनी शक्तिमान कार आगे दौड़ाने से पहले हमें इस बात का संपूर्ण ज्ञान होना चाहिए कि हमें कहाँ जाना है। उसी तरह हमें इस बात का पूरा ज्ञान होना चाहिए कि हमारे जीवन का ध्येय, उद्देश्य क्या है। चतुर बंदर भी कार चला सकता है किंतु वह एक सतर्क, सुरक्षित ड्राइवर नहीं हो सकता।

ज्ञान का क्षेत्र इतना विशाल है कि हर कार्यकर्ता को अपनी-अपनी विद्या का क्षेत्र विशेषज्ञ बनना पड़ता है। कई बार ऐसा होता है कि वह ज्ञान के दूसरे विभागों के संबंध में बिलकुल अनभिज्ञ होता है। इस तरह यद्यपि वह ज्ञान की कुछ शाखाओं का विशेषज्ञ बनता है किंतु अन्य शाखाओं के संबंध में उसे कुछ ज्ञान नहीं होता अतः मानवी उद्योग के संपूर्ण क्षेत्र का उचित तथा संपूर्ण अभिप्राय देने में वह अपने आप को असमर्थ अनुभव करता है।

गणित की सहायता लेकर आइन्स्टाइन ने भौतिकी के कुछ नए मूलभूत नियम ढूंढ़ निकाले। इससे उन्होंने न्यूटन के कुछ नियमों से, जो आज 200 वर्षों तक बिना किसी शंका के स्वीकृत किए गए थे, भिन्न मत प्रकट किया। आइन्स्टाइन ने अपना सिद्धान्त बड़े दिलचस्प तरीके से स्थापित किया था। इस सिद्धान्त के अनुसार प्रकाश का कार्य एक विशिष्ट रूप में चलना है। इसकी परीक्षा सूर्यग्रहण के समय की जा सकती है। जब सूर्य ग्रहण होता है तब ज्ञात होता है कि प्रकाश की किरणें उसी रूप में अपना कार्य करती हैं, अतः गणितीय तर्क की सहायता से निकाला हुआ एक निष्कर्ष प्रत्यक्ष प्रयोग द्वारा सिद्धान्त के रूप में स्थापित किया गया।

यह सिद्धान्त 'सापेक्षता का सिद्धान्त' नाम से प्रसिद्ध हुआ। विश्व के संबंध में विचार करते समय आइन्स्टाइन ने इस बात का अनुभव किया कि समय की कल्पना तथा अवकाश की कल्पना स्वतंत्र रूप से लागू नहीं की जा सकती। अतः उन्होंने दोनों को हटा दिया और दोनों के संयोग से एक नई कल्पना प्रस्तुत की। यही है अवकाश-काल की कल्पना।

एक दूसरा आश्चर्यजनक तथ्य : हमें बताया गया है कि यह विश्व फैलने वाला है। सर जेम्स जीन्स नामक एक गणितज्ञ ने इसकी तुलना एक साबुन के बुलबुले से की है जो बड़ा और बड़ा होता जाता है। यह विश्व इस बुलबुले का

पृष्ठभाग है और बुलबुले के समान दिखाई देने वाला विश्व इतना विशाल है कि उसे पार करने के लिए लाखों प्रकाश-वर्ष लगेंगे।

मैं ईश्वर से नहीं डरता

जी हाँ, मैं ईश्वर से नहीं डरता। मैं ने ऐसा कुछ भी नहीं किया कि ईश्वर से डरने लगूँ। पापी मनुष्य को इस तरह का भय रहता है, वह कृपाभिलाषी रहता है। ईश्वर कोई हौवा तो नहीं, न ही कोई जुल्मी जमींदार है जिससे हर किसी को डरना चाहिए। ईश्वर उसी जगत् की आत्मा है, चेतना है, जिसके हम भी एक अंश हैं।

आस्था का स्वातंत्र्य

प्रत्येक व्यक्ति को आस्था-स्वातंत्र्य तथा अनुष्ठान-स्वातंत्र्य मिलना चाहिए। ....किन्तु जब धर्म स्वार्थ के भेस में आकर लोगों को लूटता है तब वह धर्म नहीं रहता।

धर्म

"धर्म" शब्द में "रेलीजन" से कुछ अधिक अर्थ अभिप्रेत है। "धृ" धातु से "धर्म" शब्द आया है जिसका अर्थ है "धारण करना" (धारयति इति धर्म) यह किसी वस्तु की अन्तर्भूत प्रकृति है, उसके अन्दरूनी अस्तित्व का नियम है। यह एक नीति-शास्त्र की कल्पना है। इसमें नैतिक कानून, सदाचरण और मनुष्य के कर्तव्यों तथा जिम्मेदारियों की भावना आ जाती है।

नए मंदिर, मस्जिद और गुरुद्वारे

आधुनिक युग में मनुष्य मानव जाति के कल्याण के लिए जहाँ काम करता है वहीं सबसे बड़ा मंदिर, मस्जिद तथा गुरुद्वारा है। बताइए, दूसरा कौन सा स्थान अधिक महान् हो सकता है जहाँ हज़ारों, लाखों लोग अपना खून-पसीना बहाकर और प्राणों की बलि देकर काम करते हैं?

भारतीय नारी

मुझे भारतीय नारी पर गर्व है। उनका सौंदर्य एवं लावण्य, उनकी सुशीलता, उनकी छवि, उनकी लजालुता, नम्रता, बुद्धि-चातुर्य और उनकी त्यागमयी प्रवृत्ति से मेरा सिर गर्व से ऊँचा हो जाता है। मेरे विचार से अगर कोई सच्चे अर्थ में भारतीयता का प्रतिनिधि है तो वह भारतीय नारी, न कि भारतीय पुरुष। मुझे उन पर पूरा भरोसा है। उन्हें अपना रचनात्मक विकास करने के लिए अनुमति देने में मुझे तनिक भी भय अथवा हिचकिचाहट नहीं होती।

परिवार-नियोजन

यदि हमारे देश की जनसंख्या वर्तमान जनसंख्या से आधी होती तो, हमारा देश कहीं अधिक प्रगतिशील होता।

आदिवासी

यह बात सरासर झूठ है कि सभी आदिवासी लोग पिछड़े हुए होते हैं। बहुत सारे विषयों में वे आपसे और मुझ से भी अधिक बुद्धिमान होते हैं। उनकी कुछ परम्पराएँ लोकतंत्रात्मक पद्धति की द्योतक होती हैं।

(जवाहरलाल जी ने एक महाविद्यालयी छात्रा के मित्र की बताई हुई कहानी दोहराई। वह छात्रा सिर पर लकड़ी का भार उठाकर अपने घर लौट रही थी। जब उससे पूछा गया– वह ऐसा क्यों कर रही है तो उसने धाराप्रवाह अंग्रेजी में उत्तर दिया कि पिछले दो-तीन सालों से उसके घरवाले बहुत नुकसान उठा रहे हैं क्योंकि जहाँ उसका व्यवसाय चल रहा था वह प्रदेश अब पाकिस्तान के अधिकार में चला गया था अतः व्यवसाय बिलकुल ठप्प हो गया था। इसीलिए वह अपने कॉलेज की छुट्टियों में अपने घरवालों की मदद करने की कोशिश कर रही थी।)

मैं आपसे पूछता हूँ कि भारत में कितने महाविद्यालयी छात्र, न केवल लड़कियाँ किन्तु लड़के भी, अगर उन्हें ऐसी हालत का सामना करना पड़े, तो लकड़ी का बोझ उठाएंगे? मैंने यह मिसाल आपके सामने रखी क्योंकि मुझे उस असमिया लड़की की यह मनोवृत्ति बहुत अच्छी लगी।

आदिवासी लोग आत्मसम्मान के प्रति बहुत ही जागरूक रहते हैं और उन्हें अपनी इज्जत का बहुत ख्याल होता है।

मिल मालिकों से

अगर आप अपने मज़दूरों को यह बात समझाने का प्रयास करें कि देश की उन्नति उनके परिश्रम पर निर्भर है तो वे अपने काम में अधिक रुचि लेंगे। इससे आप जैसे उद्योगपति और मज़दूरों में एक साझेदारी की भावना का निर्माण होगा।

मज़दूर संगठन

मालिक व मज़दूरों के बीच वर्ग-संघर्ष होने से अच्छा है, एक मज़दूर यूनियन की स्थापना करना। इस बात पर मुझे रत्तीभर भी संदेह नहीं कि भविष्य में उद्योग-व्यवसाय में मज़दूरों की भूमिका विकसित होगी।

खासकर जब मिल मालिक हिंसा का आश्रय लेते हैं, तब मज़दूरों का शिकायत करना उचित है। जाहिर है कि मिल मालिकों का इस तरह का आचरण शिष्ट नहीं है। सरकार, उद्योगपति और जनता को चाहिए कि वे मज़दूरों के साथ हमदर्दी का आचरण करें। आपको मानवता के नाते उनके साथ सद्व्यवहार करना चाहिए। इससे उन्हें ज्ञात होगा कि वे भी देश की आर्थिक व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण भाग हैं।

हड़ताल

विश्व का इतिहास इसे मानता है लेकिन हमारे देश की वर्तमान स्थिति में यह तर्क-संगत नहीं है। मज़दूरों को आपस में चर्चा करके अपनी समस्याओं का हल ढूंढ़ने का प्रयास करना चाहिए। अगर उन्हें इसमें सफलता नहीं मिलती तो पंचायत समिति तथा अन्य शांति-प्रस्थापक मंडल तो होते ही हैं। उन्हें इस बात का ख्याल रखना चाहिए कि किसी प्रकार का भी हंगामा देश की आर्थिक संरचना को क्षति न पहुंचाए।

कुटीर-उद्योग

कुटीर उद्योगों पर ज्यादा ध्यान दिया जाना चाहिए। भारत में देश के संपूर्ण संगठित उद्योगों की अपेक्षा हथकरघे के उद्योग में अधिक लोग काम करते हैं। कोई भी लोकतंत्रात्मक शासन प्रणाली का अनुसरण करने वाला देश इन लोगों को दूर नहीं फेंक सकता। केवल अनियंत्रित एकसत्तात्मक शासन प्रणाली ही ज़बरदस्त कीमत पर यह कर सकती है। मेरे विचार में यह बात अनिष्टकारक है।

कर

कर-पद्धति का एक उद्‌देश्य है—आमदनी में समानता लाना और विषमता कम करना। हमारे देश में भयंकर विषमता है। जाहिर है कि एक आधुनिक सामाजिक दृष्टिकोण ऐसी भयानक विषमता कभी नहीं सह सकेगा।

उद्योगों के मुकाबले कृषि अधिक महत्वपूर्ण है

मैं मानता हूँ कि उद्योग होने चाहिए, इस्पात कारखाने होने चाहिए, यह होना चाहिए, वह होना चाहिए। लेकिन फिर भी मेरा ठोस मत है कि कृषि इन उद्योगों से कई गुना अधिक महत्वपूर्ण है।

श्रमिकों का पारिश्रमिक

उद्योग-व्यवसाय की हालत चाहे जैसी हो, एक श्रमिक को अपना पारिश्रमिक मिलना ही चाहिए। उद्योगपति को अपने मुनाफे का विचार बाद में करना चाहिए।

यदि किसी जिम्मेदार व्यक्ति ने यह पारिश्रमिक नहीं दिया तो वह अपनी दुकान जितनी जल्दी बंद करे, उतना ही अच्छा है।

परिश्रम का सम्मान

यदि अवसर मिला तो मैं अपनी बेटी को एक साल के लिए शिक्षा के तौर पर बिलकुल किसी अन्य मज़दूर की तरह, किसी कारखाने में लगवा दूँगा।

भ्रष्टाचार

....जहाँ सरकार हमेशा प्रथम दर्शनी न्यायसंगत दिखाई देने वाले किसी भी आरोपी की पूछताछ करने के लिए तैयार बैठी रहती है, लोक सेवकों पर ऐसे ही अंधाधुंध तारतम्यहीन हमले किए जाएं तो आमतौर पर उनका तथा जनता का नैतिक धैर्य ढहने लगता है।

दुर्भाग्य से कभी-कभी ग़बन और घपलों के मामले होते हैं। किंतु जितनी रकम का प्रयोग किया गया है उसके एक मामूली घटक का ही वे प्रतिनिधित्व करते हैं, अतः वे उपेक्षणीय ही होते हैं। जिनकी ईमानदारी, सच्चाई तथा निष्ठा पर देश की शासन प्रणाली निर्भर है, उन सरकारी नौकरों पर संदेह प्रकट करना अनुचित है।

सावधानी तो हमेशा बरतनी चाहिए। अपनी तरफ से मैं बार-बार यही यकीन दिलाता हूँ कि ऐसे मामलों की ओर जिनमें कुछ तथ्य हों, अगर सरकार का ध्यान

आकर्षित कराया गया तो उनकी कसकर पूछताछ होगी तथा उनके खिलाफ कार्रवाई भी की जाएगी।

योजना के बारे में

आर्थिक विकास के किसी भी कार्य के लिए योजना अत्यावश्यक है। योजना के साथ संतुलन जुड़ा हुआ है। यह संतुलन उद्योग तथा खेती के बीच, बड़े उद्योग व छोटे उद्योग के बीच, लघु उद्योग, कुटीर उद्योग तआ अन्य उद्योगों के बीच होना चाहिए। इनमें से एक भी गलत निकला तो सारी अर्थ व्यवस्था ताश के पत्तों के मकान की तरह धड़ाधड़ गिर जाएगी। अगर आप कृषि-उद्योग को अपने आप पर छोड़कर केवल उद्योग पर ही अपना ध्यान केन्द्रित करेंगे तो देश को कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। जब तक यहाँ यंत्रों का निर्माण नहीं होता, लोहे तथा फौलाद का यहीं हमारे देश में ही उत्पादन नहीं होता, तब तक औद्योगिक प्रगति होना मुश्किल है।

अन्य देशों ने जो किया, वही हम करें तो कभी-कभी यह लाभदायक होता है। लेकिन कभी उसे न करने से भी हमारा लाभ हो सकता है।

युद्ध के बारे में

आजकल के जमाने में विश्व युद्ध में तटस्थ रहना बड़ा कठिन काम है।

कोई भी व्यक्ति जिसे अंतरराष्ट्रीय मामलों का थोड़ा बहुत ज्ञान हो, जानता है कि अगर हमारा बस चले तो हम किसी भी युद्ध में भाग लेने वाले नहीं। जब अपनी पसन्द का फैसला करने का समय आएगा तब हम उसी का पक्ष लेंगे जिसमें हमारी रुचि हो। बस यहीं मामला खत्म हो जाता है।

यदि कुछ ऐसे व्यक्ति वास्तव में अस्तित्व में हैं, जो सचमुच ही युद्ध चाहते हैं,

ऐसे व्यक्ति अधिक नहीं हो सकते और ऐसे व्यक्ति संपूर्णतः संतुलित विचार के नहीं होते।

आपके मन का वैरभाव दूसरे लोगों के मन के वैरभाव को उकसाता है। यही संघर्ष का रूप ले लेता है, जहाँ कोई हल नहीं होता।

कभी-कभी ऐसा होता है कि, मतभेद इस हद तक पहुँचते हैं कि आप या तो उस देश से संबंध तोड़ लेते हैं या वहाँ एक संघर्ष का निर्माण हो जाता है।

युद्ध में कानून का अस्तित्व नहीं होता। युद्ध के समय कानून शायद ही सत्य तथा निष्पक्ष होता हो।

संघर्ष अनिष्ट हैं लेकिन किसी भी क़ीमत पर नहीं टाले जा सकते। कभी-कभी तो ऐसे टाले जाने वाले संघर्ष खुद ही अधिक महँगे तथा कष्टदायक होते हैं।

दुर्भाग्यवश अगर हालात अधिक खराब हों, तो हमें सशस्त्र मार्ग का सहारा लेना होगा। इसमें कोई गलती नहीं होनी चाहिए।

अगर बात बड़ी हो तो हम इतिहास के किनारे नहीं बैठ सकते। यह बात मेरी समझ में नहीं आती कि किसी बड़ी शक्ति और एक पिद्दी से देश में सैन्य संधि कैसे होती है। मेरे लिए फौजी अर्थ में यह बात निरर्थक है।

कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं जो युद्ध चाहते हैं, लेकिन कोई देश युद्ध नहीं चाहता। अगर ऐसा है तो कुछ संधि और युद्ध सामग्री की नीति की कीमत क्या रहेगी ?

आक्रमण चाहे बड़े देश पर हो चाहे छोटे देश पर, उसकी वजह से पूरे विश्व का संतुलन डाँवाडोल होने लगता है।

इसमें कोई संदेह नहीं कि अनेक बातों में परिवर्तन आना चाहिए किंतु हमें यह कभी नहीं सोचना चाहिए कि यह परिवर्तन युद्ध से होगा। आप युद्ध के द्वारा जो करना चाहते हैं वह कभी नहीं होता बल्कि युद्ध से हानि ही होती है।

अगर आप हाथ में तलवार लेंगे, तो दूसरे भी वही करेंगे। यह बात कोई भी नहीं जानता कि अंत में किसकी तलवार सबसे अधिक तेज़ सिद्ध होगी। अगर किसी ने हाथ में तलवार पकड़ ली तो उसे किसी दूसरे की तलवार का सामना तो अवश्य करना होगा।

तलवारों का यह संघर्ष निष्फल हिंसाचार ही पैदा करता है।

जहाँ स्वाधीनता को धमकाया जाता है, न्याय को डराया जाता है, या आक्रमण होता है, वहाँ न हम तटस्थ रह सकते हैं न रह सकेंगे।

अगर कोई देश इतना मूर्ख हो कि वह स्वयं को युद्ध में झोंक दे, तो आप युद्ध से भाग नहीं सकते। आपको अपनी सर्वशक्ति लगाकर लड़ना होगा और उसे

अन्त तक ले जाना होगा।

हम एक विरोधाभासयुक्त युग में रहते हैं। हम बातें तो शांति की करते हैं लेकिन युद्ध की तैयारी में लगे रहते हैं।

गुट निरपेक्षिता

गुट निरपेक्षिता का अर्थ मन की निष्क्रियता या निश्चित मत का अभाव नहीं है। जिसे हम दुष्ट प्रवृत्ति कहते हैं उसके सामने आत्मसमर्पण करना भी इसका अर्थ नहीं है। हमारे सामने आने वाली समस्याओं को हल करने के लिए यह एक ठोस तथा ज़बरदस्त प्रभावशाली मार्ग है। हमारा विश्वास है कि प्रत्येक देश को न केवल स्वतंत्रता का अधिकार है, बल्कि अपनी नीति तथा जीवन यापन करने का मार्ग निश्चित करने का भी अधिकार है।

किन्तु किसी एक शक्ति के गुट में अपने आपको शामिल करवाने का अर्थ है अपने विचार और अपनी नीति को इसलिए छोड़ देना क्योंकि कोई और चाहता है कि उसकी नीति अपनाई जाए।

वैदेशिक संबंध

जब तक भारत अपनी आर्थिक नीति विकसित नहीं करता तब तक मेरे विचार में वह अपनी वैदेशिक नीति के मार्ग को मंद गति के साथ अंधेरे में ही टटोलता रहेगा। या तो हममें इतनी शक्ति होनी चाहिए जिससे हमारा दूसरों पर कुछ प्रभाव पड़ सके या हमें किसी के मामले में दखलअन्दाजी नहीं करनी चाहिए। हर अंतरराष्ट्रीय मामले में अपना हाथ डालने के लिए मैं उत्सुक नहीं हूँ।

अपने आपको पूरी तरह अलग रखने का अर्थ है मौत और देश का सर्वनाश। प्रत्येक महान् राष्ट्र के लिए चाहे वह कितना भी बड़ा क्यों न हो एकाकी रहने का अर्थ है संपूर्ण दुनिया से संबंध तोड़ना। दूसरे शब्दों में जहाँ सारी दुनिया प्रगति पथ

पर अपनी उन्नति कर रही हो वहाँ पीछे रह जाना।

हम अपना सर्वसामान्य मत प्रकट कर सकते हैं कि हमें कहाँ जाना है और कैसे जाना है।

किसी एक देश के लिए अपनी नीति निश्चित रूप में बनाने से कुछ कठिनाइयाँ पैदा हो सकती हैं।

सदिच्छा कहीं से भी हो, हमारे लिये मूल्यवान है।

हमें हमेशा बाह्य शत्रु अथवा अपनी किसी अन्दरूनी कमजोरी के संबंध में सतर्क रहना चाहिए।

हम अपने अंतरराष्ट्रीय संबंधों का विस्तार कर सकते हैं। हम नये-नये मित्र बना सकते हैं। हाँ यह हमेशा ध्यान में रखना चाहिए कि हम अपने पुराने मित्रों को न भूलें।

हम अन्य राष्ट्रों की स्वाधीनता में दखलअन्दाजी करना नहीं चाहते और हमें यह अपेक्षित है कि दूसरे भी हमारी स्वाधीनता के बारे में यही भावना रखें।

पड़ोसी देशों के साथ संबंध

किसी के दिल को चोट पहुँचाना या किसी से झगड़ा मोल लेना यह हमारा उद्देश्य नहीं है।

मेरी अपने पड़ोसियों के प्रति सहिष्णुता तथा उनकी मेरे प्रति सहिष्णुता का प्रश्न तभी उठता है जब हममें मतभेद हों।

एशिया और अफ्रीका में जीहजूरी नहीं

एशिया तथा अफ्रीका में जीहजूरी नहीं चलेगी। यह सब काफी हो चुका है। हम महान् राष्ट्रों की मित्रता की कद्र करते हैं किंतु हम उनके साथ केवल भाई की तरह या बराबरी से बैठ सकते हैं।

कान्फ्रेन्सों की उपयोगिता

कोई भी कान्फ्रेंस हमेशा या लगभग हमेशा अच्छी बात होती है। क्योंकि जो भी हो लोग एक मेज के चारों ओर एकत्रित होकर किसी विषय पर बातचीत करते हैं और यद्यपि वे हमेशा ही समस्या का हल ढूँढ़ने में कामयाब नहीं हो पाते फिर भी प्रयास करना ही खुद एक महत्वपूर्ण बात है।

भविष्य की आशा

मैं न केवल युद्ध का बल्कि दूसरे संकटों का भी उल्लेख कर रहा हूँ। वे हैं– विद्वेष, कड़वाहट और संघर्ष। मेरे ख्याल से वे प्रत्यक्ष युद्ध से कहीं ज़्यादा भयानक होते हैं। यह इसलिए कि उनकी वज़ह से मनुष्य का अधः पतन होता है। वे हमें निराशा की गहरी खाई में ढकेलते हैं। हमें अधिक संकुचित बनाते हैं। मेरा मूलभूत विश्वास है कि जिस तरह विज्ञान में प्रत्येक कारण का अपना परिणाम होता है– उसी तरह मानवी संबंध में – चाहे वह राष्ट्रीय अथवा अंतरराष्ट्रीय क्यों न हो – हमारी हर क्रिया, हर विचार का एक परिणाम होता है। चाहे वह कोई छोटी सी बात हो, किन्तु चाहे हमारा उद्देश्य कुछ भी हो, यदि हमारी क्रिया या विचार असत् प्रवृत्ति के हों तो उनका परिणाम भी दुष्ट प्रवृत्ति का निकलता है।

मौत के सौदागर

अब शांति दूर जाता एक धुंधला सा सपना नज़र आती है और मानव जाति स्पष्टतः सर्वनाश की ओर जाती हुई नज़र आ रही है क्योंकि अणु बम विश्व का विस्फोट करने के लिए आ गया है। फिर भी ऐसा एक भी बम नहीं है जिसने हमारे

राजनीतिज्ञ तथा समाज के कर्णधारों के दिलो-दिमाग को स्पर्श किया हो। वे अपनी पुरानी घिसीपिटी सीढ़ियों से बाहर निकल ही नहीं सकते। वे अब भी अपनी पुरानी दुनिया को बचाकर रखना चाहते हैं। हमने अपनी स्वाधीनता तथा आनेवाले नये विश्व के बारे में बहुत कुछ सुना है परन्तु मनुष्य जाति को केवल एक ही स्वाधीनता मिलने की संभावना है– वह है मौत और टुकड़े-टुकड़े हो जाने की। किस लिए यह सब हो रहा है? लोकतांत्रिक पद्धति, स्वतंत्रता और चार प्रकार की स्वाधीनता की रक्षा करने के लिए....

यह कोई नहीं बतला सकता कि आनेवाले समय में क्या पागलपन और मौत ही मानव की नियति है या इससे कुछ बेहतर है। लेकिन यह निश्चित है कि अणु बम का रास्ता शांति और स्वाधीनता का मार्ग नहीं है।

संयुक्त राष्ट्र संघ

संयुक्त राष्ट्र संघ हमारी आशाओं का, हमारी उम्मीदों का प्रमुख भंडार है क्योंकि सुरक्षा तथा लोक कल्याणार्थ यह अधिक परिणामकारक तथा आपसी अंतरराष्ट्रीय सहयोग का संगठन है। इसने अपने आपको शांति, स्वाधीनता तथा न्याय के लिए समर्पित किया है। संपूर्ण मानव जाति की उत्कट आकांक्षाओं को मूर्त रूप देने वाले उदात्त आदर्श लेकर संयुक्त राष्ट्र संघ हमारे सामने अवतीर्ण हुआ है। यह हमें इस तनाव तथा भावपूर्ण झगड़े-फसादों से ग्रस्त दुनिया से दूर ले जाने में यशस्वी होगा और हमें एक अधिक सुस्थिर भविष्य की ओर ले जाने में कामयाब होगा। उस भविष्य की ओर जिस में विज्ञान की तथा शिल्प विद्या की सारी शक्ति संपूर्ण मानव जाति के कल्याणार्थ लगाई जा सकेगी।

विश्व शांति

हमें उन्नति तथा विकास के लिए न केवल भारत में शांति की आवश्यकता है अपितु संपूर्ण विश्व के लिए शांति एक अत्यावश्यक तथा महत्वपूर्ण बात है। इस शांति की रक्षा कैसे की जाय? हमलावर के सामने आत्मसमर्पण करके नहीं, न ही दुष्प्रवृत्ति, अन्यायी, दुराचारी तत्वों से समझौता करके। युद्ध की तैयारी करके भी नहीं। आक्रमणों को रोकना चाहिए, क्योंकि वह शांति को संकट में डालते हैं।

निःशस्त्रीकरण

यदि भय को दूर करना है और शांति को आश्वस्त करना है, तो निःशस्त्रीकरण आवश्यक है।

सह अस्तित्व अथवा सह सर्वनाश

सह-अस्तित्व का केवल एक ही विकल्प है – वह है सह-सर्वनाश।

मेरा जीवन-दर्शन

जीवन की समस्याओं की ओर देखने का मेरा दृष्टिकोण पहले से ही आम तौर पर वैज्ञानिक था। उसमें उन्नीसवीं सदी का तथा बीसवीं सदी के प्रारंभ काल के विज्ञान का कुछ सरल सुबोध आशावाद था। मेरे सुरक्षित तथा आरामदायी जीवन

तथा जो उत्साह और आत्मविश्वास मुझ में था, इन सब ने इस आशावादी भावना को बढ़ावा दिया। एक प्रकार का मानववाद मुझे पसंद था।

धर्म का, चाहे वह हिंदू धर्म हो या मुस्लिम, बौद्ध धर्म हो या ईसाई, जिस प्रकार से पालन किया जा रहा था, बड़े-बड़े विचारवानों ने भी उसे जिस प्रकार से स्वीकार किया था, उस धर्म का मुझे तो कोई आकर्षण नहीं था। धर्म का संबंध भ्रामक कल्पनाओं तथा दुराग्रही अंध विश्वासों के साथ जोड़ा गया था, उसमें जीवन की समस्याओं को हल करने का जो तरीका बताया गया था वह तो निश्चित ही वैज्ञानिक ढंग का नहीं था। उसके चारों ओर जादुई चमत्कार का इन्द्रजाल बिछाया गया था और थी तर्क विहीन अंधश्रद्धा।

बुनियादी बात यह है कि मेरी रुचि इसी दुनिया में, इसी ज़ीवन में है न कि किसी और दुनिया में या किसी और जीवन के बाद के जीवन में। मैं नहीं जानता कि आत्मा नाम की कोई चीज अस्तित्व में है या नहीं या मृत्यु के बाद जीवन का कोई अस्तित्व है या नहीं। ये प्रश्न महत्वपूर्ण होंगे परन्तु मेरी इनमें कोई रुचि नहीं। जिस माहौल में मेरी परवरिश हुई वहाँ आत्मा और परलोक, कर्म का सिद्धान्त, पुनर्जन्म इत्यादि में मान्यता चली आ रही थी। मुझ पर इन बातों का असर होना स्वाभाविक था और मेरा मन इन कल्पनाओं के प्रति आकर्षित भी रहा है। हो सकता है, शरीर की मृत्यु के पश्चात् आत्मा नामक कोई चीज अस्तित्व में रहती हो, कर्म का सिद्धान्त जीवन को नियंत्रित करता हो। फिर भी मनुष्य जब चरम शक्ति के संबंध में विचार करता है, तो इस सिद्धान्त के कारण कुछ स्पष्ट कठिनाइयाँ नज़र आती हैं। आत्मा को मानते हुए पुनर्जन्म का सिद्धान्त भी तर्कसंगत लगता है।

किन्तु धार्मिक श्रद्धा के रूप में मैं इनमें से एक भी सिद्धान्त और कल्पना पर विश्वास नहीं करता। ये कल्पनाएँ केवल किसी अज्ञात प्रदेश-- जिसके बारे में हम कुछ नहीं जानते-- के संबंध में विचारणीय बुद्धिवादी अनुमान मात्र हैं। उनका मेरे जीवन पर रत्तीभर भी प्रभाव नहीं पड़ता और बाद में वे सही या गलत सिद्ध भी क्यों न हों – उनसे मुझे कोई अंतर नहीं पड़ता।

मेरे लिए असली समस्याएँ हैं व्यक्ति और सामाजिक जीवन की समस्याएँ। ये समस्याएँ हैं– संतुलित शांत जीवन, व्यक्ति के अन्तर्वाहिय जीवन में एक उचित संतुलन, समूह और व्यक्ति के संबंधों में सामंजस्य और कुछ अधिक अच्छे तथा उच्च बनने की इच्छा। सामाजिक विकास की तथा मानव के अखंड साहसी कारनामों की समस्याओं का समाधान करने के लिए आवश्यक है निरीक्षण

पद्धति, असंदिग्ध ज्ञान, विचारपूर्ण तर्क पद्धति, वैज्ञानिक पद्धति के अनुसरण की। हो सकता है यह पद्धति सत्य की खोज में हमेशा लागू ना हो सके क्योंकि लगता है, कला, काव्य और कुछ मानसिक अनुभव कुछ भिन्न पद्धति की बातें हैं। विज्ञान की वस्तु निष्ठ पद्धति से बाहर जो भी हो, एक जीवित दर्शन को जवाब देना है आज के सवालों का, आज की समस्याओं के समाधान का।

फिर भी मुझे विश्वास है कि इतिहास की लम्बी विशाल यात्रा में वैज्ञानिक पद्धति तथा वैज्ञानिक मार्ग द्वारा किसी अन्य मार्ग की अपेक्षा मानवी जीवन में अधिक क्रांति लाई गई है। वैज्ञानिक पद्धति ने अनेक प्रवेश द्वार खोले हैं और वह अधिक मूलभूत परिवर्तन ले कर आई है जिससे प्राचीन काल में जिसे अज्ञात समझा जाता था, उसके प्रवेश द्वार तक हम आ गए हैं।

भविष्य अनिश्चित अंधकारमय है, लेकिन हमें उसकी ओर जाने वाले मार्ग का कुछ हिस्सा नज़र आ रहा है और हम मज़बूत कदमों के साथ उस मार्ग पर चल सकते हैं। उस मार्ग का अनुसरण करते समय हमें इस बात को गांठ में बांधना होगा कि मनुष्य की आत्मा, जो इतने संकटों का मुकाबला करके अडिग खड़ी है, किसी भी हालत में पराजित नहीं हो सकती। हमें यह भी याद रखना चाहिए कि जिन्दगी, सब बुराइयों के होते हुए भी, हर्ष और सौंदर्य से भरी है और हम हमेशा प्रकृति के जादू भरे जंगलों में घूम सकते हैं। हाँ इस जादू भरी प्रकृति में घूमने का तौर तरीका आना चाहिए।

व्यक्ति और भाग्य की तरंग

हर व्यक्ति अपने से ऊपर उठने की क्षमता रखता है। अगर वह चाहे तो वह स्वर्ग एवं नरक की हवाओं के झोंकों को चार दीवारों से बाँध सकता है। ऐसा करने से वह भाग्य को प्रभावित कर सकता है, उसे मोड़ सकता है।

महानता

महानता दृष्टि, सहिष्णुता, करुणा और सुख-दुख में समभाव बनाए रखने वाली मनःस्थिति से उपजती है।

सफलता के लिए चरित्र की अपेक्षा होती है

सफलता के लिए अपेक्षित है चरित्र, अनुशासन, संगठित प्रयत्न और महत उद्देश्य हेतु आत्मोत्सर्ग।

साहस और स्वाभिमान

केवल एक चीज़ हमसे कोई नहीं छीन सकता और वह है साहस और स्वाभिमान के साथ आचरण करना, इज्जत के साथ रहना और उन आदर्शों को आत्मसात करना जो हमारा जीवन सार्थक बनाते हैं।

सुख

सुख मन की एक अन्तःस्थिति है।

यहाँ आलसियों का क्या काम

जहन्नुम में जाएँ वे लोग जो तेज़ नहीं चल सकते। अच्छा हो वे अपने आप ही अलग हो जायें। हमें आलसी. सुस्त, कामचोर लोगों की ज़रूरत नहीं है। मुझे चाहिए काम और काम और काम ....

साहसी बनो

शूर, साहसी बनो ... फिर देखो आगे आगे होता है क्या।

एक महान् उद्देश्य के साथ गठबंधन

किसी महान उद्देश्य के साथ गठबंधन करना ही जीवन का सच्चा आनंद है। उस उद्देश्य की पूर्ति के लिए अपने आपको, अपने तुच्छ जीवन को भूलकर, उद्देश्य से मन लगाने में ही सच्चा सुख है।

हर दिन नया दिन

हमारे लिए हर दिन, हर पल एक नया प्रारंभ है।

भारतीय युवकों की भूमिका

यदि आप वर्तमान स्थिति से असंतुष्ट नहीं हैं, अगर आप में मन को बेचैन करनेवाली, अस्थिर करने वाली बलवती चाह नहीं है तो फिर आप में और उन बूढ़ों में अंतर ही क्या है जो केवल बातें बनाते हैं। यह उनके लिए नहीं जो सतत सुरक्षा की खोज में रहते हैं और एक भगवान की स्थापना करते हैं। यह उनके लिए भी नहीं जो योग्यता अयोग्यता, उचित अनुचित का विचार करके उन्नति करते हैं। अपने हिस्से से अधिक ऐहिक ऐश्वर्य जिन्हें प्राप्त हुआ है, ऐसे ख़ुशनसीब, चमकदमक वाले लोग भी सुधार कार्य की ओर नहीं आते। दुनिया में परिवर्तन तथा उन्नति वे लोग लाते हैं जो असंतुष्ट होते हैं और जो अत्याचार तथा अन्याय सहन करने से इन्कार करते हैं।

इसीलिए जहाँ तक संभव हो मैं अपनी विचारधारा को सुस्पष्ट तथा दिमाग़ को उलझनों से मुक्त रखना चाहता हूँ। मेरी इच्छा है आप भी ऐसा ही कीजिए। हमारा साध्य क्या हो और हम किस तरह उसे साध सकते हैं इस विषय में जब तक हमारी विचारधारा सुस्पष्ट नहीं होगी तब तक आजकल के राजनीतिक नारों का चर्बण करने से कुछ भी हाथ नहीं लगेगा।

मेरी दिलचस्पी इसी बात में है कि आपमें दुनिया की वर्तमान स्थिति को परखने की सामर्थ्य, उसे सुधारने की उत्कट इच्छा तथा इस सुधार के लिए क्या करना चाहिए, कौन सा मार्ग अपनाना चाहिए, इस बात की पूछताछ करने की प्रवृत्ति भी हो। जो मैं कहता हूँ अगर आप उसे गलत समझते हैं तो उसे अस्वीकार कर दीजिए। साथ ही उन सारी बातों को भी अस्वीकार कर दीजिए जिन्हें आप का विवेक गलत मानता हो भले ही उन्हें परंपरा से पवित्र माना गया हो, या उन्हें धार्मिक स्वीकृति मिली हो। क्योंकि चीनी कथन के अनुसार "धर्म अनेक हैं किन्तु सत्य एक है।"

यह कैसे हो सकता है कि, ब्रह्मा ने स्वयं विश्व की रचना की और उसे दयनीय बना दिया? अगर वह सर्वशक्तिमान है फिर भी ऐसा करता है तो वह अच्छा नहीं है। और यदि वह सर्वशक्तिमान नहीं है, तो वह भगवान नहीं है।

भारत में सबसे अधिक विस्मयकारी और भयंकर चीज़ है उसकी ग़रीबी। यह कोई दैवी विधान नहीं, न ही समाज की अपरिहार्य स्थिति है। अगर विदेशी सरकार और स्वयं भारत की अपनी कुछ संतानें सारी अच्छी चीज़ें हड़प न लेतीं

...नों समस्त संतान

... ...ुछ है या हो सकता है। रस्किन का कहना है, "ग़रीबी ग़रीब की सहजहीनता के कारण या ईश्वर के अतर्क्य गूढ़ कानूनों के कारण अथवा शराब के कारण नहीं आती, वह आती है जब दूसरे लोग उनकी जेबें काट लेते हैं।" सम्पत्ति पर कुछ विशिष्ट लोगों के नियंत्रण का अर्थ अधिकांश लोगों की असंतुष्टि तक ही सीमित नहीं। वह मनुष्य के मन पर अपनी शक्ति का ऐसा प्रयोग करता है कि उनके मन में स्वाधीनता की इच्छा ही नहीं जागती। यही मानसिक दृष्टिकोण निर्धनों को शक्तिहीन करता है। पराजय की भावना की इस प्रवृत्ति के विरुद्ध हमें लड़ना है।

ज़रा नीचे गहराई तक नज़र डालिए, लाखों लोग खेतों या कारखानों में अथक परिश्रम कर रहे हैं। भारत की सरहदों के पार भी एक नज़र डालिए– जहाँ आपके जैसे ही लोग आपकी तरह की समस्याओं का सामना कर रहे हैं। आप की प्राचीन मातृभूमि की संतानें उसकी स्वाधीनता के लिए खून बहा रही हैं। अंतरराष्ट्रीय दृष्टिकोण अपनाइए, राष्ट्रीयता से मुक्त, सीमाहीन और सरहदों से परे अंतरराष्ट्रीय युवा गणतंत्र के सभासद बनिए, जो विश्व को अन्याय तथा गुलामी से मुक्त करने के लिए जमीन आसमान एक कर रहा है।

हममें से कोई मृत्यु को टाल नहीं सकता किंतु कम से कम युवकों को उसका विचार नहीं करना चाहिए। वृद्ध उतनी ही अवधि के लिए काम करते हैं जितनी उनके लिए शेष है, किंतु युवक शाश्वत काल के लिए काम करते हैं। उनका कार्य सनातन है।

भारत और उसके लोग

यदि भारत की मृत्यु हो गई, तो कौन जीवित रहेगा? यदि भारत जीवित रहा तो कौन मरेगा?

102 : EDUCATION & SOCIALISATION

OF THE GIRL CHILD

Course Number	.	102
Course Title	:	Education of the Girl Child
Course Credits	:	2
Contact Hours	:	20
Course Coordinators	:	Sandhya Paranjpe/Ila Verma
Associate Faculty	:	Usha Nayar C.J. Daswani Adarsh Sharma Neelam Sood Manjula Chakravarty K.G. Virmani

Rationale

India's child population constitutes 42% of the total population. For the success of any development strategy for the empowerment of women, special focus would be necessary on the child population with particular reference to the 'girl' child.

The life cycle of continuous deprivation and discrimination of the girl child has led to her low self image, lack of leadership and decision-making qualities and particularly complacent personality. All efforts to improve and raise the status of the girl child would fail. Unless a proper understanding &

insight into the problems associated with socialisation and child rearing practices are achieved.

Data collected & analysed against the background of demography, health nutrition, education and socio-economic indicators would serve as a sound date base and provide relevant information for formulation & implementation of action based programme, through which would emerge the barriers and gaps for interventional strategies.

Part I of the course content deals with the situational analysis of the girl child in India.

Part II deals with the holistic development of the child which is a very essential towards the development of proper adult roles and her empowerment.

Objectives

i) To raise the health, nutritional, educational status of the girl child by identifying barriers and gaps and proposing positive intervention strategies.

ii) To study the socialisation and child rearing practices and its effect on the development of the self concept and other personality dimensions.

Lecture Themes: Education of the Girl Child

Part A: Situational Analysis:

102.1 The lesser child - Life Cycle of Deprivation

102.2 Role of Diagnosis - Education

102.3 Health and Nutrition of the girl child - Needs assessment

102.4 Socialisation and child rearing practices; Gender roles and identify formation

102.5 Early childhood - Care and education of the girl child

102.6 Universalisation of Elementary Education - A development programme for girls (formal/NFE)

102.7 Access to diversified secondary and higher education

Part B: Towards Holistic Development:

102.8 Formation of positive self-concept and self-image

102.9 Leadership & Decision-making

102.10 Communication skills

102.1 Lesser Child Life Cycle of Deprivation

Low health status, low life expectancy high mortality, morbidity and mass illiteracy continue to be the lot of girls and women-son preference usually common among Hindus - discrimination of the girl child leading to various undesirable practices in feeding, caring, rearing and socialisation. She is deprived at every stage of her life. At birth she is unwelcome and dies of neglect if she survives she is weaned, no feeding substitutes are provided, poor care leads to lowered immunity, growth retardation etc. As she grows up she is socialised into the ordained role of mother, deprived of leisure & education and with a low self image. She is usually married off before the onset of menarche. This has serious implications, longer fertility period greater number of low birth weight childrenleading to maternal depletion.

102.2 Role of Diagnosis - Education

- Role of Educational Planners - Collection of information regarding school system, allocation of resources, pedagogical materials - other teaching aids.
- Continual decision making, prioritization of goals and selecting correct delivery system.

- Educational administration - They provide the interface between the policy makers, public and the school system.
- Definition of diagnosis
- Education and sub system - family, culture, economy and polity.
- Diagnosis through analysis and identifying problem areas
- Assessment of Educational Reforms
- Areas of diagnosis - Intra-educational, extra-educational through the us of Indicators which are signpost giving general direction
- What are indicators

102.3 Health and Nutrition of the Girl Child - A Needs Assessment

- Low health and malnutrition
- Nutritional disorders and diseases - Kwashikor and marasmus
- Sharing of Nutritional Resources within the family
- Special needs of infants, toddlers and girl child
- Relationship of nutrition on the health and growth of the girl
- additional requirement at adolescent period, catering to the 'growth spurt'.

- Causes for low health and malnutrition, socialisation, low status of the girl child
- Effect of Prematernal Malnutrition
- Prematal nutrition
- Diseases related to water and air borne
- Health facilities available and their access to girls/women Hospital care not same proportion, six times more for boys.
- Poor sanitation, rural water supply, lack of potable water
- births unattended by trained medical facilities.

102.4 Socialisation and Child Rearing Practices

Socialisation prepares the child for the future-molds him to acquire skills, transfer values to him for future roles

Childhood training and child rearing are influenced by the cultural characteristics of a specific culture.

- Culture influences feeding, weaning and bringing up practices - girls grow up submissive, lack confidence, decision making skills with a low self concept - because of the weak role models and socialization - school and society further reinforce the low self image and the expected role models.

- Through socialization a child learns his/her own identity. The family is the first unit and primary agency for socialization. Ours, which is an inherited society has certain distinct features like aggrarian heirarchal, patriarchal, caste and class systems
- Prompts relational dependency amongst girls
- Preparation for present society would depend largely on new socialization practices through home, school, peer groups and society at large. A conscious effort to resocialise in the right direction would be needed for the empowerment of girls/women, redefinition of values and desired attributes.

102.5 Early Childhood Care and Education

- The objective of ECCE as stated in the NPE 1986 is the total development of the young child in the age group 0-6, with emphasis on underprivilleged and first generation learners.
- Preparation of children for primary school
- Support service for girls in UPE
- Sup ort service for working in low income groups
- Strategies (a) Development of structure (b) approaches
- Models to describe structural and organisational a proach

- Training of personnel - training curriculum - training design - training levels - training institutions - training cells
- Resource Centres, setting up at state levels, functions to be outlined
- Planning of equipment/materials/Media

102.6 Universalisation of Elementary Education (Formal)

- Constitutional provision free and compulsory education to all children upto the age of 14 yrs - implemented on 30th September, 1978
- Slow progress, various factors responsible - sociological, economic, psychological.
- a) Provision of schooling facilities
  b) Universalisation of enrolment
  c) Universalisation of retention in schools
  d) Wastage and stagnation
- Elementary level curriculum has hardly any relevance to children's needs and problems
- Teachers indifference and inefficiency, lack of girls, and women teachers hinder the access of girls
- Steps to achieve the targets of universalisation programmes through:

a) Financial allocation to reach difficult areas of the country

b) Separate schools for girls with women teachers

c) Provision of creches & Balwadis

d) Incentives like free books, uniforms, mid-day meals

e) Eliminate retention upto grade VIII

Non-formal

- Non-formal system of education for those out of school
- Short term courses with constant guidance
- Suitable time/place with a meaningful curriculum
- Facilitate admission through multiple point entry system
- Need based curricula
- meant specially for 9-14 age group
- A well organised purposeful programme of education based on learners need interest
- Instructional based on learners needs/interest
- Instructional material is important as it is to suit a variety of learners

102.7 Access to diversified Secondary Education

- Secondary and diversified education largely an urban, middle class phenomena
- Historical aspect - Vedics - Buddhist, 18th and 19th century - (Tols, Patashalas, Maktabs and Madrassahs)
- Beginning of modern Education - passing of East India Company Act 1813 - missionary activities
- Education largely seen for improving quality of family life, traditional roles and no wider social context
- Early twentieth century education of women developed faster, enrolments increased. However, even today women form less than quarter of the total enrolment.
- Fewer girls opt for courses in technical and professional education, most opting for humanities and homescience sex stereotyped curricula Inter-state variations
- Position of girls is worse in vocational, professional and special education schools at school level
- Education of girls does not equip them for anything except for low white collar jobs - limited social roles.
- Analysis of occupational structure - extensions of their female

- Strategies to be adopted to increase access of girls to diversified secondary education
- Need to sensitize educational policy-makers, planners and administrators to the need for equity and equality between sexes
- Strong career counselling cells/Units to effective participation of girls in professional courses
- Vocational, professional and technical colleges to be increased with more non-tradional courses.

102.8 Formation of a Positive Self-concept and Self Image

- why is holistic development needed in the girl/women
- This depends on the total all round development of the personality
- Relevance of certain personality characteristics in empowerment of womenlike - a positive self concept or self image, leadership, decision making and effective communication skills
- definition of the self-concept
- Distinguish between self-concept and self-esteem
- The evolvement and growth of the self-concept through role relationships at the various stages of development.

- primary need of the organism is to maintain enhance the ego, what happens when societal forces negate this
- the factors responsible for the negation of the positive self-image or concept
- interventions and strategies to evolve a positive self-concept.

102.9 Leadership and Decision-making

- discuss the various leadership and decision-making styles.
- the pitfalls made by decision-makers
- the usefulness of participative decision making, the inculcation of this from childhood.
- the development of these two personality traits as against the traditional role model of an Indian women.
- the need to develop both leadership and decision making in Indian women.
- methods of developing these qualities through the family/school and community.

102.10 Communication skills

- communication & science to be learnt and improved - dynamic process - purposive - to bring a commonness of purpose and achieve simple-complex.
- expression of thoughts and ideas, intentions, opinions, desire to others using a wide variety of means through print, graphs and pictorials, facial expression, bodily movements, gestures and actions.
- Need to know - who, why, what, where and how.
- Major functions - information, command, influence, integrative, feed back.
- Directional flow - downward, upward, horizontal, uni-channel/multichannel.
- Process - sender - message - receiver
- Transmission through different media and dimensions

103 : ELIMINATION OF SEXIST BIAS FROM CURRICULUM & EDUCATION PROGRAMMES

Course Number	:	103
Course Title	:	Elimination of Sex Bias from Curriculum and Educational Programmes
Course Credits	:	2
Contact Hours	:	20
Course Coordinators	:	Sandhya Paranjpe/Indira Kulshreshtha
Associate Faculty	:	Usha Nayar Vibha Parthasarthi S. Mulay M. Chandra Surja Kumari G.L. Arora A.K. Mishra Satya Bhushan

Rationale

Education plays a powerful role in perpetuating the sexist bias if no planned intervention is made to negate this and turn it into a vehicle of positive reinforcement of sex equality. An analysis of existing sexist biases in the curriculum and educational programmes shows lower access in physical terms, exclusion from technical and vocational subjects, as also from important areas of physical development. Further, there is also a low participation in social processes and no conscious efforts has been made to give training to females in order that they are on an equal footing with males.

The present course analysis the national curricular framework in relation to all its elements, more particularly to the core value of equality between sexes which is constitutional right and has received major attention in the National Policy on Education 1986.

The NPE specifically advocates implementation of undifferentiated curricula, elimination of sexist bias from the curriculum, text books and educational programmes. It makes a strong case for sensitisation of policy makers planners administrators, teachers, curriculum developers, text book writers and the larger community. An attempt is made to propose a positive interventionist strategy in the from of a strong school based programme for promoting equality between sexes and eliminating the various biases operating in the community.

Objectives:-

i) Generate awareness about how sexist bias operate at all levels in the educational system as well as in curriculum development, transaction and educational programmes.

ii) removal of sexist bias from the content process and transaction of all types of educational programmes

iii) to propose an institutional based intervention programmes (NPE 1986 National Curriculum framework.).

Lecture Themes:-

102.1 Curriculum for Human Development -

102.2 Curriculum and the Gender Question -

102.3 Elimination of sexist bias from text Books

102.4 School as an agent of change and Intervention .

102.5 The Role of the Teacher-

102.6 Role of Educational Planners and Administrators

103.3 Curriculum and the Gender Question

- curriculum as a means of social control and social change.
- specific aims/ purposes of curriculum.
  - i) integration
  - ii) personality formation
  - iii) all round development of the child
  - iv) national/society's development
  - v) State/ r specific aims,
- historical antecedents of the development of the present curriculum pattern.

i) British policy- selective differentiated curriculum leading to segmentation of the society.
Based on the Victorial Model.

ii) differentiation began with the post independence period.

iii) No difference in boys and girls except for the stress on the Home science syndrome.

iv) trace the impact of the various commisions to the present NPE 1986, with reference to and reports -Hansa Mehta Kothari
Ishwar Bhai Patel

v) to eliminate any curriculum differentiation focus should be laid on curriculum transaction, through inputs into teacher, in service and pre- service.

103.5 The Role of the Teacher

- the teacher forms the 'nucleus' of any education delivery system.

-* the role of the teacher is multi faceted. In the teacher student relationship the two broad areas of functioning are-

.i) implementation of curriculum.

ii) total all round development of the child.

i) effective implementation of the curriculum can be done by -

a. selection of relevant useful content material.

b. selection of effective teaching -learning Strategies.

c. analysis and interpretation of curricular elements.

d. formulation of effective teaching aids.

e. non discriminatory curriculum transaction and classroom management.

ii total all round development of the student

a. effective use of activities for the total development of the child.

b. inculcation of correct intellectual, physical social emotional and moral development of character.

c. promotion of scientific temper and spirit of enquiry creative self expression and aesthetic sense among students.

d. develop in the students respect for manual work and workers.

E. enable the students to appreciate our rich cultural heritage love for the mother land and universal brotherhood.

f. promote discipline and individual thinking.

* different types of interaction r.

teacher-parent

teacher- management

teacher - community

Teacher - student.

103.6 <u>Role of Educational Planners and Administrators</u>

- crucial role of educational planners and administrators in formulation and implementation of schemes and activities for achieving UEE and other objectives.
- Educational planners and administrators must plan according to :-
  - i) National goals and objectives (refer to NEP 1986 & POA)
  - ii) Specific goals and objectives of the institution or organisation based on its own problems needs and aims.
- decentralization of educational planning and management at the institutional level, permitting active participation of all levels of educational functionaries.
- Areas of planning
  - i) Faculty improvement
  - ii) infrastructural facilities (hostel, building etc

- all this can be achieved through talks, groups discussions, video shows projects work and dramates.

3. <u>Social Sciences</u>

- Awareness of a citizen's rights, duties, roles and abilities as depicted in the constitution
- to project women's role in the freedom movement
- stress on the legal rights of women.
- the role of the woman in the family and also the role of the other members. Family as a joint institution with equal sharing of roles & responsibilities
- Awareness of social evils through debates and other activities Dignity of labour, equality of opportunity in all walks of life must be stressed

4. <u>Fine Arts</u>

- all types of dances, music and art forms should be made available to both sexes and no gender dimention attached to any type of art form.
- Aesthetic realization and fulfilment should be the objectives -
- equal participation of art related activities by both sexes should be encouraged.
- Stereo types in the projection of an artists image should be avoided.

5. <u>Sciences</u>

- teaching of science should be made compulsory for every student irrespective
- Science education should be environment based.
- Scientific knowledge of human physiology is a must for all children.

LIST OF READINGS

1. National Curriculum for Elementary and Secondary Education: A Framework NCERT Publication

2. Status of Women through Curriculum Elementary Stage NCERT Publication - NCERT 1982

3. Kulshreshtha I. and Surja Kumari (Ed.) Women through Curriculum Secondary and Senior Secondary Stages - NCERT 1984

4. Kalia N.N. Sexism in Education : The Lies We Tell Our Children.

5. Kalia N.N. From Sexism to Equality

6. Kulshreshtha I. Undoing the Damage - NCERT 1989

7. Kulshreshtha I., Women's Studies in School Education; New Delhi, Sterling Publishers Pvt. Ltd., 1989

8. Kulshreshtha I., (Ed), Image of Women and Curriculum in English, New Delhi, NCERT, 1986.

104 : QUALITATIVE AND QUANTITATIVE
METHODS IN WOMEN'S STUDIES

Course Number	:	104
Course Title	:	Qualitative and Quantitative Methods in Women's Studies
Course Coordinator	:	Dr. K.C. Nautiyal
Course Credit	:	2
Contact Hours	:	Total 20 Theory 10 Practical 10
Associate Faculty	:	Dr. Usha Nayar Sh. S. Parthiban Dr. K. Premi

Rationale

Women's Studies is a new field with a very special goal of promoting gender equality, all round progress, development and peace in the society. This goal has emerged as an increasing concern towards mounting inequalities, discrimination and in human exploitation of women, marginalisation their status. In the past four decades there have been marked changes in the field of women's studies. It has shifted from very general discipline oriented, descriptive macro level studies in the late 19th century, to the current micro level indepth action oriented research. In this context the

significance of appropriate application of quantitative and qualitative method in Women's Studies for generative necessary data and information on the gender dimensions can hardly be over-emphasised. 'Information is power' and is needed for making an assessment of the present state, gaps and the magnitude of the task before us, diagonising the problems by bench mark surveys, marking projections and policy formulation, planning, implementation, monitoring and evaluation of specific programmes etc. The methodological thrust in women's studies are essentially oriented towards participatory and action research generating awareness against sexist approach and behaviour of the society and devising effective reformative actions for the betterment of women.

Lecture Themes

104.1	Methodology of Women's Studies
104.2	Data and Sources of Data
104.3	Development of Quantitative Indicators
104.4	Qualitative methods in Women's Studies
104.5	Analysis of Data-statistical methods
104.6	- do -
104.7	Indicators: Demographic & Educational indicators
104.8	Economic and Social Indicators
104.9	Presentation of Data
104.10	Data needs for monitoring and evaluation of educational programmes for women's equality.

Lectures Outline

104.1 Women's Studies: Some Methodological Issues: Historical Perspectives: Emerging Trends.

104.2 Data and sources, Primary data, Secondary data, Sources of data published and unpublished reports of Govt. & Non-governmental agencies at National, State, District and Block level as well as international level.

104.3 Quantitative indicators; indicators of input, Indicators of process s and indicators of output.

104.4 Qualitative methods in women's studies. Content Analysis, Case Studies, observations participatory modes of investigations.

104.5 & 104.6 Analysis of Data - Variables, attributes, parameters, indic tors. Coding, compilation, tabulation of data. Rounding of dat discrete and continuously. Ratios, rat and perc ntages, measurement of central tendencies, mean, mode, mideal, 104.6 measurement of dispersion con range, quartiles, percentile, mean deviation standarddevi tion, variance co-efficient of varieties, representative index and Lorenge curve, co-relation regression.

104.7 Demographic indicators - density of popul tion, decadal growth, decadal variation, urbanisation, sex ratio, crude birth rate, crude death rate, infant mortality rate, total maternal fatality rate, age distribution, expectation of life at birth, migration.

Child Woman Ratios

Mean Age at Marriage

Child Dependency Ratio

Education indicators - Literates, educational level, enrolment rates, school population ratio, pupil teacher ratio. Educational infra structural per pupil state expenditures, Direct Expenditure, indirect expenditure, opportunity costs, Private, costs, institutional costs, social costs, Dropouts stagnation and wastage, universal access, universal enrolment, universal retention. Indicators of input, process and output.

10.8 Economic indicators - workers, Main workers, marginal workers; work force participation rate, labour force, labour force participation rate, incidence of child labour, sectoral distribution of workers, incidence of wage diserminacion, contribution of females to economy women headed household conceptual and measurement problems. Social and Political indicators - Incidence of dowry death, incidence of rape, kidnapping, eve-teasing and other harassments.

Participation in Panchayats, Mahila Mandals, Legislative Assemblies, Zila Parishad, State Assemblies and National Parliament, Representation in other local bodies, various committees and commission at National and local level.

104.9 Presentation Data - Construction of graphs per piograms, charts, pie-diagrams and maps.

104.10 Trend Analysis - Linkages between various indicators, inter-relationship between economic, social demographic health and educational indicators. Data needs for monitoring and evaluation of educational programme for women's equality, data bank and selection of indicators.

Select Bibliography

- Croxten Cowden and Kiin (1982)
  Applied General Studies, Prentice Hall,
- Garret M.E., Statistics in Psychology and Educ tion
- Johnstone indicators of Educational System, Kogam page, 1981.
- Goode and Halt Indicators of Statistics
- UNESCO Statistical Year Book, 1986.
- Schmid Handbook of Graphic Presentation
  Ronald Press 1954.

105 : MOBILISATION OF WOMEN
AND COMMUNITY

Course Title : Mobilisation of Women and Community

Course Number : 105

Course Credit : 1

Number of Contact hours : 10

Course Incharge : Janak Duggal/Kiran Devendra

Associated Faculty : Satya Bhushan
Sarojini Bisaria
Madhu Kishwar
Usha Nayar
C.P. Sujaya
Usha Chatrath
Promila Menon

Rationale

It has been repeatedly emphasised in the NPE (1986) and the P.O.A. that the women may be empowered to raise their social status. The National Perspective Plan 1988 also perceives women as an important force and a vital agent of change in the nation building process. Hence it is necessary that they may be mobilised (collected and prepared) and motivated for action in such a direction t...

their potentialities are fully and properly utilised.

To facilitate the empowerment of women, it is very much desirable that the community wherein they are placed is equally mobilised to accept them not only as an agent of change but, also help them in unfolding their hidden personality traits by putting least resistance in the way of their empowerment and motivation for action. To obtain the maximum output in this process it is a must that the inculcated values in the women and the local community should not be at variance with each other. Hence both need to be mobilised equally and simultaneously.

For obtaining better results it is desirable that the psychological principle of participatory role approach for mobilising women and the community may be followed. The ultimate purpose is that women and the community should grow together through self efforts and mutual support. If it happens then outcomes will be long lasting and more satisfying for all concerned with the development processes for women.

Keeping the above points in view the course, 'Mobilisation of women and the Community' has been included in this training programme.

Objectives

Specific objectives for initiating the topics are to discuss the methodology to:

- Empower women in terms of the P.O.A. of the NPE (1986)
- Prepare them for action to facilitate the process of universalisation of elementary education and raising the status of girls and women in the community.
- Mobilise the community to accept the changed role and status of women and provide them co-operation and favourable environment to go ahead in the desired direction.

Scope.

To start with the training programme will be delimited to the following aspects:

1. Mobilisation of women and community in the rural areas
2. Mobilisation of women and community in the urban slums
3. The word women includes girls (in the age group 0 to 14 years). In this way the target group will be 0 to 35 years.

4. wom n will be mobilised for their personal and mutual development. The methodology which may motivate them to become educated, socially developed and economically self reliant in their personal and mutual efforts will be explored for adoption.

women will be mobilised to create congenial atmosphere at home and in the neighbourhood for proper social educational and economic development of their daughters and the girls in the neighbourhood.

In this way the women are to be mobilized for their own education and development as well as the education and development of their daughters by self help and mutual efforts.

The community will be mobilised to create facilities and positive environment for the empowerment and preparation for action for women in that area.

Lecture Themes

105.1 Mobilisation of women and community - Theoretical framework

105.2 Agencies working for the mobilisation of women and community and existing schemes and programmes for the empowerment of women.

105.3 Preparing women for social, economic & political action.

105.4 Community participation in planning programmes for mobilisation of women and community.

105.5 Case studies.

Development Perspective

105.1 Mobilisation of women and Community - Theoretical framework

- Importance of community participation in any programme
- Importance of community participation in the women's education, development and empowerment.
- Importance of the [illegible] of women in self and mutual educational, social and economic upliftment.

105.2 Agencies working for the Education and Empowerment of women in Rural Areas and Urban Slums and Existing Schemes and Programmes for the empowerment of women

105.2.1 Mahila Mandal.

- Aim of the formation of Mahila Mandal
- Structure and functioning of Mahila Mandals
- Problems faced by the Mahila Mandal, office bearers in expanding the movement
- Existing state government network of field staff for the Mahila Mandal

- Problems of the field staff in mobilising women for education and development
- Possible ways to solve these problems

105.2.2 Village Panchayat - Reservation of seats for women Panch - legal provision for contesting elections for village Panchayat by women but [illegible] - expected and performed roles of women Panches in the upliftment of women - possible ways to generate awareness in them about their rights and [illegible] them to take decisions.

105.2.3 Nehru Yuvak Kendra - Their aims and working methodology - problems faced and methods and processes adopted to overcome the same.

105.2.4 Agencies working for the upliftment of women in urban slums - Their aims and working methodology - problems faced and methods adopted to overcome the same.

105.2.5 Various governmental schemes and programmes for economic betterment of women e.g. craft training centres, small saving schemes, soft loans for generating self employment opportunities; technical guidance in running small production units etc.

105.2.6 Various government schemes for educational improvement of women - Aganwaries - non-formal centres for girls, adult literacy centres, public and mobile libraries, awareness programmes conducted by centreal and state Public Relation Departments.

105.2.7 Various governmental programmes initiated for social upliftment and giving emotional supports women e.g. from legal advice, family, courts, provision of homes where married women can stay with their children in the case any discord or disharmony at their matrimonial homes, special Cells at the police stations to listen to their grievances and finding solutions to the same.

105.2.8 Voluntary agencies working for the general upliftment and specific aspects of women's life - their aims, working methodology, problem faced and methods adopted to overcome the same.

105.3 Preparing Women for Action

- History of women's movement
- Women's movement in the West
- Women's movement in India
- Impact of West on women's movement in India

105.4 Methodology for mobilising women for universalisation of elementary education - Acquainting them with preventive measures of health care - preparing women as a pressure group to discord those customs, traditions, social norms, superstitions prejudices social taboos etc. which downgrate the social status of women - ways to develop communication skills to effectively convey their problems and asserting their problems - Methodology for building positive self-image, self confidence; ability to think critically, building up group cohesion; fostering leadership qualities, decision making and action; providing wherewithal for economic independence; organising themselves in trade unions to get proper wages and facilities which are their legal rights.

105. 5 Community Participations in Planning Programmes for Mobilisation of Women and Community

Ways to bring awareness in the community members about the desirability of empowering women; motivating them for willing cooperation in empowering women, identification of the programme, schemes etc. where in key person can be involved at the decision making and implementation stages.

105.5 Case Studies

Presentation and discussion about some of the situational studies conducted in the NCERT or by other persons or organisations on voluntary basis.

Methodology

- Lectures and discussions
- Panel discussions
- Exhibitions of Films
- Field visits.

Bibliography

1. Towards Empowerment
Report of an FAO - FFHC/AD
South Asia Training for Women Development Workers, 1983

2. Bhatia S.C. and Bhansali Kamalini ed, Social Development Management: Notes for a Training Programme, Department of Women and Child Development, Ministry of Human Resource Development and United States Agency for International Development, New Delhi

3. Programme of National Conference on Women and Child Development (11-12 February, 1989)

4. Bhasin, K. Are we on the Right Track, Report of a Workshop on Participatory Evaluation, New Delhi, 1986.

5. Khan, Nighat Said and Bhasin, Kamla, Sharing one Earth, Report of an FAO - FFHC/AD South Asian Consultation on 'Responding to the Challenge of Rural Poverty in South Asia: Role of Non-governmental Organisation', Bangladesh, April 28-May 2, 1985.

6. F.A.O., Information Critique, Krishi Kshetra Mein Auraten (Women in Agriculture), New Delhi, 1987

7. Mahila [illegible] Ministry of Human Resource Development (Deptt. of Education), Government of India, New Delhi, 1988.

8. National Perspective Plan for Women: 1988-2000 A.D., Report of their Core Set up by the Deptt. of Women and Child Development, Ministry of Human Resource Development, Government of India, 1988.

9. Bhasin, Kamla, Khan, Nighat Said, Grappling with each other; Action and Theory, Report of a South Asian Workshop on Women and Development (Bangladesh) March - April 1986.

106 : PROGRAMME PLANNING AND
PROJECT FORMULATION

Course Number	:	106
Course Title	:	Programme Planning & Project Formulation
Course Coordinators	:	Usha Nayar/Sandhya Paranjpe
Contact Hours	:	20
Associate Faculty	:	M.M. Kapoor

Rationale

Due to increasing resource constraints and the need to accelerate the pace of development through the optimum utilization of all resources both human and material, it is increasingly being realized that well planned and formulated projects can be an effective means of the implementation of development plans. In the area of education this is a vital and crucial skill.

Effective Programme Planning and Project Formulation are techniques which need to be developed and in the area of women's education and development it is not enough to have just technical skills but a deep committment to equality is of utmost importance.

Objectives

(i) to acquaint the participants with the concepts and methods of programme and project planning

(ii) to develop adequate skills in project formulation for women's education and development

(iii) 'o sensitize the participants towards the need for monitoring and evaluation

Lecture Themes

106.1 - Introducing the Project

106.2 - Project Formulation

106.3 - Project Implementation

106.4 - Project Monitoring

106.5 - Project Evaluation

Outlinks

106.1 Introducing the Project

- Concepts of a plan, programme and project
- Characteristics of a project
- Contents of a project proposal
- Phases of a project
- Elements of a project plan

106.2 Project Formulation

- What is project formulation
- Stages in project formulation

- Variables affecting the project
- Steps in a project plan

106.3 Project Implementation

- Provisions needed for project implementation
- Problems in project implementation
- emphasizing the importance of this stage in project planning

106.4 Project Monitoring

- Definition of monitoring
- Scope of monitoring
- Methods
- Process
- Purposes

106.5 Project Evaluation

- Definition of evaluation
- Main features of evaluation
- Stages of the process of evaluation
- Purposes of evaluation
- Distinction between monitoring and evaluation

Select Bibliography

Krishna, Mridula: Project Planning in India, New Delhi, Indian Institute of Public Administration 1983.

Gray Clifford F : Essentials of Project management USA, Petrocelli Books, Inc; 1981.

UNESCO : Regional Planning in Education, Training Materials in Educational planning, administration and facilities, Division of Educational Policy and Planning, Paris, 1982 (Module V)

Bergen. S.A. : Project Management - Oxford Basil Blackwell 1986.

107 : INTRODUCING COMPUTERS

Course Number : 107

Course Title : Computers in Education

Course Credits : 2

Contact Hours : Theory 6
Practical 16

Course Coordinator : K.C. Nautiyal

Associate Faculty : Computer Cell, D.E.S.M., NCERT, New Delhi

Rationale

In recent years computers have gained immense popularity on account of their utility, versatility and convenient application. In education the computer have vast scope and are being used as an essential tool for learning, teaching of difficult concepts in science, mathematics and other [illegible] lot of phobia prevailing among teachers particularly among female teachers particularly of computers. They fear using it as if it is highly delicate and fragile system requiring super skills and training to operate it. There are several misgivings about the special care it calls for its operation and maintenance.

Today, we have personal computers, which are highly rugged, occupy a very small area and can be handled at ease. They have several built-in provisions

which makes it very easy to operate with almost cost free maintenance. Their installation hardly needs our special arrangements like air-conditioned room or any other facility except an electric point and dust protected shed. Today, in the age of electronics the use of computers and teaching of computers in schools is an inevitable necessity.

Objectives

1. To acquaint the participants with the use of computers in our life and in education in particular.
2. To famil'arise them with the operating system of computers.
3. To familiarise them with the computer hardware and software.

Lecture Theme:

107.1 Introduction to computers

107.2 Operating system: Hardware, input, output devices.

107.3 Computer software

107.4 Computer in education

107.5 Computer programming

107.6 Computer programming

Outlines of the Themes:

107.1 Introduction to computers: History of development of computers - their application in present day life and in education.

107.2 Operating system: Hardware, CPU, input-output devices, operational precautions.

107.3 Computer software. Binary system of various computer languages like Basic, Fortran, Cobal, Word proce sor, Data Base.

107.4 Computer in education, teaching of subjects like science, mathematics, history, geography through simulation and using of graphics, use of computer in development and management of information system, Data analysis, use of special social science packages.

107.5 Computer programming - basics.

107.6 Computer programming - continued.

References

Salwi Dalip M, I am a Computer - A Handbook of Computers. Madhuban Educational Books, New Delhi, 1988

108 : WORKSHOP IN TRAINING METHODOLOGY

Course Number - 108

Course Title - Training Workshop on Methodology for Women's Education and Development

Course Credit - 2

Course Co-ordinators - Usha Nayar/Sandhya Paranjpe

Contact Hours - Total 20

Associated Faculty - K.G. Virmani
M. Mukhopadhyay
P.K. Bhattacharya.

Rationale:-

A stated goal of the NCERT as an apex body of education, is the preparation of trainees and key level personnel in order to promote and achieve the national objectives.

Training is an inherent part of creating self-reliance. Thus, the training programme aims at the twin objectives of training the individual as an input into building others capacities and abilities in the same area of work.

Objectives:-

(i) to equip the participants with the knowledge and understanding of the concept, techniques and methods of training.

(ii) to enable the articipants to formulate and put training programmes on women's education and development on the ground.

(iii) emphasizing the requirement for action research.

Lecture Themes

108.1 Professional Preparation of key personnel in Women's Education and Development.

108.2 Training Needs Assessment

108.3 Training Process Strategies and Methods.

108.4 Impact Evaluation

108.5 Preparation of Instrument for Training Process.

108.

108.1 Special requirements of women's education and development - role of NCERT in preparation of key persons in the states - role of SCERTs/SIEs/DIETs and Women's Studies Centres.

Concept of Training

- Why training ?

A conceptual model of training

- Elements of training
- Learning theory, perceptions and stimuli.

108.2 Training Needs Assessment

- Role of need assessment
- Methods of need assessment
- Some experiences
- Process of need assessment
- A case study and discussion

108.3 Training Process Strategies and Methods.

Theories of Andragogy - building on existing experience of participants - methods and techniques - from reduced dependence to independnence to inter-dependence- lectures - individual assignments and presentation - Group Work.

108.4 Importance of follow up and evaluation of training - concurrent evaluation - use of training inactual situations - factors and forces responsible for implementation of suggested strategies - position taken by superordinates - resources - follow up by trainees to sustain motivation - instrument of

feed back - impact on future programmes - estimation of loss of training on transfers and inadequate support

108.5 How to put a training programme on the Ground -

(i) planning - sequencing - resources content - methodology-evaluation

(ii) preparation of a training module

LIST OF READINGS :

1. Virmani K.G. and Juneja N. - Impact Evaluation

2. Mukhopadhyaya M. - How to prepare a Training Module.

3. IIPA, Training in Government, Objectives and Opportunities, New Delhi 1985.

4. Udai Pareek & T.V. Radio; Handbook for Trainees in Educational Management, UNESCO, Bangkok, Thailand,

SECTION IV
WSU FRAMEWORK

Projects & Programmes For 1989-90: A Framework

Constitution Of India – Constitutional Goals Equality Between Sexes NPE 1986 Education For Women's Equality

Situational Analysis

- Historical Overview
- Constitution & Law
- Demography
- Economy
- Polity
- Education
- Family
- Social Issues
- Religion
- Ideology

System ↔ Development of Indicators

Agencies

- MHRD: Education, WCD, CSWB, Health, Ministry of Labour
- States & UT's Depts of Education SCERT's, SIE's, DIET's, DEB's
- Village Education Committees
- Panchayats
- People / Community / Mass Media
- Centre For Women's Studies
- Student Power
- Teachers / Teacher Educators.
- Administrators
- International Agencies

NPE / POA

Thrust Areas

- Early Child Care Education
- Universalisation Of Elementary Education / Adult Education
- Vocational / Technical / Professional
  - non traditional occupations in existing and emergent technologies
  - elimination of sex-stereotypes
- Empowerment.

Strategies

- Conscious Intervention
- Core Curriculum
- Sensitization Of Educational Personnel
- Climate & Media.
- Removal Of Sexist Bias From Educational Programmes & Textbooks
- Redesigning Of Curriculum
- Support Services child care, water, fodder, fuel and health
- Time Targets & Monitoring
- Preparation Of Women Instructors
- Participation Of Women In Educational Administration
- Non Formal Education (9-14 yrs)
- National Literacy Mission (15-35 yrs)
- Condensed Courses (15-35 yrs)
- Mahila Mandals
- Women's Studies / Women's Cells
- Mobilization Of Women & Community
- Microlevel Participative Planning; Monitoring And Evaluation.

NCERT Programmes

I – Awareness Generation Development of Programme: Materials in Regional languages

II – Preparation of Key Persons from States and UT's SCERT's / SIE's Depts of Educ / Teacher Educ / Women Cells

III – Removal of Sexist Bias from Curriculum & Educ Programmes: Intervention in Content & Process. Dev of guidelines for curriculum developers, textbook writers, teacher educators & their orientation. Tools for evaluation of Text Books. Exemplar materials, Supplementary readers, Audio-visuals, teachers handbook on subject areas

IV – School Based Programme: Teachers handbook (Annexure project)

V – Methodology of Women's Education & Development. Action Project and Certificate Course, Internal Diploma

VI – NFE: Need identification for girls

VII – Mobilization of Women for Education (Study of Mahila Ma[ndals])

VIII – Data Bank: Qualitative, Quantitative

IX – Monitoring & Evaluation of E[...]

X – Research, Development Training & Extension

XI – Struggle against revivalism and redefinition of Values

XII – An Alternate Paradigm for Peace

Outcomes

1. Newsletter
2. Journal
3. Handbooks.

Interorganisational ← Networking → Interdepar[tmental]

Education For Women's Equality - NPE 1986 : Monitoring & Evaluation System

GOAL
WOMEN'S EQUALITY

ACTION

Situational Analysis
- historical, social, constitutional, legal, demographic, eco, political, educational
Bench Mark Data

Development of Indicators of Women's Equality
Collection / Collation of Data
Sources of data & methods
- quantitative, qualitative, primary, secondary etc
Data to be timely, accurate, valid, reliable and collected periodically to build time series & assess achievement of targets

POA
Programmes
UEE / AE.
EQual Participation at all levels & in all types - voc, tech, professional, skill generation
Eq. participation in ECONOMY
Decision-making
Political Processes
Strategies
Conscious intervention
Removal of Sexism from Curricula, Text Books, Media, Family, Society-Mobilisation
Support Services
Empowerment by participation in dec-making at all levels - acting as Change agents

Agencies
HRD; Women & Child Dev; Soc. Welfare; states union territories, Depts. of Edu, Health, Labour, Law etc; SCERT
SIEs; DIETs;
DBEs, Village Education Comm;
Jana Shikshan Nilayams;
Yuvak Kendras,
Mahila Mandals,
Dist Boards,
Panchayats
Voluntary Agencies
International Org
PEOPLE
Student Power
Teachers
Administrators
Employed & Retired educated

Goal Setting

Project Formulation and Management
PERT
Time Resources
Project Evaluation

Feed Back
Monitoring for mid-course correction
Evaluation for future policy & planning

AWARENESS

ACTION → REVIEW → REALIGN

WOMEN'S STUDIES UNIT
AWARENESS GENERATION SCHEME USING THE STUDENT/CHILD AS A FOCUS FOR EDUCATION FOR WOMEN'S EQUALITY.
IN SCHOOL ACTIVITIES
TIVITIES RELATED NATIONAL OBJECTIVES AND PLANS
ACTIVITIES RELATED TO SCHOOL SPECIFIC OBJECTIVES
SCHOOL AUTHORITIES
PRINCIPAL & HEAD
TEACHERS
DEMIC
S.U.P.W. WORK EXPERIENCE
CO-CURRICULAR
HOME BASED ACTIVITIES
WORLD
COUNTRY
COMMUNITY
FAMILY
CHILD
CONSTITUTIONAL RIGHTS
JUSTICE
LIBERTY - FRATERNITY - EQUALITY -
COMMUNITY
UNIVERSAL DECLARATION OF HUMAN RIGHTS EQUALITY BETWEEN SEXES
OUT OF SCHOOL ACTIVITIES
COMMUNITY AGENCIES
NON FORMAL EDUCATION CENTRES.
ADULT EDUCATION CENTRES.
MAHILA MANDALS
YUVAK KENDRAS
AGANWADIS/BALWADIS
CRECHES
OUTCOMES
MANUALS
TEACHERS HAND BOOKS
S Paranjpe
N.C.E.R.T.

WOMEN'S STUDIES UNIT

AN ACTION PLAN FOR REMOVAL OF SEXIST BIAS OPERATING AGAINST THE GIRL CHILD

BIASES OPERATING AGAINST THE GIRL CHILD

IMPLEMENTING AGENCIES	INTERVENTION STRATEGIES & INPUTS
Policy Makers →	1 Household Activities
	2 Textbooks
Educational Planners & Administrators →	3 Classroom Activities & Interaction.
	4 Co-Curricular Activities
Curriculum Developers →	5 Play Activities
Text Book Writers →	6 S U P W.
Boards of Education &	7 Work Experience
Text Book Boards. →	8 Guidance & Counselling Services
Teachers. →	9 Support Services
Mass - Media	10 Infrastructural Facilities
→	11 Special Training Programmes
Community →	12 Implementation of Rights

Girl Child

Economic — Employment

Socio-Cultural — Family, School, Community

Health & Nutrition — Food, Medical & Health care

Direct

Indirect

OUTPUTS

1. Increased Enrolment
2. Increased Retention In Schools
3. Fall In Drop-Out R
4. Improvement In Se Concept & Imag
5. Dignity Of Labour
6. Saring Of Responsi And Of Duties
7. Equal Pay.
8. Equal Status.

S Paranjpe

N.C.E.R.T.

SECTION V

WOMEN'S EDUCATION AT A GLANCE

(FIGURES* & TABLES)

* Figures prepared by Mr. P.N. Tyagi, courtesy, NIEPA

Figures at a Glance

India

1. No. of Districts 1971 - 360
   1981 - 412

2. Area 1981 3,287,263 Km^2

   Largest M.P. 443,446 Km^2

   Smallest Lakshadweep 32 Km^2

3. Population

		Total	Male	Female
1971	-	548,159,652	284,049,276	264,110,376
1981	-	685,184,692	354,397,884	330,786,868

   Higest - Uttar Pradesh 110,862,013

   Lowest - Lakshadweep 40,249

4. Percentage Increase 1961-71 24.80%
   1971-81 25.00%

   Highest Chandigarh 75.55%

   Lowest Tamil Nadu 17.50%

5. Proportion of Rural Population to Total Population 1971 80.09%
   1981 76.69%

   Highest Arunachal Pradesh 93.44%

   Lower Chandigarh 6.37%

6. Proportion of Urban Population to Total Population 1971 19.91%
   1981 23.31%

   Highest Chandigarh 93.63%

   Lowest Arunachal Pradesh 6.56%

7. Density of Population 1981 - 216 per Km^2

   Highest - Delhi 4,194 per Km^2

   Lowest - Arunachal Pradesh 8 per Km^2

8. Literacy Rate

	Persons	Males	Females
1971	29.48%	39.52%	18.70%
1981	36.23%	46.89%	24.82%

Highest Kerala 70.42%

Lowest Arunachal Pradesh 20.79%

9. Sex Ratio (Females per 1000 males) 1971 - 931

1981 - 934

Highest Kerala 1032

Lowest Andaman & Nicobar Islands 760

10. Age at Marriage Male - 23.27 Female - 18.32

11. CBR 33.8

12. CDR 12.3

13. IMR 110

14. Child-Women Ratio (1981) 546

15. Child Dependency Ratio 733

16. Proportion of Main Workers to Total Population 1971 33.06%

1981 33.45%

Highest Arunachal Pradesh 49.61%

Lowest Lakshadweep 19.74%

17. Proportion of Cultivators and Agriculturan Labourer to Main Workers

1971 69.77%

1981 66.52%

Highest	Andhra Pradesh	36.79%
Lowest	Chandigarh	0.55%

18. Female work Participation Rate

1971	12.06%
1981	13.99%

Highest	Nagaland	42.45%
Lowest	Punjab	2.27%

TABLE NO - 1

INDIA

DEVELOPMENT OF FEMALE LITERACY

A. PROGRESS OF FEMALE LITERACY 1901 - 1981

INDIA

YEAR	MALES	FEMALES	LITERATE MALES PER 100 LITERATE FEMALES	M*	F*	TOTAL
1901	11,870,759	8[illegible]9,53[illegible]	1466	9.83	0.60	5.35
1911	13,552,737	1,289,484	1043	10.56	1.05	5.92
1921	15,690,428	2,221,4[illegible]	1208	12.21	1.81	7.16
1931	22,274,035	3,977,034	560	15.59	2.93	0.50
1941	-	-	-	24.90	7.30	16.10
1951	46,272,335	13,916,5[illegible]	332	24.95	7.93	16.67
1961	77,906,038	27,565,962	283	34.44	12.95	24.02
1971	112,012,994	49,423,270	227	39.45	18.69	29.45
1981	158,837,215+	79,154,717+	201	46.74	24.88	36.17

B. RURAL-URBAN AND SC/ST LITERACY RATE

	1951	1961	1971	1981
TOTAL	6.7	24.0	29.5	36.12
RURAL	-	19.0	23.7	29.57
URBAN	-	47.0	52.5	57.19
MALE	24.9	34.4	39.5	46.74
RURAL	-	29.1	33.8	40.62
URBAN	-	57.5	61.3	65.58
FEMALE	7.9	13.0	18.7	24.88
RURAL	-	8.5	13.2	17.99
URBAN	-	34.5	42.1	47.65

C. LITERACY OF SC/ST POPULATIONS IN 1971

T	TOTAL	MALE	FEMALE
SC	14.67	22.36	6.44
ST	11.30	17.63	4.85

\+ Figures not available
\+ Excludes Assam and Jammu + Kashmir
* M/F = Male/Female

Source : Indian Census Reports

1971

Contiguous districts having Rural Female Literacy below 5 per cent in 1971

(1971)

1. Jammu & Kashmir

Anantnag-Srinagar-Baramulla-Ladhakh-Doda-Udhampur.

2. Rajasthan-Gujarat-Madhya Pradesh

Entire Rajasthan (Except districts of Ganganagar, Jhunjhunu, Pali, Alwar, Ajmer and Kota)-Dhar-Jhabua Ratlam-Ujjain-Dewas-Sahore-Shajapur-Rajgarh-Vidisha Guna-Shivpuri-Morena.

3. Uttar Pradesh

Moradabad-Rampur-Pilibhit-Bareilly-Budaun-Kheri-Bahraich-Bara Banki-Gonda-Basti.

4. Madhya Pradesh-Bihar

Tikamgarh-Chhatarpur-Panna-Banda-Sidhi-Shahdol-Surguja-Palamau-Hazaribagh-Santal Parganas.

5. Orissa-Madhya Pradesh-Andhra Pradesh-Mysore

Kalahandi-Koraput-Bastar-Adilabad-Karimnagar-Medak-Gulbarga.

B: Contiguous districts having Rural Female Literacy between 5.01 and 10.00 in 1971

1. Andhra Pradesh-Maharashtra-Mysore

Nizamabad-Nanded-Parbhani-Aurangabad-Bhir-Bidar.

2. Orissa-Andhra Pradesh-Mysore

Bolangir-Baudh Khondmals-Ganjam-Srikakulam-Vish[illegible]atnam Khammam-Warangal-Nalgonda-Hyderabad-Mehbubnagar-Kurnool Cuddapah-Anantpur-Bellary-Raipur.

3. Bihar-West Bengal-Orissa-Madhya Pradesh

Dhanbad-Purulia-Ranchi-Mayurbhanj-Keonjhar-Sundergarh-Raigarh-Raipur-Durg-Belaspur-Mandla-Seoni-Chhindwara-Betul-Hoshangabad-Raisen-Sagar-Damoh-Jabalpur-Satna-Rewa.

4. Rajasthan-Haryana-Madhya Pradesh-Uttar Pradesh-Bihar-West Bengal

Ganganagar-Hissar-Jhunjhunu-Karnal-Saharanpur-Mazaffarnagar-Bijnor-Bulandshahr-Aligarh-Gurgaon-Mathura-Etah-Agra-Bhind-Gwalior-Datia-Jhansi-Jalaun-Hamirpur-Fatehpur-Hardoi-Lucknow-Rae Bareilly-Pratapgarh-Sultanpur-Faizabad-Azamgarh-Jaunpur-Ghazipur-Varanasi-Mirzapur-Balia-Deoria-Saran-Muzaffarpur-Darbhanga-Patna-Gaya-Monghyr-Bhagalpur-Purlea-West Dinajpur-Malda-Murshidabad-Sitapur-Gorakhpur.

Table 4

Percentage distribution of litrates by sex and completed Educational level 1981

Educational level	Rural		Urban	
	Male	Female	Male	Female
Literate without Educational level	33.8	39.4	21.0	25.9
Primary	33.3	37.5	24.6	29.6
Middle	17.6	16.0	18.8	19.0
Matriculation/ Higher Secondary	12.9	7.1	25.7	19.3
Graduate & above	2.1	0.7	9.0	5.8
Others	0.3	0.3	0.9	0.4
	100.0	100.0	100.0	100.0

Source : Government of India, Census of India 1981 series I paper 2 of 1983, pp 21-24

Percentage distrubution of population by level of education, 1981

Educational Level	Rural		Urban	
	Male	Female	Male	Female
Illiterate	54.2	76.5	30.7	47.5
Literate but below primary	25.1	15.8	26.0	24.4
Primary but below matric	15.3	6.4	23.9	17.5
Matric but below graduate	4.6	1.2	14.3	8.0
Graduate and above	0.8	0.1	6.1	2.6
	100.0	100.0	100.0	100.0

Source : Government of India, *Age at Marriage Differentials in India.* office of the Registrar General India, New Delhi 1984, pp 4.

Table 6

Percentage of Girls Enrolment to Total Enrolment

Sl No	State / Union Territory	Classes I V 1978	Classes I V 1986	Classes VI VIII 1978	Classes VI VIII 1986	Classes IX X 1978	Classes IX X 1986	Classes XI XII 1978	Classes XI XII 1986	
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	
1	Andhra Pradesh	41.10	47.24	32.85	38.21	29.77	42.63	23.20	26.29	AP
2	Arunachal Pradesh	32.09	40.33	29.01	38.21	22.90	30.05	27.01	25.66	ARN
3	Assam	42.13	43.52	38.97	40.92	36.45	40.46	25.10	35.84	ASM
4	Bihar	28.94	33.16	19.48	29.19	14.42	20.67	6.02	21.29	BHR
5	Goa	45.37	47.44	44.39	45.42	42.38	44.62	32.21	46.44	GOA
6	Gujarat	39.95	43.18	36.92	38.82	35.02	36.23	33.66	37.52	GUJ
7	Haryana	32.86	41.28	24.80	31.34	23.69	26.90	31.95	29.80	HAR
8	Himachal Pradesh	41.32	45.77	29.70	39.84	25.42	33.09	24.61	22.60	HIM
9	Jammu & Kashmir	35.48	39.75	31.42	34.65	30.52	32.69	27.73	31.53	J&K
10	Karnataka	43.17	44.90	36.55	40.33	34.00	38.23	27.79	33.06	KAR
11	Kerala	48.29	48.79	46.87	49.12	47.96	49.63	48.54	43.00	KER
12	Madhya Pradesh	31.86	38.35	25.01	27.54	23.82	21.72	23.35	27.71	MP
13	Maharashtra	42.56	45.05	35.67	39.19	31.38	33.73	26.96	31.99	MAH
14	Manipur	44.27	46.13	38.93	43.10	36.71	42.54	29.13	25.99	MNP
15	Meghalaya	49.33	49.74	45.68	47.65	43.86	46.33	—	45.24	MEG
16	Mizoram	48.12	47.64	45.96	45.92	45.61	47.02	—	—	MIZ
17	Nagaland	44.34	47.36	42.24	47.52	38.87	38.12	30.47	—	NAG
18	Orissa	38.30	42.10	30.71	36.32	26.03	32.41	25.67	35.51	ORS
19	Punjab	44.68	45.58	38.29	41.86	37.81	40.98	33.46	37.18	PB
20	Rajasthan	24.33	28.02	18.96	19.75	17.50	16.82	16.96	16.42	RAJ
21	Sikkim	38.59	44.92	33.12	43.81	30.48	37.79	31.20	30.50	SKM
22	Tamil Nadu	44.87	45.97	37.58	40.81	33.83	37.76	32.73	41.02	TN
23	Tripura	41.60	44.55	40.27	42.17	41.76	41.54	32.49	35.00	TRI
24	Uttar Pradesh	30.43	34.21	21.36	20.52	15.68	19.82	16.17	23.14	UP
25	West Bengal	42.02	43.41	39.13	38.57	35.40	38.11	29.06	32.80	WB
26	A. & N. Islands	45.18	46.61	41.17	44.28	43.47	42.42	40.72	41.67	ANI
27	Chandigarh	45.07	45.92	41.89	46.73	44.11	40.79	50.30	42.72	CHD
28	Dadra & Nagar Haveli	37.84	40.71	31.24	38.75	35.96	38.24	26.60	38.72	DNH
29	Daman & Diu	*	47.18	*	42.62	*	40.52	*	30.94	D&D
30	Delhi	45.61	45.56	42.10	45.32	42.44	43.07	46.12	44.76	DLH
31	Lakshadweep	44.55	46.99	36.02	41.41	32.01	40.52	23.38	29.61	LKD
32	Pondicherry	44.65	48.00	38.42	42.19	32.74	39.96	29.46	39.41	PND
	All - India	38.27	41.16	32.70	35.45	29.87	31.74	24.80	30.71	A-I

* Daman and Diu was part of Goa, Daman & Diu Union Territory in 1978.

Table 8

Scheduled Tribe Enrolment (Total and Girls) at Various School Stages

State / Union Territory	% of ST in Total Population (1981)	Classes I - V Total (ST)	Classes I - V % of ST in Total Enrolment	Classes I - V Girls (ST)	Classes VI - VIII Total (ST)	Classes VI - VIII % of ST in Total Enrolment	Classes VI - VIII Girls (ST)	Classes IX - X Total (ST)	Classes IX - X % of ST in Total Enrolment	Classes IX - X Girls (ST)	Classes XI - XII Total (ST)	Classes XI - XII % of ST in Total Enrolment	Classes XI - XII Girls (ST)	
2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	
Andhra Pradesh	5.93	334195	4.78	136519	35588	2.30	9128	12946	2.01	2609	2256	1.17	485	AP
Arunachal Pradesh	69.82	65506	74.41	25795	13124	75.93	4584	4988	66.10	1385	1761	68.26	338	ARI
Assam	10.99	667712	25.41	305394	100435	13.18	41988	38105	11.10	15108	8280	7.25	2450	ASM
Bihar	8.31	663645	8.52	229530	130991	6.79	36711	47304	5.68	12758	6611	6.99	1964	BHI
Goa	0.99	137	0.09	57	36	0.05	21	5	0.01	1	0	0.00	0	GOA
Gujarat	14.22	715672	14.47	299013	165534	11.05	60925	59560	9.58	19996	17433	8.57	6144	GUJ
Haryana	0.00	0	0.00	0	0	0.00	0	0	0.00	0	0	0.00	0	HAR
Himachal Pradesh	4.61	25035	3.89	9883	9200	3.05	2913	2600	2.58	689	207	1.77	41	HIM
Jammu & Kashmir	0.00	0	0.00	0	0	0.00	0	0	0.00	0	0	0.00	0	J&K
Karnataka	4.91	178421	3.52	75905	43841	2.99	15919	17798	2.82	5674	6686	3.11	2041	KAR
Kerala	1.03	34413	1.13	16447	12001	0.77	5711	4156	0.55	1963	128	0.60	64	KER
Madhya Pradesh	22.97	1284527	18.53	441777	244830	12.49	48855	69976	10.43	11067	7626	7.94	1409	MP
Maharashtra	9.19	863280	9.13	355015	188179	5.78	59807	70535	4.92	19239	11843	1.95	2558	MAH
Manipur	27.30	60477	33.63	27634	15263	22.29	6668	7969	19.74	3318	45	5.22	11	MNI
Meghalaya	80.58	229145	91.11	114313	57491	89.22	27867	23204	85.43	10756	14811	84.27	6733	MEG
Mizoram	93.55	104044	100.00	49570	28659	100.00	14019	12029	100.00	5656	0	0.00	0	MIZ
Nagaland	83.99	124002	97.78	58897	28151	97.18	12343	10709	96.17	4080	0	0.00	0	NAG
Orissa	22.43	615232	18.52	224666	88356	10.13	23632	34906	8.56	8068	43	1.79	13	ORS
Punjab	0.00	0	0.00	0	0	0.00	0	0	0.00	0	0	0.00	0	PB
Rajasthan	12.21	444725	10.52	98092	97496	8.45	8294	37690	8.03	1760	6407	5.63	295	RAJ
Sikkim	23.27	13171	21.26	6180	3042	20.36	1481	978	23.14	421	299	28.59	94	SKM
Tamil Nadu	1.07	69695	0.95	31269	16318	0.62	6765	6415	0.66	2625	1752	0.48	820	TN
Tripura	28.44	105082	28.80	42459	22722	20.84	8173	7113	17.13	2113	606	5.91	197	TRI
Uttar Pradesh	0.21	27191	0.25	9632	7631	0.20	1947	2789	0.15	642	1350	0.16	353	UP
West Bengal	5.63	344840	5.05	129691	61551	3.33	15325	18181	2.45	4122	3379	1.31	661	WB
A & N Islands	11.85	3190	9.09	1488	1502	9.57	638	604	8.84	249	155	4.82	63	ANI
Chandigarh	0.00	0	0.00	0	0	0.00	0	0	0.00	0	0	0.00	0	CHD
Dadra & Nagar Haveli	78.82	11578	82.15	4498	2479	70.43	829	890	66.22	323	201	45.79	70	DNH
Daman & Diu	*	2134	15.01	998	470	8.05	156	85	4.21	20	16	2.50	3	D&D
Delhi	0.00	901	0.11	451	322	0.08	140	120	0.06	38	75	0.06	29	DLH
Lakshadweep	93.82	7894	96.29	3668	2779	92.20	1121	1052	90.69	410	362	87.86	92	LKD
Pondicherry	0.00	4	0.00	2	1	0.00	0	1	0.00	0	1	0.02	0	PND
India	7.76	6995848	8.07	2698843	1377992	5.07	415960	492708	4.29	135090	92533	2.69	26919	A-I

* Diu was part of Goa, Daman & Diu Union Territory in 1981

Table 1O4

Statewise Percentage of Rural Population with and without Upper Primary Schools / Sections

State / Union territory	Within the Habitation	up to* 10 Km	11 to 20 Km	21 to 30 Km	up to 30 Km	31 to 40 Km	41 to 50 Km	up to 50 Km	more than 50 Km	Total	
		Percentage of population served by upper primary schools / sections at a distance of									
2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
Andhra Pradesh	42 44	49 35	3 57	1 92	97 26	0 94	0 70	98 92	1 08	100 00	AP
Arunachal Pradesh	26 48	5 56	4 53	5 62	42 19	4 01	3 21	49 41	50 59	100 00	ARN
Assam	24 19	17 75	23 08	18 27	83 29	9 05	4 17	96 51	3 49	100 00	ASM
Bihar	25.86	22 09	24 74	15 61	88 30	5 69	3 10	97 09	2 91	100 00	BHR
Goa	22.24	36 02	22 23	11 30	91 79	4 12	1 92	97 83	2.17	100 00	GOA
Gujarat	74 90	6 40	8 11	5 02	94 43	2 10	1 22	97 75	2 25	100 00	GUJ
Haryana	61 84	9 24	13 56	8 48	93 12	3 88	1 64	98 64	1 36	100 00	HAR
Himachal Pradesh	17 73	18 71	23 24	16 36	76 04	9 07	5 94	91 05	8 95	100 00	HIM
Jammu & Kashmir	34 37	19 25	20 06	12 31	85 99	5 69	3 16	94 83	5 17	100 00	J&K
Karnataka	57 01	8 61	14 26	9 90	89 76	4 55	2 60	96 93	3 07	100 00	KAR
Kerala	69 17	8 86	12 42	5 77	96 22	1 52	0 72	98 46	1 54	100 00	KER
Madhya Pradesh	27 76	9 11	15 55	17 16	69 58	9 96	8 18	87 72	12 28	100 00	MP
Maharashtra	58 83	9 74	10 85	9 04	88 46	4 43	3 36	96 30	3 70	100 00	MAH
Manipur	38 48	20 97	14 49	6 25	80 19	3 18	2 11	85 48	14 52	100 00	MNP
Meghalaya	26 85	12 66	12 86	12 62	64 99	7 40	6 99	79 38	20 62	100 00	MEG
Mizoram	80 37	1 03	0 52	0 93	82 85	0 14	0 21	83 20	6 80	100 00	MIZ
Nagaland	43 25	6 15	7 52	9 49	66 41	3 77	4 01	74 19	25 81	100 00	NAG
Orissa	30 45	22 33	18 92	11 65	82 35	5 78	3 72	92 85	7 15	100 00	ORS
Punjab	46 93	12 50	21 07	11 99	92 49	4 68	1 85	99 02	0 98	100 00	PB
Rajasthan	46 30	6 19	11 96	12 55	77 00	7 20	5 35	89 55	10 45	100 00	RAJ
Sikkim	27 91	9 11	19 99	19 19	76 20	9 97	6 11	92.28	7 72	100 00	SKM
Tamil Nadu	34 36	14 02	19 94	15 75	84 07	7 48	4 29	95 84	4.16	100 00	TN
Tripura	25 78	26 19	22 84	11 50	86 31	5 24	2 64	94 19	5 81	100 00	TRI
Uttar Pradesh	20 41	18 82	23 89	18 76	81 88	8 68	5 11	95 67	4.33	100 00	UP
West Bengal	18 47	23 51	25 33	15 48	82 73	7 45	4 91	95 15	4.85	100 00	WB
A & N Islands	39 46	10 75	15 87	7 49	73 57	5 06	3 96	82 59	17 41	100 00	ANI
Chandigarh	56 80	32 95	7 34	2 91	100 00	0 00	0 00	100 00	0.00	100 00	CHD
Dadra & Nagar Haveli	9 14	18 20	24 55	13 44	65 33	12 48	9 08	86 89	13.11	100 00	DNH
Daman & Diu	60 89	20 31	13 29	4 95	99 41	0 56	0 00	100 00	0 00	100 00	D&D
Delhi	58 69	21 15	13 93	4 83	98 60	0 65	0 29	99 55	0 45	100 00	DLH
Lakshadweep	99 16	0 00	0 00	0 00	99 16	0 00	0 84	100 00	0.00	100 00	LKD
Pondicherry	49 83	21 93	17 16	7 56	96 48	2 72	0 52	99 72	0 28	100 00	PND
All - India	36 98	17 83	17.64	12.94	85 39	6.07	3.82	95.28	4.72	100.00	A-I

* not within the habitation

Table 13

Primary and Upper Primary Schools Having Various Ancillary Facilities

Sl. No.	State / Union Territory	Number of Primary Schools having the facility					Number of Upper Primary Schools having the facility					
		Drinking water	Urinals	Separate Urinals for Girls	Lavatory	Separate Lavatory for Girls	Drinking water	Urinals	Separate Urinals for Girls	Lavatory	Separate Lavatory for Girls	
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
1	Andhra Pradesh	15042	2341	2341	2351	1504	3149	1353	1353	1243	960	AP
2	Arunachal Pradesh	468	218	80	88	23	116	71	37	43	18	ARN
3	Assam	3978	1866	0	1735	0	2306	2758	659	1040	86	ASM
4	Bihar	24242	1331	219	910	114	9397	3569	1214	2296	792	BHR
5	Goa	613	123	46	104	32	85	40	23	37	22	GOA
6	Gujarat	7142	3230	1402	1059	389	11405	8443	4387	3213	1807	GUJ
7	Haryana	3455	2014	679	610	339	966	891	654	345	231	HAR
8	Himachal Pradesh	3475	568	394	406	257	[illegible]	184	120	100	78	HIM
9	Jammu & Kashmir	2083	427	132	144	38	[illegible]	384	164	161	55	J&
10	Karnataka	16257	1363	221	632	217	9978	3760	1178	2282	991	K
11	Kerala	4658	3962	1750	1517	438	2538	2601	1871	1344	689	KER
12	Madhya Pradesh	[illegible]	6719	2542	3156	1804	7482	5258	2631	2351	1361	M
13	Maharashtra	17467	6461	4480	3999	3110	10450	6079	3363	2943	2226	MAH
14	Manipur	711	465	118	155	29	210	218	38	86	35	MNP
15	Meghalaya	427	449	67	64	13	254	279	[illegible]	125	42	ME
16	Mizoram	317	532	109	201	40	170	222	66	152	50	MIZ
17	Nagaland	263	124	125	21	11	124	179	112	52	39	NAG
18	Orissa	8459	2243	449	504	180	3594	1892	793	663	237	OR
19	Punjab	11554	7924	2206	1793	607	1403	1262	897	659	383	PU
20	Rajasthan	14764	3529	1651	1674	936	6347	4248	2380	1933	1009	RA
21	Sikkim	191	86	22	22	5	66	45	20	24	9	SKM
22	Tamil Nadu	24753	8474	[illegible]	3289	2063	4803	3051	1822	1782	1710	TN
23	Tripura	718	259	51	103	29	219	189	86	50	11	TR
24	Uttar Pradesh	40854	11111	2419	4244	1500	12756	7384	3633	3462	1962	UP
25	West Bengal	26415	11091	2086	2922	655	2414	2776	2124	1242	750	WB
26	A. & N. Islands	104	69	55	55	44	34	32	30	29	28	AN
27	Chandigarh	44	36	27	29	23	31	31	26	24	22	CH
28	Dadra & Nagar Haveli	174	20	18	16	14	36	22	18	20	18	DNH
29	Daman & Diu	24	10	5	11	5	11	6	3	6	4	DA
30	Delhi	1810	1691	848	1610	827	330	313	238	234	224	DEL
31	Lakshadweep	9	9	6	8	6	2	2	2	2	1	LKD
32	Pondicherry	260	147	108	125	96	93	71	55	69	52	PNP
	All - India	248664	78454	25766	33753	15383	92752	57523	30739	28216	15902	AI

Table 15

S.No	State/Union Territory	1987-88** Enrolment	Women Enrolment	% of Women to Total Enrolment
1	Andhra Pradesh	2,89,896	77,531	26.7
2	Assam	83,917	24,789	29.5
3	Bihar	2,67,009	42,522	15.9
4	Gujarat	2,25,051	77,759	34.6
5	Haryana	80,103	31,824	39.7
6	Himachal Pradesh	20,979	5,495	26.2
7	Jammu & Kashmir	29,752	11,233	37.8
8	Karnataka	2,57,00[illegible]	73,742	27.6
9	Kerala	1,48,762	76,845	51.6
10	Madhya Pradesh	2,78,452	89,698	32.2
11	Maharashtra	4,90,511	1,76,212	35.9
12	Manipur	11,443	3,816	33.3
13	Meghalaya/Nagaland	9,536	3,774	39.6
14	Orissa	76,288	17,922	23.5
15	Punjab	1,41,133	65,860	46.6
16	Rajasthan	1,86,906	43,137	23.1
17	Tamilnadu	2,74,638	1,01,349	36.9
18	Uttar Pradesh	5,32,518	1,15,602	21.7
19.	West Bengal/Tripura/Sikkim	2,93,710	1,08,284	36.8
20	Arunachal Pradesh*			
21	Delhi*	1,06,804	47,674	44.6
22	Goa*			
23	Pondicherry*			
	ALL INDIA	38,14,417	11,95,073	31.3

* Union Territory

** Estimated

Table 16 (contd)

Year	Agriculture T	Agriculture W	Agriculture %	Vet/Science T	Vet/Science W	Vet/Science %	Law T	Law W	Law %
1979 80	39,962	1 101	2 8	7,435	202	2 7	1,77 448	10 975	6 2
1980 81	39,231	1,311	3 3	7 648	249	3 3	1,74 374	11 948	6 9
1981 82	39,318	1,390	3 5	8,173	352	4 3	1,74,445	12 309	7 1
1982 83	39,425 **	1,595	4 0	8 797	424	4 8	1,83,153	13 576	7 4
1983-84	41,588	1,719	4 1	9,268	470	5 1	1 94,555	15,156	7 8
1984 85	41,741	2,045	4 9	9,413	506	5 4	1,95,778	15 745	8 0
1985 86*	46,422	2,011	4 3	10,713	529	4 9	2 07,132	16 726	8 1
1986-87*	47,864	2,138	4 5	11,046	563	5 1	2,13,549	17,780	8 3
1987-88*	49,587	2,271	4 6	11,443	599	5 2	2,21,236	18 882	8 5

*Estimated

** Revised

(contd)

Year	Others T	Others W	Others %	Total T	Total W	Total %
1979 80	18,943	7,350	38 8	26,48,579	6,89,042	26 0
1980 81	18 494	7,352	39 8	27,52,437	7 48,525	27 2
1981-82	18,005	6,992	38 8	29,52,066	8,16,704	27 7
1982-83	18,264	6,740	36 9	31,33,093	8,80,156	28 1
1983 84	20,603	7,345	35 7	33,07,649	9,40,253	28 4
1984 85	22,430	8,506	37 9	34,04,096	9,92,139	29 1
1985-86*	21,425	8,469	39 5	35,70,897	10,58,612	29 6
1986 87*	22,091	9 002	40 7	36,81,870	11,25,304	30 6
1987 88*	22,887	9,560	41 8	38,14,417	11,95,073	31 3

*Estimated T=Total Enrolment W=Women Enrolment NA=Not available

Table 17

Enrolment in Medical and Engineering Colleges

	[illegible]				B.E./B.Sc.(Engg)/B.Arch.			
	Boys		Girls		Boys		Girls	
	1960-61	86-87	60-61	86-87	60-61	86-87	60-61	86-87
Andhra Pradesh	3559	4561	104[illegible]	2200	3511	15173	[illegible]	937
Assam	706	1363	67	539	508	2438	-	154
Bihar	1917	3465	341	933	4005	6607	[illegible]	90
Gujarat	1979	4400	481	1500	3516	11250	2[illegible]	750
Haryana	-	415	-	155	-	1463	-	59
Himachal Pradesh	-	296	-	77	-	-	-	-
Jammu & Kashmir	131	890	51	330	-	1790	-	90
Karnataka	2120	5377	400	1903	4813	29205	13	11295
Kerala	12[illegible]	5143	424	2075	2138	8106	65	2895
Madhya Pradesh	1559	2943	431	1281	2928	2119	9	159
Maharashtra	-	5950	6400	3550	270[illegible]	29000	-	1500
Manipur	-	340	-	120	-	-	-	-
Meghalaya	-	-	-	-	-	-	-	-
Nagaland	-	-	-	-	-	-	-	-
Orissa	484	1176	178	536	451	2130	-	21
Punj	1770	1542	431	820	1677	1673	1	89
Rajasthan	1287	2607	207	1410	1551	4125	-	126
Sikkim	-	-	-	-	-	-	-	-
Tamil Nadu	3303	4065	1024	2824	5170	16768	-	3001
Tripura	-	-	-	-	-	379	-	37
Uttar Pradesh	3233	5242	466	1565	3385	13535	12	502
West Bengal	3540	2516	651	960	5060	7258	32	392
A & N Islands	-	-	-	-	-	-	-	-
Arunachal Pradesh		-	-	-	-	-	-	-
Chandigarh		302	-	225	-	2058	-	164
Dadra & Nagar Haveli	-	-	-	-	-	-	-	-
Delhi	[illegible]	[illegible]	[illegible]	1855	1055	3626	8	300
Goa, Daman & Diu	-	212	-	183	-	447	-	70
Lakshadweep	-	-	-	-	-	-	-	-
Mizoram	-	-	-	-	-	-	-	-
Pondicherry	166	400	45	166	-	179	-	60
INDIA	3216[illegible]	53440	8238	25327	42834	159629	335	22792

Source : i) Education in India, Ministry.
ii) Selected Statistics, Ministry.

TABLE [illegible]

Total population, main workers by sex in 1981 and the percentage of main workers to total population in 1971 and 1981

Sl No	India/State/ Union Territory	Total population 1981 Person	Total population 1981 Male	Total population 1981 Female	Main workers 1981 Person	Main workers 1981 Male	Main workers 1981 Female	Percentage of main workers to total population 1971 Person	1971 Male	1971 Female	1981 Person	1981 Male	1981 Female
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)	(11)	(12)	(13)	(14)
	India[a,b]	66,52,87,849	34 39,30,423	32,13,57 426	22 25 16,574	17,75 43 406	44 973 168	33 06	52 61	12 06	33 45	51 62	13 99
	States												
1	Andhra Pradesh	5,35,49,673	2,71,08,922	2 64 40 751	2 26 29 101	1 54 85 825	71 43 276	41 39	58 22	24 16	42 26	57 12	27 02
2	Assam											.	..
3	Bihar	6 99 14,734	3,59,30,560	3,39,84 174	2 07,53,128	1,76 75 805	30 77 323	31 03	52 16	8 88	29 68	49 19	9 06
4	Gujarat	3,40,85,799	1,75,52,640	1,65,33,159	1 09,84 042	91,60 398	18 23 644	31 45	51 24	10 26	32 22	52 19	11.03
5	Haryana	1,29,22,618	69,09,938	60,12 680	36,63,904	33,81,788	2,82,116	26 44	47.27	2 41	28 35	48 94	4 69
6	Himachal Pradesh	42,80,818	21,69,931	21 10 887	14,71,025	10,76,004	3 95 021	36 95	52 43	20 79	34.36	49.59	18 71
7	Jammu and Kashmir	59,87,389	31,64,660	28,22,729	18,18,571	16,51 846	1 66,725	29 76	52.50	3 86	30.37	52 20	5 91
8	Karnataka	3,71,35 714	1,89,22,627	1,82,13,087	1,36,50,458	1 01,99,007	34 51,451	34 74	54 40	14 20	36 76	53 90	18 95
9	Kerala	2,54,53,680	1,25,27,767	1,29,25,913	67,91,175	51,41,149	16,50 026	29 12	45 00	13 49	26 68	41.04	12 77
10	Madhya Pradesh	5,21,78,844	2,68,86,305	2,52,92 539	2,00,41 374	1,43,89,522	56 51,852	36 72	53 74	18 65	38 41	53 52	22.35
11	Maharashtra	6,27,84,171	3,24,15,126	3,03,69,045	2,43,01,793	1,70,19,598	72,82 195	36 48	52 09	19 70	38 71	52 51	23 98
12	Manipur	14,20,953	7,21,006	6,99,947	5,73,339	3,31,242	2,42 097	34 57	45.31	23 62	40.35	45 94	34 59
13	Meghalaya	13,35,819	6,83,710	6,52,109	5,80,220	3,63 164	2,17,056	44 17	53 21	34 57	43 44	53 12	33 29
14	Nagaland	7,74,930	4,15,910	3 59 020	3,68,321	2,15,904	1,52,417	50 75	55 55	45 24	47 53	51 91	42 45
15	Orissa	2,63,70,271	1,33,09,786	1,30,60 485	86,35 285	72 38,326	13,96 959	31 22	55.32	6 81	32 75	54.38	10 70
16	Punjab	1 67,88,915	89,37,210	78,51 705	49,27,759	47,49,646	1,78,113	28 87	52 82	1 18	29 35	53 14	2 27
17	Rajasthan	3,42,61,862	1,78,54,154	1,64 07 705	1,04,42 268	89,12 491	15,29 777	31 24	52 09	8 34	30 48	49 92	9.32
18	Sikkim	3,16,385	1,72,440	1 43 945	1,47 436	97 505	49,928	53 18	62 96	41 85	46 60	56 55	34 69
19	Tamil Nadu	4 84 08,077	2,44 87,624	2 39 20 453	1 90,26,393	1,36 77 055	53,49 338	35 78	56 02	15 09	39 30	55 85	22.36
20	Tripura	20,53,058	10,54,846	9 98 212	6,08,589	5 19 291	89 298	27 79	49 43	4 83	29 64	49 23	8.95
21	Uttar Pradesh	11,08,62,013	5 88 19,276	5 20 42 737	3,23,96,754	2 95,90 130	28 06,624	30 94	52 24	6 71	29 22	50.31	5 39
22	West Bengal	5,45,80,647	2,85 60,901	2,60,19 746	1,54,24,431	1,39 13,066	15 11 365	27 91	48 83	4 43	28 26	48 71	5 81
	Union Territories												
23	Andaman and Nicobar Islands	1,88,741	1 07 261	81 480	62,680	58,549	4 131	39 55	62 10	4 53	33 21	54 59	5 07
24	Arunachal Pradesh	6,31 839	3 39,322	2 92 517	3,13,435	1,94 831	1 18 604	57 65	63 14	51 28	49 61	57 42	40 55
25	Chandigarh	4,51,610	2 55 278	1 96 332	1 56 658	1 39 133	17 525	33 29	53 96	5 70	34 69	54 50	8 93
26	Dadra and Nagar Haveli	1,03,676	52,515	51 161	42 315	28,942	13 373	47 17	55 43	38 96	40 81	55 11	26.14

— contd

TABLE 18 Contd

Sl No	India/State/ Union Territory	Total population 1981			Main workers 1981			Percentage of main workers to total population					
								1971			1981		
		Person	Male	Female	Person	Male	Female	Person	Male	Female	Person	Male	Female
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)	(11)	(12)	(13)	(14)
27	Delhi	62,20,406	34 40,081	27,80,325	19 86,399	16 05 100	1,81,299	30.21	50 61	4 75	31.93	52.47	6.52
28	Goa, Daman and Diu	10,86,730	5,48,450	5,38,280	3 32 463	2 51,477	80,986	31 67	47 76	15 40	30.59	45.85	15.05
29	Lakshadweep	40,249	20,377	19,872	7 947	6 839	1 108	26.15	38.43	13.60	19 74	33.56	5.58
30	Mizoram	4,93,757	2,57,239	2,36,518	2,06 064	1,29,608	76 456	45.61	51 43	39 46	41.73	53.38	32.33
31	Pondicherry	6,04,471	3,04,561	2,99 910	1,73,247	1 40,162	33 085	29 90	48 65	10.94	28.66	46.02	11.08

a Excludes Assam where 1981 census could not be held For comparative purposes 1971 figures for India also exclude Assam However, percentage of workers to total population of 1971 for Assam and India including Assam is given as under –

	Person	Male	Female
India	32 93	52 51	11 87
Assam	27 96	48 63	4 66

b Exclude population of areas under unlawful occupation of Pakistan and China where census could not be taken

Source *Census of India 1981 Series-I India, Part II B-(i) Primary Census Abstract General Population* 1983, pp (XXX) to (XXXIII)

TABLE 19

Percentage Distribution of Female Main Workers and Sex Ratio by Major Occupational Categories in 1971 and 1981

Activity	Rural				Urban			
	Share in Employment		Sex Ratio		Share in Employment		Sex Ratio	
	1971	1981	1971	1981	1971	1981	1971	1981
Cultivators and agricultural labourers	87 1	87 4	250	320	21 7	21 2	260	280
Livestock, forestry, fishing hunting and Plantation, orchards & allied activities	2 6	1 8	230	210	2 1	1 9	140	140
Mining and quarrying industry	0 3	0 3	180	200	1 0	0 6	110	70
(a) Household industry	3 6	3 8	270	380	10 0	10 4	260	330
(b) Other than household industry	1 6	2 1	150	160	12 9	14 3	60	70
Trade & commerce	1 0	1 1	80	100	8 2	8 9	40	360
Other services	3 4	3 0	140	160	38 1	37 4	190	220
All Sectors	100 0	100 0	230	290	100 0	100 0	120	130

Source Census of India 1971, Series 1 Part II B(i) General Economic Table B-1 (Part-A) Pg 18-20, Census of India 1981, Series 1 Part II-Special, Table B1, B3 and B7 pp 2-3, 6-9 and 24-29

Table 23

Economically Active Population in India

1	2	3	4	5	6
	Total	%	Male	Female	Female and % of Total
Professional, technical & related workers	7,094,415	2.9	5,634,712	1,459,703	20.58
Administrative & managerial workers	2,292,194	0.9	2,235,027	57,167	2.49
Clerical & related workers	7,458,939	3.[illegible]	6,979,665	479,274	6.42
Sales workers	10,20[illegible],735	4.2	9,5[illegible]3,081	675,653	6.65
Service workers	6,788,965	2.7	5,567,921	1,221,044	17.99
Agricultural, animal husbandery, forestry workers, fishermen & hunters	152,789,746	62.5	116,270,261	36,519,487	23.90
Prod./related workers, transport equipment operation labourers	33,891,934	13.9	29,580,412	4,311,522	12.72
Workers not classified by occupation	24,037,047	9.3	5,289,130	13,757,917	78.04
Total	244,604,[illegible]	100.0	[illegible]81,0[illegible],209	63,524,772	25.97

Since: Year Book of Labour Statistics, ILO [illegible].

Note: Column No. 6 represents Column No. 5 as % of Column No. 2.

PROGRESS OF LITERACY
ALL INDIA
MALES
FEMALES
PERSONS
PERCENTAGES
50
40
30
20
10
0
1901
1911
1921
1931
1941
1951
1961
1971
1981
YEARS
NIEPA/PN Tyagi/15987
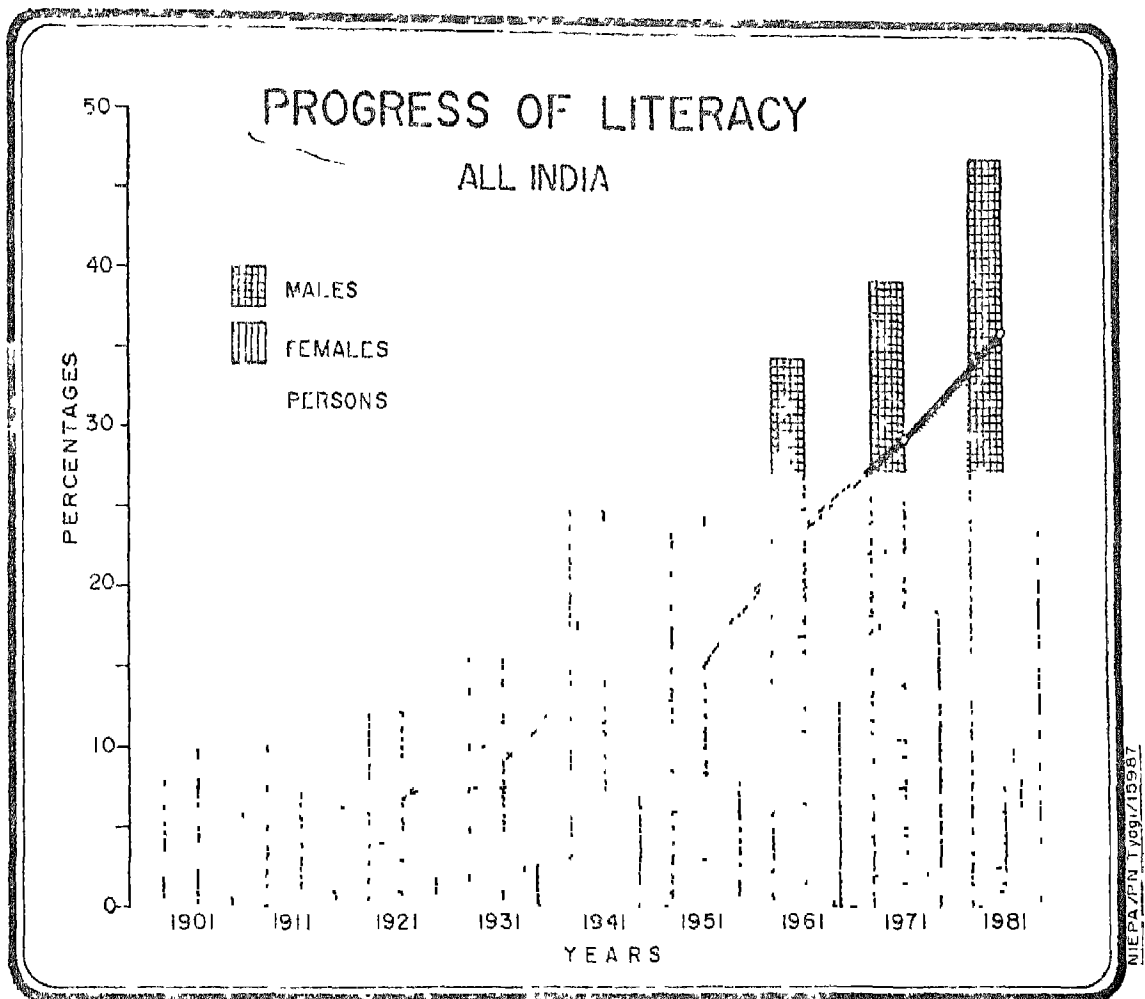
Fig 1

LITERACY DISPARITIES
(SEXWISE)
1981
MALES
FEMALES
PERCENTAGE OF LITERACY
0
10
20
30
40
50
60
70
80
STATE/UT
KERALA
CHANDIGARH
DELHI
PONDICHERRY
GOA, DAMAN & DIU
LAKSHADWEEP
MIZORAM
MAHARASHTRA
A & N ISLANDS
TAMIL NADU
GUJARAT
MANIFUR
HIMACHAL PRADES
TRIPURA
WEST BENGAL
NAGALAND
KARNATAKA
HARYANA
PUNJAB
ORISSA
SIKKIM
MADHYA PRADESH
ANDHRA PRADESH
UTTAR PRADESH
BIHAR
MEGHALAYA
D & N HAVELI
RAJASTHAN
JAMMU & KASHMIR
ARUNACHAL PR
ASSAM
Data not available
NIEPA/PNTyag/07889

FIG 2

GROWTH OF SCHOOLS
ALL INDIA
NUMBER OF SCHOOLS (IN '000')
550
500
450
400
350
300
250
200
150
100
50
0
PRIMARY
MIDDLE
HIGH / HR SECONDARY
1950-51
1960-61
1970-71
1980-81
1986-87
NIEPA/P.N. Tyagi 104881

Fig.3

SEX-WISE ENROLMENT AT SCHOOL LEVEL
ALL INDIA
(IN MILLIONS)
INDEX
FEMALE
MALE
P = PRIMARY
M = MIDDLE
S = SECONDARY/Hr SECONDARY
YEARS 1986-87
1981-82
1971
1961
1951
NIEPA

Fig 4

GROWTH OF ENROLMENT BY SEX
(PRIMARY LEVEL)
ALL INDIA
ENROLMENT IN MILLIONS
55
50
45
40
35
30
25
20
15
10
5
0
BOYS
GIRLS
1950-51
1955-56
1960-61
1965-66
1970-71
1975-76
1980-81
1986-87
YEARS
NIEPA/P.N.Tyagi/OB189

Fig. 5

GROSS ENROLMENT RATIO IN CLASSES I-V
(6-11 years Age Group)
1986
ENROLMENT RATIO
165
150
135
120
105
90
75
60
45
30
15
0
BOYS
GIRLS
NATIONAL AVERAGE 93.63
STATE/U.T
DAMAN & DIU
LAKSHADWEEP
SIKKIM
GOA
ANDHRA PRADESH
MIZORAM
MAHARASHTRA
TAMIL NADU
PONDICHERRY
GUJARAT
KARNATAKA
MADHYA PRADESH
NAGALAND
ARUNACHAL PR
ORISSA
MEGHALAYA
KERALA
HIMACHAL PRADESH
BIHAR
MANIPUR
A & N ISLANDS
HARYANA
DELHI
JAMMU & KASHMIR
W BENGAL
UTTAR PRADESH
CHANDIGARH
NIEPA/PN Tyagi/03489

FIG 6

GROSS ENROLMENT RATIO OF SCHEDULED CASTES
BY SEX (Classes I – V)
1986
STATE / U T
TRIPURA
GUJARAT
ASSAM
GOA, DAMAN & DIU
SIKKIM
ANDHRA PRADESH
TAMIL NADU
PONDICHERRY
KERALA
MADHYA PRADESH
DELHI
HIMACHAL PRADESH
ORISSA
DADRA & N HAVELI
PUNJAB
WEST BENGAL
HARYANA
RAJASTHAN
BIHAR
JAMMU & KASHMIR
UTTAR PRADESH
CHANDIGARH
KARNATAKA
MAHARASHTRA
MANIPUR
MEGHALAYA
NAGALAND
A & N ISLANDS
ARUNACHAL PR
LAKSHADWEEP
MIZORAM
D N A
D N A
D N A
No S.C Population
0
20
40
60
80
100
120
140
160
180
GROSS ENROLMENT RATIO
GIRLS
BOYS
GAP IN BOYS AND GIRLS ENROLMENT
D N A = Data Not Available
NIEPA/P.N. Tyagi/05986

FIG 8

GROSS ENROLMENT RATIO OF SCHEDULED CASTES
BY SEX (Classes VI – VIII)
1986
STATE/U T
KARNATAKA
D & N HAVELI
KERALA
ASSAM
PONDICHERRY
MANIPUR
TAMIL NADU
HIMACHAL PR
DELHI
GOA, DAMAN & DIU
GUJARAT
MEGHALAYA
MADHYA PRADESH
HARYANA
JAMMU & KASHMIR
PUNJAB
RAJASTHAN
TRIPURA
ANDHRA PRADESH
ORISSA
SIKKIM
WEST BENGAL
UTTAR PRADESH
CHANDIGARH
BIHAR
MAHARASHTRA
D N A
NAGALAND
A & N ISLANDS
ARUNACHAL PR
LAKSHADWEEP
MIZORAM
No S C Population
0
20
40
60
80
100
120
140
GROSS ENROLMENT RATIO
GIRLS
BOYS
GAP IN BOYS AND GIRLS ENROLMENT
D N A = Data Not Available
NIEPA/PN Tyagi/06289

FIG 9

GROSS ENROLMENT RATIO OF SCHEDULED TRIBES
BY SEX (Classes I -- V)
1986
STATE/U T
GOA, DAMAN & DIU
MANIPUR
LAKSHADWEEP
TRIPURA
MIZORAM
SIKKIM
GUJARAT
ASSAM
ANDHRA PRADESH
KERALA
MAHARASHTRA
ARUNACHAL PR
MEGHALAYA
HIMACHAL PRADESH
UTTAR PRADESH
D & N HAVELI
TAMIL NADU
ORISSA
BIHAR
RAJASTHAN
MADHYA PRADESH
A & N ISLANDS
WEST BENGAL
NAGALAND
KARNATAKA
HARYANA
JAMMU & KASHMIR
PUNJAB
CHANDIGARH
DELHI
PONDICHERRY
No S T Population
0 20 40 60 80 100 120 140 160 180 200 220 240
GROSS ENROLMENT RATIO
GIRLS
BOYS
GAP IN BOYS AND GIRLS ENROLMENT
NIEPA/P.N.Tyagi/C5789

Fig 10

GROSS ENROLMENT RATIO OF SCHEDULED TRIBES BY SEX (Classes VI – VIII) 1986
STATE / U T
LAKSHADWEEP
NAGALAND
GOA, DAMAN & DIU
KARNATAKA
HIMACHAL PRADESH
A & N ISLANDS
KERALA
MANIPUR
MIZORAM
SIKKIM
ASSAM
ARUNACHAL PR
MEGHALAYA
MAHARASHTRA
UTTAR PRADESH
RAJASTHAN
D & N HAVELI
TAMIL NADU
TRIPURA
GUJARAT
MADHYA PRADESH
BIHAR
WEST BENGAL
ORISSA
ANDHRA PRADESH
HARYANA
JAMMU & KASHMIR
PUNJAB
CHANDIGARH
DELHI
PONDICHERRY
No S T Population
0 10 20 30 40 50 60 70 80 90 100 110 120 130
GROSS ENROLMENT RATIO
GIRLS
BOYS
GAP IN BOYS AND GIRLS ENROLMENT
NIEPA/PNTyagi/03889

FIG 17

PROGRESS OF GIRLS ENROLMENT PRIMARY
(PERCENTAGE TO TOTAL ENROLMENT)
1978 TO 1986
PERCENTAGE
0 5 10 15 20 25 30 35 40 45 50 55
STATE /U T
MEGHALAYA
KERALA
PONDICHERRY
MIZORAM
GOA
NAGALAND
ANDHRA PRADESH
DAMAN & DIU
N A
LAKSHADWEEP
A & N ISLANDS
MANIPUR
TAMIL NADU
CHANDIGARH
HIMACHAL PR
PUNJAB
DELHI
MAHARASHTRA
SIKKIM
KARNATAKA
TRIPURA
ASSAM
WEST BENGAL
GUJARAT
ORISSA
HARYANA
D & N HAVELI
ARUNACHAL PR
JAMMU & KASHMIR
MADHYA PRADESH
UTTAR PRADESH
BIHAR
RAJASTHAN
1978
1986
NIEPA/P N Tyagi/03689

FIG 12

HABITATIONS WITH POPULATION 300 AND ABOVE
SERVED BY PRIMARY SCHOOLS
1986
SERVED WITHIN THE HABITATION
SERVED UPTO 1 Km
ABOVE 1 Km
PERCENTAGE
100
90
80
70
60
50
40
30
20
10
0
STATE / U T
LAKSHADWEEP
NAGALAND
MIZORAM
GUJARAT
PUNJAB
DELHI
HARYANA
MAHARASHTRA
KARNATAKA
ANDHRA PRADESH
CHANDIGARH
MEGHALAYA
MANIPUR
MADHYA PRADESH
RAJASTHAN
JAMMU & KASHMIR
SIKKIM
ORISSA
PONDICHERRY
ARUNACHAL PR
TAMIL NADU
ASSAM
KERALA
BIHAR
WEST BENGAL
A & N ISLANDS
D & N HAVELI
HIMACHAL PR
DAMAN & DIU
GOA
TRIPURA
UTTAR PRADESH

FIG 13

HABITATIONS WITH POPULATION 500 AND ABOVE
SERVED BY UPPER PRIMARY SCHOOLS
1986
SERVED WITHIN THE HABITATION
SERVED UPTO 3 Km
ABOVE 3 Km
PERCENTAGE
100
90
80
70
60
50
40
30
20
10
0
STATE / U.T.
LAKSHADWEEP
DAMAN & DIU
GOA
PUNJAB
ASSAM
WEST BENGAL
A & N ISLANDS
D & N HAVELI
TAMIL NADU
UTTAR PRADESH
MEGHALAYA
RAJASTHAN
MADHYA PRADESH
NAGALAND
NIEPA/PN.Tyagi/05389
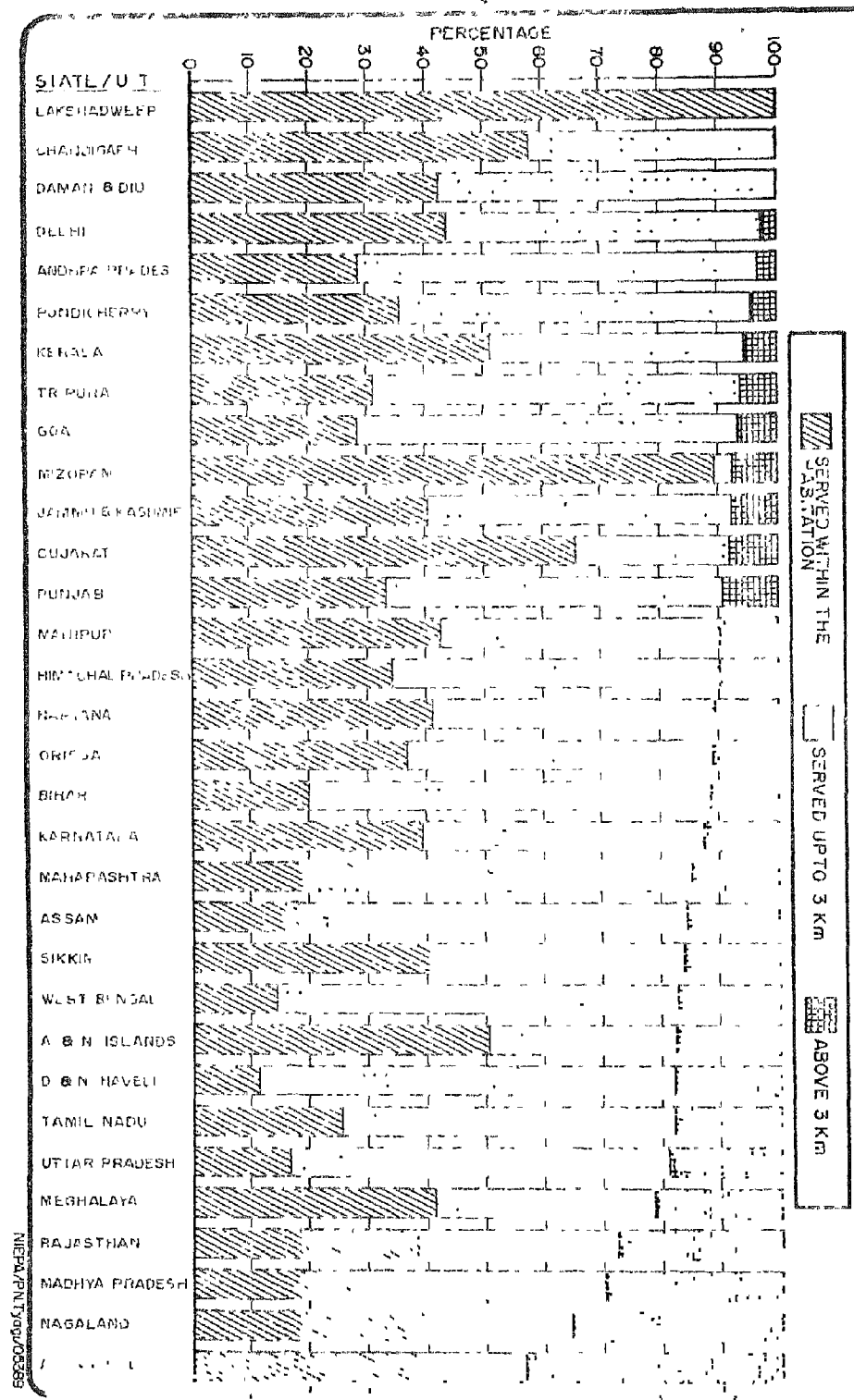
FIG 14

RURAL POPULATION SERVED BY MIDDLE SCHOOLS
(Upto 3.0 Kms)
1986
PERCENTAGE
0
10
20
30
40
50
60
70
80
90
100
STATE /U T
CHANDIGARH
DAMAN & DIU
LAKSHADWEEP
DELHI
ANDHRA PRADESH
PONDICHERRY
KERALA
GUJARAT
HARYANA
PUNJAB
GOA
KARNATAKA
MAHARASHTRA
BIHAR
TRIPURA
JAMMU & KASHMIR
TAMIL NADU
ORISSA
ASSAM
MIZORAM
WEST BENGAL
UTTAR PRADESH
MANIPUR
RAJASTHAN
SIKKIM
HIMACHAL PR.
A & N ISLANDS
MADHYA PRADESH
NAGALAND
D & N HAVELI
MEGHALAYA
ARUNACHAL PR
NATIONAL AVERAGE 85.39%
NIEPA/F N Tyagi/03289

FIG 15

PRIMARY SCHOOLS HAVING VARIOUS ANCILLARY FACILITIES
1986
PERCENTAGE
0
10
20
30
40
50
60
70
80
90
100
Drinking Water
Urinals
STATE/U T
CHANDIGARH
D & N HAVELI
DELHI
PUNJAB
TAMIL NADU
PONDICHERRY
KERALA
DAMAN & DIU
HARYANA
GOA
WEST BENGAL
A & N ISLANDS
GUJARAT
UTTAR PRADESH
RAJASTHAN
HIMACHAL PR
LAKSHADWEEP
ARUNACHAL PR
BIHAR
MAHARASHTRA
KARNATAKA
SIKKIM
TRIPURA
ANDHRA PRADESH
MADHYA PRADESH
MIZORAM
JAMMU &KASHMIR
MANIPUR
NAGALAND
ORISSA
ASSAM
MEGHALAYA
NIEPA/P N Tyagi/06189

FIG 16

DECLINING SEX RATIO IN INDIA
FEMALES PER 1000 MALES
980
960
940
920
900
972
955
950
945
945
941
930
935
1901
1911
1921
1931
1941
1951
1961
1971
1981
YEAR

FIG 19

SEX DIFFERENTIAL IN INFANT MORTALITY
ALL INDIA (RURAL)
INFANT
MORTALITY
(PER 1000
LIVE BIRTHS)
170
160
150
140
130
120
110
100
MALE
FEMALE
141
161
133
146
132
143
123
125
1972
1976
1978
1980
SOURCE REGISTRAR GENERAL INDIA

FIG 20

SEX DIFFERENCES IN MORBIDITY
PATTERN OF INDIAN CHILDREN
MALE
FEMALE
GASTROINTESTINAL DISORDERS
27.2
29.9
IRON DEFICIENCY ANAEMIA
29.9
33.5
PROTEIN CALORIE MALNUTRITION
22.2
34.0
RIBOFLAVIN DEFICIENCY
30.4
35.4
RESPIRATORY INFECTIONS
27.3
55.5
0
10
20
30
40
50
60
PERCENTAGE OF CHILDREN
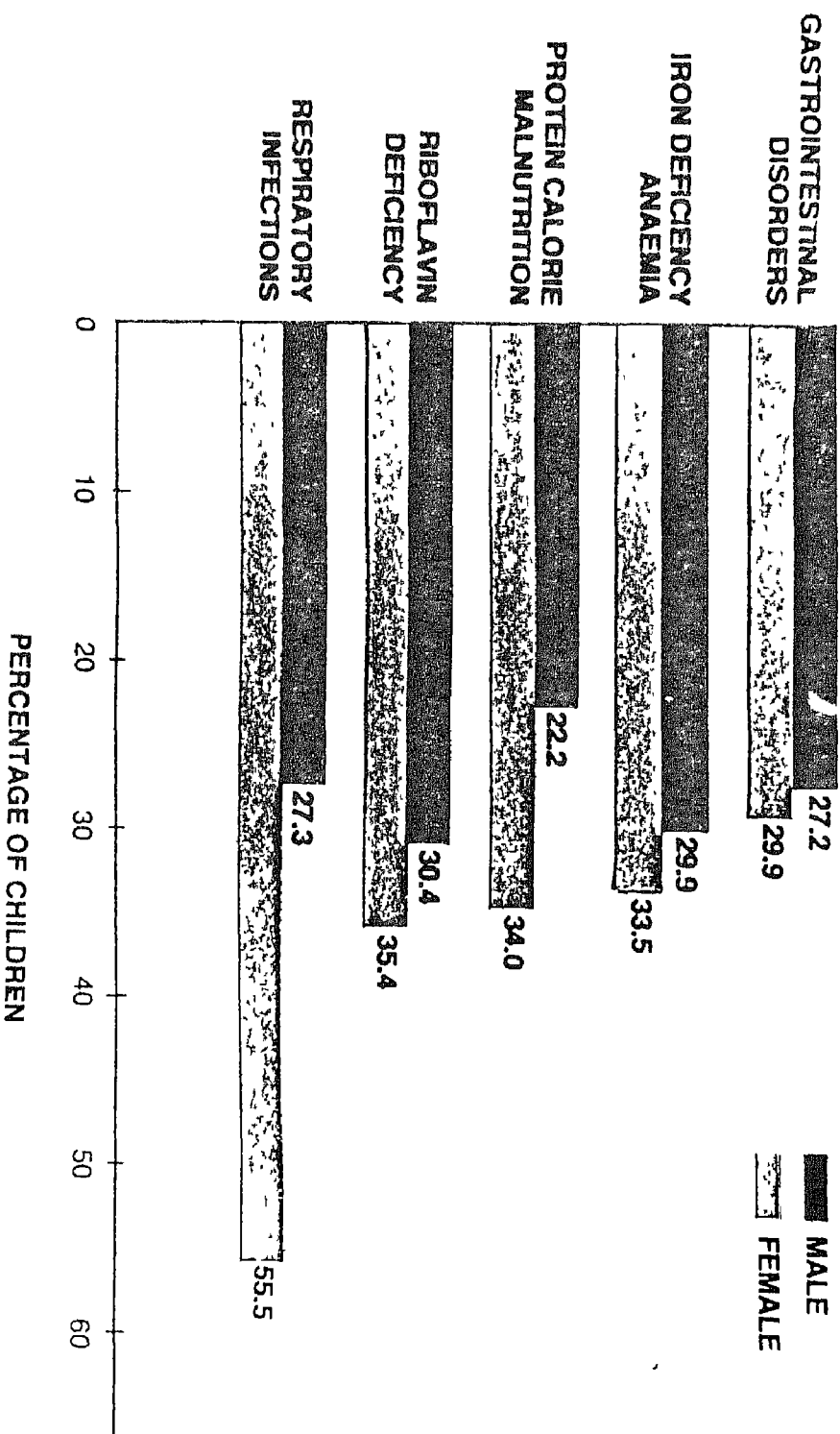
FIG 21

MALNUTRITION IN 0-5 YEAR OLDS
(CARE Study, PUNJAB 1974)
MALE
FEMALE
PERCENTAGE OF CHILDREN
80
60
40
20
0
71.43
28.57
43.07
56.93
56.40
43.60
69.20
30.80
SEVERE
MODERATE
MILD
NORMAL CHILDREN
DEGREE OF MALNUTRITION

F 22

MARITAL FERTILITY RATE
AND
MOTHER EDUCATION
(RURAL/URBAN)
6
5
4
3
2
1
0
RURAL
URBAN
National Average Rural
National Average Urban
ILLITERATE
LITERATE BELOW PRIMARY
PRIMARY BUT BELOW HIGHER SEC
HIGHER SEC & ABOVE
NIEPA/PN Tyagi/1618/

FIG 23

INFANT MORTALITY RATE AND MOTHER'S EDUCATION
(RURAL/URBAN)
DEATHS PER 1000
140
130
120
110
100
90
80
70
60
50
40
30
20
10
0
National Average Rural
National Average Urban
RURAL
URBAN
ILLITRERATS
LITRERATS BELOW PRIMARY
PRIMARY BUT BELOW HR SEC
NIEPA/PN Tyagi/16287

FIG 24